ƒ

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी) विशेषांक

ISBN: 978-93-340-3482-0

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA ART APPRECIATION SPECIAL ISSUE (Reference- Sanju Das, Krishna Kumar Kashyap, Shashibala, S.C. Suman, Shweta Jha Chaudhary): Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ƒ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः

ঔঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ W শান্তি:

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष Ẇ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति रनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देराः शान्तिर्ब्रह्म

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आपः- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ब्रँह्मण्यँ प्रार्थना जे द्यूनोकमे, ख्तरिक्षमे, पृथ्वीपर, जनमे, औषधमे, रनस्पतिमे, रिश्वमे, सभ देरतागणमे आ ब्रँह्ममे शांति ऋथय।

ॐ-ब्रँह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, ख्तरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूनोकक बीच, आपः-जन, रिश्वेदेरा- सभ देरता, ब्रँह्म- सर्जक।

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

ॐ, ऽप्॥ ह॒स्रा॑ शीर्षा॒॥ पुरु॑ष॒ः। ऽप्॥ ह॒॥ स्रा॒॥ क्षः

ऽप्॥ ह॒स्रा॑ पा॑त्।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतो॑ वृत्वा। अत्यं॑तिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

ऽप भूमिं॑॥ ẅ वि॒॥ श्व॒तो॑॥ वृ॒॥ त्वा। अत्वा॑॥ तिष्ठद् दशाङ्गु॒॥ लम्॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

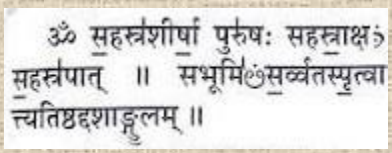

प॒द्भ्याग्ँ शू॒द्रो अंजायत॥

प॒॥ द्भ्याग्ँ॑॥ शू॒॥ द्रो ऋ॑॥ जायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒: श्रोत्रा॑त्।

प॒॥ द्भ्यां॑ भूमि॒॥ र्दिशः॒॥ श्रोत्रा॑॥ ॥ ०।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

𑖌 (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑖩 (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑖩𑖿𑖛𑖿𑖓𑖽𑖫, 𑖩𑖿𑖛𑖿𑖓𑖾 Devanagari Anji)

৭ (Bengali Anji, Siddham)

𑈬 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही- “.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of

justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes

and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथि: एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- केँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- केँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ केँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is

indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of ‘asuva’ and ‘parasuva’ from mantra 3, which means: ‘Give us, we pray, what is good’, and, ‘Remove, we pray, what is evil’. This is the prayer. Also, there are echoes of ‘havamahe’ from mantra 4, which means: ‘We invoke and develop’, and, ‘we challenge and fight out’. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक बिभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like

chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-
EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney's translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

"Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me." I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

"Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me."

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

"Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me."

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

"Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God's dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me."

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted

(Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

꠸

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]

कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी) विशेषांक

अनुक्रम

१.गजेन्द्र ठाकुर- सम्पादकीय- कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष (पृ. २-५)

२.१.अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे **(पृ. ६-१०)**

२.२.सोनी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला **(पृ. ११-१४)**

२.३.संजू दास- कलाकृति मे अश्लीलता **(पृ. १५-१९)**

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे **(पृ. २०-२२)**

२.५.मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास) **(पृ. २३-३७)**

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास **(पृ. ३८-४२)**

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास **(पृ. ४३-५४)**

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला) **(पृ. ५५-५९)**

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी **(पृ. ६०-६३)**

२.१०.संजू दासक किछु बीछल कलाकृति **(पृ. ६४-७०)**

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय **(पृ. ७१-७३)**

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग **(पृ. ७४-७९)**

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय **(पृ. ८०-१०१)**

३.विदेह ३६९ म अंक ०१ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३६९)- अंक ३६८ पर टिप्पणी (पृ. १०२-१०५)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.गजेन्द्र ठाकुर- सम्पादकीय- कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

नर्तकी (!) बा महिलाक मूर्ति (२५०० बी.सी.ई.)

भारतमे प्राचीनतम कलाकृति सिन्धु घाटी सभ्यतासँ प्राप्त सामग्री सभ अछि।

नर्तकी (!) बा महिलाक मूर्ति जे धातु (कांस्य) क अछि से मोहनजोदाड़ोसँ भेटल। कलाकारक नाम अज्ञात अछि मुदा उत्कृष्टतामे ई मोहनजोदाड़ोक कलाक परिणिति अछि। मोटामोटी चारि इंची ऊँच, दू इंची चाकर आ एक इंची मोट ई कलाकृति आइ-काल्हि राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्लीक सिन्धु घाटी सभ्यता गैलरीमे राखल अछि।

(साभार जो रवि, विकी CC-BY-SA-3.0)

कला आस्वादनक लेल आब देखी जे ऐमे की अछि जे एकरा उत्कृष्ट बनबैत अछि।

१.ई एकटा पातर दुब्बर महिलाक अनुकृति अछि।

२.महिला ठाढ़ अछि, वाम हाथ वाम जांघ आ दहिन हाथ डाँरपर पाछू दिश छै।

३.आँखि पैघ-पैघ छै।

४.केश औंठिया छै।

५.नाक थोपल छै।

६.महिला नग्न अछि मात्र गरामे कंठहार आ हाथमे चूड़ी देखा पड़ि रहल छै। वाम हाथमे २४ टा चूड़ी मुदा दहिन हाथमे मात्र ४ टा।

७.ककबा कएल केश पाछाँमे जूड़ी बान्हल छै।

८.माथ पाछाँ दिश उतान छै।

९.हाथ सापेक्ष रूपेँ नम्हर बुझि पड़ै छै।

ई महिलाक अनुकृति अछि, एकरा नर्तकी किए कहल गेल? की अहाँकेँ ऐमे महिला नर्तकीक कोनो टा लक्षण देखा पड़ैए? राष्ट्रीय संग्रहालय आ इतिहासक पोथी पतरा सभमे ई नर्तकीक रूपमे वर्णित भेटत जे पुरुष मानसिकताक परिणाम अछि जइमे महिला लेखिका रोमिला थापड़ जे मात्र इतिहासकार छथि, सेहो अपनाकेँ ओझरा लेने छथि। कला-इतिहास आ पुरातत्वक अध्ययन अछैत ऐ तरहक भ्रम उत्पन्न होइत अछि।

२

अजन्ताक पकिया रंगक राजकुमारी (२०० बी.सी.ई. सँ ४८० सी.ई.)

अजन्ताक एकटा गुफापर भित्तिचित्र (सभसँ पुरान चित्रकला) एकटा पकिया रंगक अतिसुन्दर राजकुमारीक चित्रण, जे गहना पहिरने अछि आ केशमे सेहो गहना छै।

३

खजुराहो (९५० सी.ई. सँ १०५० सी.ई.)

[खर्जुर (बिच्छू- वृश्चिकक संस्कृत)- एकटा अप्सरा अपन जांघ उघारि कऽ देखा रहल अछि जइपर वृश्चिक चित्रित छै, तही सँ खजुराहो नाम]।

रोमिला थापड़ एतुक्का कलाकृतिकेँ पलायनक कला कहै छथि। तेरहम शताब्दीक जयदेवक गीत गोविन्द सेहो रोमिलाकेँ नव लगै छन्हि। कलाक इतिहासकार आ पुरातत्वविद रोमिलाक गपसँ असहमत छथि। कला इतिहासकार देवांगना देसाइ कहै छथि जे योनि आ लिंग आर्येतर सभ्यतामे विद्यमान छल, वातस्यायनक काम सूत्र आ कालिदासक कुमारसम्भव खजुराहो आ गीत गोविन्दसँ बहुत पहिनहियेसँ अछि। ओ कहै छथि जे वृश्चिकक तुलना काम लोलुपता रूपी बिखसँ कएल जाइत अछि आ सएह संकल्पना अप्सराक जांघपर चित्रित अछि।

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be ad.0ded to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१.अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे

अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे

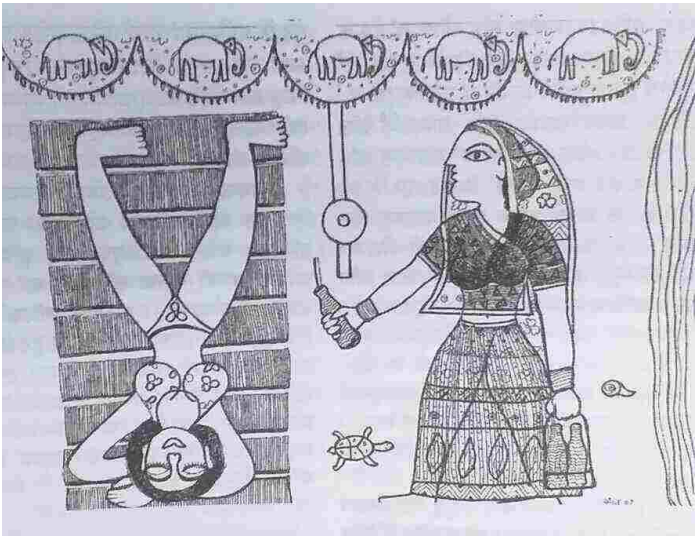

परमेश्वर कापड़ि

ई अटर-पटर, नाङट-उघार, गंरि-मुडिया कलाकृति नइ, परम्परागत मिथिला आर्टक उत्तरआधुनिकता ओ वैश्विक कृति अइ, जेकरा सहाज आ गरहाज करैत सांस्कृतिक आयाम देब'मे परहेज करहि पडत !

(चित्र 'अंतिका' स' साभार)

राजेन्द्र बिमल

परम्परासँ खेलबाड!

परमेश्वर कापड़ि- राजेन्द्र बिमल -अधरम !

रंजू मिश्र
मनमौजी भ गेल छै सब।

परमेश्वर कापड़ि- रंजू मिश्र- बेपर्द

रोशन चौधरी
गरि-मुरिया।

बृषेश चंद्र लाल

हमरा लगैत अछि कलाकार किछु देखबए चाहैत छथि । एतए कदाचित् सम्पन्नताक दृष्टिमे आधुनिकता की थीक आ कोना ओकर सेवामे ओकरे इच्छा अनुसारक मांग समाजकेँ पूरएक बाध्यता बनि गेल छैक से देखबक प्रयत्न भेल अछि । हँ किछु आओर स्प्पटता रहितै त नीक छलैक ।

परमेश्वर कापड़ि- बृषेश चन्द्र लाल- बलधौसीके कतेक लेबा लगएबै मीता !

बृषेश चंद्र लाल
मीत, नव-नव कोण आबए दिऔक ने । आओर स्पष्ट आ विकसित होइक ताहिलेल सभ केओ प्रयास करी । हमर अर्थ ई नहि जे अटर-पटर, नाङटि, उघार होइक । हँ, ई जे मिथिला आर्ट परम्परागत चित्रकारीये टा मे सिमित नहि रहए । समय सापेक्ष अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम सेहो बनए ।

ईशनाथ झा
के शिरोमणि छथि एकर संपादक ?(अन्तिकाक)

मिथिलेश कुमार झा
निंदनीय

कुणाल

एहि चित्र के ल क ' परंपरा भंजन ' एवं अधर्म प्रभृति कहइत एहिठाम एवं अन्य परंपरा रक्षी लोकनि द्वारा बेस बात भेलए। चित्रकार एवं संपादक के नाम किनको नइ बूझल छइन।अथवा नाम लेला पर जिह्वा अशुद्ध हेबाक खतरा हेतइन। एहि चित्र के अंतिका छपने अइ।संपादक - गौरीनाथ । चित्रकार - संजू दास। आउटलुक पत्रिका मे संजू दास के साक्षात्कार छपल छइन। ओत अन्य चित्र क संग इहो चित्र छइ। चित्रकार कृष्ण कुमार कश्यप के कतिपय चित्र सब गीत गोविंद (जयदेव,) के पद सब पर आधारित छइन।कश्यप जी ओकरा कहियो सार्वजनिक नइ केलइन। कारण छइ इएह पोंगापंडित परम्परा रक्षी लोकइन जे स्वयं परम्परा क ज्ञान स रहित छइथ।

विजयदेव झा
कुणाल-कृष्ण कुमार कश्यप आप एहि धरती पर नहि छथि तैं हुनक नाम पर किछुओ झूठ चला दियौ। बामपंथ सदैव ओपन सेक्स चारित्रिक उच्चश्रृंखलताक पक्षधर रहल अछि। कलाक नाम पर सेक्स आ अश्लीलता पसारब बामपंथक चरित्र रहल अछि।

कुणाल- विजयदेव झा- झूठ दक्षिणपंथ क विशेषता छी ।वामपंथ हरदम सत्य क पक्षधर अइ आ रहत ।

कश्यप जी क चित्र हमर देखल अइ।
सेहो एसगर नइ, पूरा प्रोडक्शन टीम छल।

कुमार पद्मनाभ

एहि चित्र मे भारतीय परिधान मे कोल्ड्रिंक बेचैत स्त्री बेसी अश्लील अछि. नग्नता सबठाम खराप नहि होइत छैक. बिकनी स्वीमिंग पुल आकि बीच पर कोनो खराप नहि लागैत छैक. समस्या अछि जे नग्नता आधुनिकताक द्योतक किएक? जखन कि आधुनिकता अम्बानीक बेटीक आ लक्षमी मित्तलक बेटाक विवाह मे बारीक बनैत छैक आ अम्बानी आ मित्तलक परिवारक घोघ तानने स्त्रीगण कैँ खाना खुआबैत छैक.

सुनील कुमार मल्लिक

मिथिला चित्रक नव आयाम कहल जा सकैछ। एहिमे अश्लिलता देखनिहारके चश्मा बदलबाक चाही।

रामचंद्र झा

सुनील कुमार मालिक-न्न, एक्केबेर एना नहि कहियौ

परमेश्वर कापड़ि- रामचंद्र झा- यौ की कहू! छगुनाइत एहि दुआरे छी जे ऐ बतकटौवलि मुहचोथौवलिमे नग्नता मातृत्व आ बेनङनपन सहीमे अर्थवता आ दृष्टि-दर्शन नहि पौलक अछि । हमरासबे कालीमाइ, सहस्रबाहु संहारनी सीता

नग्न होइतो (बेनङन नइ छैथ) पूज्य छथि! शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे; तान्त्रिक ओ शक्ति उपासक योनी महाशक्तिक दर्शन करिते छथि ! सबके अवोधिया/शिशु बहिन बेटी बेपर्दे रहैछ ।तब ई घोल घोङहाउज !? ठाम गुणे कजर, कुठाम गुणे करिखा ! जाहिठाम वस्त्र आ लिङके कीटल झापन/पर्दाक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार छै ओतए ई एहन सेक्स नग्नताक गप्प उठैछ त' ऐमे वेदमे छेद नइ हुअए चाही । बियौहती कनिञाके घोघट(लाज-लेहाज) पडैत जे छन्हि, से चर्म-चक्षुए नहि मनसा विचारके आवरण/ बर्जन सेहो रहैछ !! ई नगनता दृष्टि-दर्शन सापेक्ष अइ ।

सुनील कुमार मल्लिक- परमेश्वर कापड़ि- सही कहल सर

रामचंद्र झा

अहाँक विलक्षण विश्लेषणक समाहार तँ ठाम गुणे कहिए देलिऐ---! समरथ कहुँ नहिं दोष गोसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं।। ई विधिसम्मत वाक्यक परिधि नंघबाक उपक्रम नहि हुअए सएह नीक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.सोनी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला

सोनी नीलू झा
आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला

मिथिलाक अनूठा चित्रकार छथि रविन्द्र दास जी आ संजु दास जी। जतय मधुबनी पेंटिंग चारु कात भेट जाएत हमरा अहाकें, ओतए हिनकर आधुनिक चित्रकला एकटा फराक शैली में भेटत मुदा बहुत कम देखैत होएब, से नहिए सन।

ई कला कोनो नव थिक से नहि अपना ओत लोक लेल नव भ' सकैछ।
ओना जतय स्त्रीक मूक रहबाक परम्परा हो, ओहि ठामक ओहि परम्परा कें सभ्यता बुझनाहर लेल ई चित्र सभ अवश्य खटकतनि मुदा तखन, जखन ओ अर्थ बुझथिन।
आ जा धरि ओ लोकनि बुझताह/ बुझतीह ता धरि ई आधुनिक चित्रकला बहुत आगु ल' गेल रहतीह संजु जी, से विश्वास अछि।

एहि बीच, बिहार सरकार द्वारा आयोजित "बिहार म्यूजियम पटना" मे "हर महिला कुछ खास" प्रदर्शनी सेहो चलि रहल छैक। जतय दर्शक लेल एकटा अद्भूत प्रदर्शनीक केन्द्र बनल छनि हिनक चित्र सभ।

बिहार संस्कृति विभाग पटना सहित आर आन-आन क्षेत्र सँ हिनक कला कें पुरस्कृत कएल गेल अछि।
प्रत्येक क्षेत्र मे दर्जन सँ बेसी प्रदर्शनी मे हिनक सहभागिता छनि आ एकल प्रदर्शनी सेहो।
दर्जन भरि सँ बेसी मैथिली, हिन्दी पोथी,पत्रिकाक कवर पर हिनक बनाओल चित्र अपन स्थान सुनिश्चित कएने अछि।

कला कें कलाकार जँ अपन जीवनक अध्याय बना लैत अछि तँ ओकर चित्र बजैत अछि,अपन परिचय दैत अछि।
हँ ई सत्य गप जे ओहि लेल हमरा सभकेँ ओकर भाषा बुझबाक क्षमता होबाक चाही।

ओना तँ हिनका लोकनिक परिचय देबाक बेगरता नहि,
प्रख्यात कलाकार छथि लेकिन तैयो हमरा लगैत अछि जे
मिथिलाक लोक कें, कलाप्रेमी कें, हिनकर चित्रकला कें
कनेक अपन दृष्टि कें विस्तार क' देखबाक बेगरता अछि। "साहित्य,कला" कखनो अश्लील नहि होइत छैक अश्लील होइत छैक, नजरि आ सोच।

कतेको अवार्ड पुरस्कार सँ पुरस्कृत आ सम्मान कएल गेल छनि संजुजी आ रविन्द्र दास जीकें। हमरा गर्व होइत अछि हम हिनका आस-पास रहैत छी हमर अपन मिथिलाक छथि, हम एकदोसरकेँ चिन्हैत छी।

संजु जीक चित्र मे गामक परिवेश मे ग्रामीन स्त्रीक जीवन शैली भेटैत अछि, हिनक कलाक माध्यम सँ हुनका लोकनिक विचार बुझैत छी।
हिनक बनाओल बहुत रास एहन चित्र अछि जाहि चित्र कें हम सभ बैठक हॉल मे, सयनकक्ष मे,लगा सकैत छी।

सभसँ खुशीक गप जे एहि शैलीक चित्रक स्वप्रशिक्षित छथि एहि शैली मे चित्र बनाएब पुरुष प्रधान समाज मे ठीके एकटा चुनौती थिक। जतय सिखबैत हो सभ्यता मे, झांप-तोप आ अपन इच्छा कें दबा देबाक लेल, ओहन समाज मे ओहि ठाम हिनकर चित्र अनघोल करैत अछि, बहुत रास गप कहैत अछि।

हमरा मोन अछि हम सभ एकटा
पुरस्कार प्रदान सभागार मे बैसल रही, हमरा बगल मे चित्रकला आदरणीय रविन्द्र दास जी आ संजु दास जी बैसल रहथि आ सामने मंचपर गंभीर विमर्श चलैत छल जतय, आदरणीय भैरव लाल दास जी संग आर भी बहुत गणमान्य व्यक्तिव सभ उपस्थित रहथि। हमरा प्रसन्नता भेल जखन सौ - दू सौ दर्शक आ स्रोता सँ भरल सभागार मे, आदरणीय गंगेश गुंजन जीक वक्तव्य चलि रहल छल सभ सुनि रहल छलथि, ई गप कतेक गोटेकें धिआन हेतनि से नहि कहि सकब। गंगेश गुंजन जीक कहब रहनि जे जखन कोनो कलाकार आ साहित्यकारकेँ अभिनय कला व लेखन लेल पुरस्कृत कएल जाइत छैक तँ अर्थक स्थान पर संजु दास आ रविन्द्र दास जी इशारा करैत ओ
संकेत केलथिन जे हमरा सोझां प्रसिद्ध चित्रकार बैसल छथि हुनका लोकनिक चित्र सँ सेहो पुरस्कृत कएल जा सकैछ। ई गप हुनकर ठीके बहुत दूरक आ गहींर गप छल। ई बात मैथिल लोककें मोन रखबाक चाहियैन।

एत' हम हुनक दुनू गोटेक गप कहय चाहब, रविन्द्र जी आ संजु जी,मिथिला

मे एकटा नव चीज सिखबाक परम्परा ठाढ़ करैत छथि।

हमरा सभकेँ दोसर पेंटिंग सभ जकाँ आधुनिक चित्रकला सेहो सिखबाक, बुझबाक चाही।
दर्शक कैँ सेहो कला, चित्रकला बुझब, सिखब चाही,हम सभ तखने आलोचना आ समीक्षा करबाक योग्य बनब।
आलोचना आ समीक्षा सेहो आवश्यक मुदा तखने ने जखन बुझब,गुणब।

हमरा लगैत अछि मैथिली मिडिया लोकनिकेँ हिनका सभ
सं साक्षात्कार करबाक चाहियैन। एहि सभ विषय पर
फैल सँ विमर्श होबाक चाहियै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.संजू दास- कलाकृति मे अश्लीलता

संजू दास

कलाकृति मे अश्लीलता

सबस पहिने त हम ई बात फरिछा दी जे हमरो विचार अछि की कला ,साहित्य आ फिल्म मे रचनाकार के किछु स्वतंत्रता देल जेबाक चाही नहि त नव विचार आ नव कला परंपरा के विकास समाप्त भय जायत l सब कलाप्रेमी लोकनि सों हमर आग्रह जे कोनो कलाकृति मे अ श्लीलता अछि की नहि तेकरा ओहि कलाकृति के विषय के मांग , आकृति के भाव भंगिमा आ कलात्मककता देखलाक बादे तय करू l एकटा आधुनिक कलाकार भेला के कारण हमर विचार स अश्लीलता मात्र एकटा विचार छियैक l जेना एक टा गरीब के फाटल नुआ मे ओकर गरीबी देखाई दैत छैक मुदा किछु लोक के ओहि मे अश्लीलता सेहो देखाई छनि l भारत आ भारतीयता पर गर्व

करैबला लोक राजकपूर सन फिल्मकार पर गर्व करैत छथि मुदा हुनक फिल्म राम तेरी गंगा मैली मे मन्दाकिनी के अपन बच्चा के दूध पिया बै काल मे किछु लोक के ओकर बेबसी देखाई पड़लै त किछु के अश्लीलता सेहो देखाई देलकनि l एखन धरि हम जे कला समाज स सिखलहुँ जे कला मे अश्लीलता नाम के कोनो विचार या कलाकृति नहि होइत छैक l जेना साहित्य मे पाठक तय करैत छथिन की कोन कलाकृति नीक छै आ की बे जाय तहिना कला मे दर्शक , कला समीक्षक आ बाज़ार l आब हमर प्रेरणा अमृता शेरगिल छथि से स्वयं अपन न्यूड चित्रण केने छलीह l आधुनिक क ला के इतिहास मे कतेको नग्न चित्रण भेटत l बहुत रास भारतीय स्त्री कला कार नग्न चित्रण करैत छथिन जेना अनुपम सूद अर्पिता सिंह ,मिथु सेन ,अं जलि इला मेनन l

आब अहाँ लोकनि सों एकटा सवाल कि गीत गोविन्द के अश्लील कहब ,विद्यापति के सब रचना के अश्लील कहब ,कोहबर के अश्लील कहब ,तंत्र कला के अश्लील कहब ,खजुराहो के अश्लील कहब एतबे नहि कतेक गैर सनातनी लोक त शिव लिंग के सेहो अश्लील कहैत छथि l सनातन धर्म के स्थापित करय बला शंकराचार्य ई कहि क जे अपनेक विषय अश्लील अछि मंडन मिश्र के स्त्री उभय भारती कैं मना नए केने रहथिन काम शास्त्र संवाद करय लेल । कृष्ण के बियाह त रुक्मिणी स भेल रहैन मुदा राधा कृष्ण नाम जपैत काल कोनो मैथिल लोक के मैथिल संस्कारक याद नहि अबैत छनि l चर्चित साहि त्य खट्टर काका के तरंग मे सबस बेसी परंपरा के खिधांस कयल गेल छैक त कि ओ नीक साहित्य नहि l

हमर देश के चर्चित पत्रिका आउटलुक मे छपल किछु रेखांकन आ पेंटिंग मे मैथिल लोक के अश्लीलता देखाई दैत छनि मुदा ओकर विषय ,

भाव भंगिमा नहि , ओकर कलात्मकता नहि l एतय सबस पहिने हम अपन ओहि चित्र के चर्चा करय चाहब जेकरा एकटा साहित्यकार पद्मनाभ जी क ला मे अश्लीलता कहि क सम्बोधित केलनि l एतबे नहि ओकरा ओ भगव ती घर स सेहो जोड़ि के धार्मिक भावना भड़काबै के कोशिश केलनि l हमर चिंता मात्र ई अछि जे ओ बेसी पढ़ल लिखल विदेश मे नौकरी करय बला लोक छथि देश विदेश मे कतेको कलाकृति देखने हेताह l ओहि चित्र मे गो आ तट पर विदेशी पर्यटक के कोल्डड्रिक्स बेचैत एकटा स्त्री छैक l सनबाथ लेल बिकनी मे सुतल विदेशी स्त्री आ अपन आजीविकाक लेल कोल्डड्रि क्स बेचैत मैथिल स्त्री l आइयो धरि बेसी
लोक मिथिला पेंटिंग के मात्र देवी देवता के चित्रण बला परंपरागत शिल्प बु झैत छथिन एकटा कला नहि l जखन कि आब मिथिला पेंटिंग विश्व प्रसिद्ध कला थिक जाहि मे आठ टा स्त्री के पद्मश्री सेहो भेटल छनि l कोनो कला व साहित्य जा धरि समकालीनता के समावेश नहि करैत छैक ता धरि ओक रा मे जीवंतता नहि आबि सकैत छै l पुष्पा देवी ,संतोष दास ,अविनाश कर्ण ,अमृता झा आर कतेको नव कलाकार सब एहि बात के नीक जकाँ बुझैत छथि l हुनका जानकारी लेल हम बता दी जे सबस पहिने पद्मश्री गंगा देवी गैर पारम्परिक विषय सब के मिथिला कला मे जगह देलनि रोलर कोस्टर , हॉस्पिटल के दृश्य ,ट्रेन के दृश्य ई सब हुनक गैर पारम्परिक विषय छलनि l पद्मश्री गोदावरी दत्त जे जीवन भरि पारम्परिक विषय बनबैत रहलीह एकटा अपन कलाप्रेमी ग्राहक लेल बुद्धा कार्निवाल सेहो बनौलनि l

कतेक मैथिल लोक कहैत छथि एकटा मैथिल भय क अहाँ मिथिला पेंटिंग कियैक नहि करैत छी l हम मैथिल छी त की मात्र मिथिले पेंटिंग करी , मॉडर्न पेंटिंग नहि कय सकैत छी l हमहू शुरुआत मे पारम्परिक मिथिला पेंटिंग करैत छलहुँ मुदा बियाह के बाद आधुनिक पेंटिंग करय लगलहुँ l आब हमर पेंटिंग

मे आधुनिक कला आ समकालीन कला के विषयवस्तु आ तकनिकी सेहो देखाई देत l

किछु गोटे कहैत छथि आई धरि कोनो आन ख्याति प्राप्त कलाकार मिथिला पेंटिंग मे बिकनी पहिरल स्त्रीक चित्र नहि बनाओलनि. मिथिला पेंटिंग मे अ हाँ जिनकर नाम सुनने छी ओ सब बूढ़ पुरान लोक सब छथिन पहिने मिथि ला पेंटिंग मात्र पारम्परिक बनैत छलै मुदा आब किछु परिवर्तन भय रहल छै क जेना पुष्पा देवी ,अविनाश कर्ण ,संतोष दास l हमहू अपन रेखांकन मे कोनो मैथिल महिला के बिकनी मे नहीं देखाउने छी हमर चित्र जाहि मे अश्लीलता के आरोप लगाओल गेल अछि ताहि मे .गोआ समुद्र तट के दृश्य छै कोनो विदेशी पर्यटक के एकटा मिथिल स्त्री कोल्डड्रिक्स बेचीं रहल छथिन l पलायन के शिकार मैथिल ललना मानसि क वर्जना के तोड़ि क अपन रोजगार मे लागल छथि l

अहीं सब जबाब दिय जे विदेशी पर्यटक की कम्बल ओढिक सनबाथ लेतीह ? असल मे लोक पर म्परा के ताबीज़ जकाँ गर्दैन मे टांग नेने छथि परम्परा बनैत बिगरैत रहलैया उ दाहरण के लेल जयमाल अपन सबहक परंपरा नहि छल मुदा आब समाज अपना लेलक l

अपन समाज मे आई जे नकली संस्कारवान लोक छथि ओ सब छद्म लबादा ओढ़ेने छथि l साहित्य, कला आ संस्कृति के नाम पर पुराणपंथी दुकान चला रहल छथि सबके कलई खुजि रहल छनि ।

सोसल साईट पर विरोध के हम सामान्य रूप मे लेलहुँ कियैक त कोनो रच नाकार के ई सब सहय के क्षमता जरूर हेबाक चाही l गीत गोविन्द ,कालि

दास आ विद्यापति के सौन्दर्य वर्णन पर बहुत लोक विरोध करैत छथिन । राजकमल चौधरी आ खट्टर कका के सेहो विरोध भेलै l

-संजू दास मो 9899242017

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे

गौरीनाथ

कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे

पन्द्रह साल पहिने 'अंतिका'क अप्रैल-जून 2008 अंक मे कुमार पवन क प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दास क कलाकृति पर जे टिप्पणी कयल जा रहल अछि ओकर संदर्भ मे किछु बात मिथिला संस्कृतिक तथाकथित रक्षक ऐ चित्र के लऽ कऽ कऽ रहल छथि ओ अत्यंत अफसोसजनक आ निन्दनीय अछि।

संजू दास हमरा लोकनिक समयक एकटा महत्वपूर्ण कलाकार छथि । संजू जी मे स्वस्थ आ गतिशील परंपराक प्रति जागरूक आ समृद्ध हेबाक अलाबे आइक बदलैत समय आ समाज के देखय आ परखय मे

निपुण आधुनिक चित्रकारक नजरि छन्हि। हुनक चित्रक पाँति बजैत अछि, स्वस्थ मनुक्खक मोन कैं चिंतनशील बना दैत अछि । निश्चित रूपसँ ओ स्वशिक्षित चित्रकार छथि, मुदा ओ एकटा कुशल कलाकार छथि, जिनकर कलाक राष्ट्रीय स्तरक कएकटा चित्रकार आ कला समीक्षक सराहना केने छथि। बहुत रास महत्वपूर्ण सम्मानसँ सम्मानित संजू जी क पेंटिंग प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे संग्रहित भेटत।

दरभंगा जिलाक कमरौली गाममे जनमल संजू जी स्नातक छथि। हुनक पेंटिंग क छअ टा एकल आ दर्जन बेर समूह प्रदर्शनी कएल गेल अछि। राष्ट्रीय स्तरक पत्रिका, अखबार आ किताबमे ऐ सब पर चर्चा भेल अछि। नारीवादी दृष्टिक समर्थक संजूक मानब अछि जे आइयो महिलाकैं समाजमे उचित सम्मान नै मिलल छै आर जाधरि ई सहज नै भऽ जेतै, ताधरि महिला अपन इच्छाक अभिव्यक्तिक तरीका ताकैत रहतै। आइक नारीक संघर्षक संग-संग हुनक इच्छाक अभिव्यक्ति हुनक चित्रकला मे भेटैत अछि ।

संजू जीक विवाह आधुनिक चित्रकार रविन्द्र कुमार दाससँ भेल अछि । दुनू गोटे बहुत विचारशील कलाकार छथि जिनका पर कोनो समाज गर्व महसूस कऽ सकैत अछि । एहन चित्रकारकैं कलाक बिना बुझने हुनकर चित्र पर ओछ टिप्पणी करय वाला लोक अपनाकैं लेखक-कवि-चित्रकार, मिथिलाक संस्कृतिक रक्षक कहि सकैत छथि, मुदा संवेदनशील स्तर पर हुनका सब पर मनुष्य हेबाक बात पर संदेह भऽ सकैत अछि।

'अन्तिका' क संपादकक रूपमे हम एकर निंदा करैत छी जे एहेन टिप्पणी करैत छथि आ सभ जिम्मेदार सोच बला मित्र सँ उचित हस्तक्षेपक अपेक्षा करैत छी।

संजू दास मिथिला संस्कृतिक तथाकथित रक्षककेँ आहत करयबला पेंटिंगक विषय मे कहैत छथि, "हम गोवा बीच क दृश्य देखलाक बाद ई ड्राइंग बनौने रही। मिथिलाक एकटा महिला विदेशी पर्यटककेँ कोल्ड ड्रिंक बेच/पड़ोसि रहल छथि। अर्धनग्न महिला बिकनीमे एकटा विदेशी पर्यटक अछि।" मतलब जे पलायनक शिकार मैथिल ललना भूगोलक संग संग मानसिक वर्जनाक देवाल पार कऽ रहल छथि। अश्लीलता ऐ चित्रमे नहि, अधलाह विचारक लोकक नजरिमे अछि। अंग अश्लील नहि अछि आ ने ओकर चित्रण। जँ एहन रहैत तँ कोहबरक चित्र नहि बनैत।

(हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद आशीष अनचिन्हार)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, कैं बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकैं रचि चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकैं एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा ऐ रचनाकैं पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकैं आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकैं सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ। ऐ कथाक चित्र सभकैं लिखलनि अछि लिखिया संजू दास- **सम्पादक**

दीर्घ कथा

पइठ

कुमार पवन

प्रायः एक युग बाद कुमार पवन फेर सँ लेखन मे सक्रिय भेल छथि। विगत शताब्दीक नवम दशकक शुरुआत सँ लेखन आरंभ कर'वला कुमार पवन मैथिलीक सुपरिचित कवि, कथाकार आ व्यंग्यकार छथि। किछुए कथा आ तीन चारि दर्जन कविताक बल पर मैथिली मे अपन फराक पहिचान राख'वला ई एक टा विशिष्ट कवि-कथाकार छथि। हिनक नव दीरक प्रारंभ एक टा यादगार दीर्घ कथा आ पाँच गोट कविताक संग भ' रहल छनि। प्रायः कतेको वर्ष सँ मैथिली मे एहन सशक्त कथा पढ़बा लेल नइँ भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक व्यापक पाठक वर्ग केँ ई स्मरणीय शुरुआत बुझेतनि।

—संपादक

अन्हार मे डुबैत खिरोइ...

मोन मे औनाइत जाहि बेचैनी कें टारि देबाक फेर मे हम एत' प्रायः भागि क' आयल छलहुँ, से एखनहुँ कहाँ छोड़ि रहल अछि... ईंटाक पाया आ काठक गार्डरवला एहि जर्जर पुल पर ठाढ़ भ' नीचाँ लगभग सुखायल मिरतुक्की खिरोइ आ चारू दिस गर्द-गर्द भेल वातावरण कें देखि मोन हल्लुक क' लेबाक आशा करब आब व्यर्थे बुझा रहल अछि...। खिरोइ, जे हमर गामक पूर्वी सीमान पर अदौ सँ बहैत हमरा लोकनि कें एक टा परिचिति दैत आबि रहल अछि, आइ केहन दुब्बरि-पातरि सनटिटही सन भेलि अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष क' रहल अछि, से देखनहि जानल जा सकैए। एक टा दीर्घ निसास छोड़ैत हम चारू दिस नजरि खिरबैत छी। सूर्य ढरकि चुकल छथि...। खूने खुनाम पश्चिमाकाश...। घुरिआयल परिवेश...। नहू-नहू उतरैत अन्हार...। आ अन्हार मे डूबैत खिरोइ...।

हम एत' की क' रहल छी? एखन तँ गाम पर रहबाक चाही। ओत' धमगज्जर मचल हेतै। कल्हुका भोजे तेहन रहै जे अजुका भोज लेल लोक सभ भोरहि सँ उत्साहित अछि। जटावला भाँगक पत्ती भोरहि मे फूलय लेल ध' देल गेल छलै। कमलू भाइक खास आग्रह छलनि। से छनि। गाम मे भोज रहौक तँ ओ दड़िभंगा मे अटकि नहि सकैत छथि। ओ कालिए दसबजिया ट्रेन सँ आबि गेल छलाह। उत्साहपूर्वक भनसिया सभक संग भरि दिन लागल रहलाह। वैह किऐ? बहुतो लोक आयल अछि। कॉलेजिया नवयुवक सभ। कालिए सँ हरित क्रांतिक योजना पर अमल भ' रहल छैक। भोर सँ फुलैत भाँग कें मीजि-मीजिक' पाँच पानि सँ धोने हेताह शोभन...। सिलौट पर ताधरि पिसने हेताह जाधरि भाँग सिलौट ने छोड़ि देने हैत। भाँग मे देल गेल हेतै खीराक बीया, गुलाबक पत्ती, सौँफ, दछिनी, मरीच आदि-आदि कैक तरहक मसाला। वैन्यू छलै टीसन। नवीन झाक चाहक दोकान। कमलू भाइ साफ कहने छलथिन नवीन झा कें, कोनो हालति मे दस किलो दूध राखब लेल। दूध-चीनीक संग घोरल गेल हैत भाँग। गिलास-पर-गिलास देने हैत सभ...। सबहक मोन आब गुनगुना चुकल हेतै...। एखन धरि तँ सबहक संपर्क भ' चुकल हेतै बाबा बीरहबा सँ—सोझे हॉटलाइन पर। आब तँ एक्कहि टा काज बाकी...।

सरबन बाबूक दलानक विस्तृत अगुअइत मे नोतल ब्राह्मण सभक जुटान भ' रहल हेतनि...। ओत' एखन हमरो रहबाक चाहैत छल...। आ हम एत' एहि पुल पर ठाढ़ छी...। की क' रहल छी हम एत'? सभ हमरा ओत' ताकि रहल हैत...। कमलू भाइ खास क' आ हम...? तखन सँ कतेक बेर गाम दिस विदा होब' चाहलहुँ अछि, मुदा डेगे नहि उठि रहल अछि...। हिम्मति तँ करहि पड़त...। सामाजिक बन्हन कें अनठिया देब उचित नहि...। जाय तँ पड़बे करत...।

नदीक छरकी...लचका...जरलाहा पीपर... जेना-जेना गाम दिस बढ़ल जा रहल छी अन्हार आर सघनायल जा रहल अछि...। माल-जाल कें चराक' बाध सँ घुरैत लोक सभ...। मंथर गतिएँ चलैत, पजुआहि करैत, महीस सभ आ ताहि पर बैसल चरबाह सभ सड़कक एक दिस सँ जा रहल अछि। सामने गाछी सभक पच्छिम रेलवे आ तकर ओइ पार गाम। गाछी आ बँसबारिक कारणें अन्हार आर घनगर बुझा रहल अछि। गाछी सभक विरल भाग द' क' इजोत हुलकी द' रहल अछि आ संगहि सुनाइ पड़ि रहल अछि जेनेटरक फट्-फट्-फट् फट्... अनवरत...।

गाछी पार क' रेलवे लाइन पर चढ़ैत छी...। एतहि सँ स्पष्ट बुझाइत अछि—व्यापक ब्राह्मण समाज जुटि रहल अछि...। पुआरक सैकड़ो बीड़ा पंक्तिबद्ध राखल जा चुकल अछि...। बैसइ जइयौ केर आग्रह सुनबाक लेल उताहुल बूढ़-सेयान-बच्चा-बुतरु-छौंड़ा-छौंड़ीक भीड़...। भोज्य पदार्थ पर टूटि पड़बाक लेल सन्नद्ध अटाठट्ठ लोक...।

रेललाइन सँ सड़कक लभानी पर उतरि जहिना हम आगाँ बढ़ैत छी कि आग्रह भ' जाइत छैक। की रेलम पेल! लोक सभ बीड़ा लूझ' लेल टूटि पड़ैत अछि। केओ चारि-चारि टा बीड़ा लूझि-ओछा पलथी मारिक' बैसैत अछि तँ केयो बीड़ाक अभाव मे चप्पले पर आसन जमा लैत अछि। दब्बू प्रकृतिक लोक बीड़ाक लूटि मे पछुआ गेला संतां हारि क' चुकिए माली बैस जाइत अछि...। ओम्हर जे कनेक हमर-झाँटि-पर-झूलय-बड़का-बड़का-लोक वला लंठे सँ लैस अछि से बलजोरी सरबन बाबूक टाल सँ झीकि-झीकि पुआरक मोटका बीड़ा बना बैस जाइत अछि आ गर्व सँ गर्दनि तानि चारू दिस ताकि रहल अछि जेना कि कहि रहल हो, 'मर्दक

बेटा अछि क्यो तँ टोकि क' देखओ नेञ।' लोक फराके सँ हाँ...हाँ...क' रहल अछि परंच केक्कर हिम्मति छै जे समक्ष मे आबिक' रोकय...।

आब पात परसल जा रहल अछि...पुइनक पात। अद्भुत! आब जखनकि प्राय: सभ भोज मे लोक दड़िभंगा वा पुपरी सँ पातक रेडीमेड प्लेट आ बाटी ल' अनैत अछि तखन पुरइनक पात? सरबन बाबूक हठ छलनि। खजुरबाराक पोखरि सँ आनल गेल छलै बोझक बोझ...। सरबन बाबूक तँ खाली हठ आ इच्छा छलनि। असल व्यवस्था सँ कयलनि राघव लला। से छनि। लोकक हुनका कमी नहि छनि...। बस एक बेर हाक देबाक काज...।

मुदा बाजय रसनचौकी...

से आब भोज शुरू भ' गेल अछि...। चूरा-दहीक भोज...। नहि-नहि, दही-चूराक भोज...। कहियो क्रेज रहै पक्की भोजक माने पूड़ी जिलेबीक भोजक। नामे सुनैत मातर बच्चा सभ किलोल करय लगैत छल...। स्त्रीगण अनेरे प्रसन्न भ' अपन नेना कें कोरा मे ल' चुम्मा लैत पति कें कनेडरिएँ देखय लगैत छलीह...। पुरुखवर्गक तँ कथे कोन? परानं दुर्लभ लोके शरीराणि च पुन: पुन: कें गौरह मे बन्हने ओ लोकनि भौंगक पुरना पत्ती पीसि देबाक लेल कनिञाक निहोरा करय लगैत छलाह...। मुदा, आब ओकर क्रेज गेलै। आब के पुछैए पूड़ी-जिलेबी-तरकारी कें? ओ तँ रहरहाँ होइते रहैत छै। आब तँ माघ नहाय से मर्द कहाय। माने जे दही-चूराक भोज क' पाबय से मर्द। बड़का-बड़काक ढोंढ़ी ढील भ' जाइत छनि...। हँसी-ठट्ठा छै की? पसेरी भरिक' करेज होयबाक चाही। आ चाही मनीपावरक संग मैन पावर...। से आब लगैए, कनिञा कार्कोक दुनू बेटा मे एहि दुनू चीजक कमी नहि। दुनू बेटा पौरुष देखौलथिन अछि... आ से भरपूर देखौलथिन अछि...।

पौरुष तँ ओ लोकनि देखबिते रहैत छथि। आब ओही दिनुका बात लिय' ने। अरे, सरझपी दिनुका। अस्थिसंचयक बाद श्राद्धक हेतु योजना बनाब' लेल गामक पागधारी लोकनिक बैसार भेल छलनि...। सरबन बाबू दुनू भौंइ ओना तँ एक दोसरा सँ कटल-कटल रहैत छलाह...। एक गोटे ई घाट तँ दोसर वीर घाट! परंच एखन दुनू गोटे अपना कें एक टा विशेष प्रकारक अपराध भाव सँ समाने रूपेँ दबल अनुभव क' रहल छलाह। लागि रहल छलनि जेना कि पतिया लागल होनि। पतिया लागब की होइत छै, से ओ लोकनि नेनपने मे देखि चुकल छलाह। जकरा हाथेँ खुट्टा पर बान्हल गाय-बड़द मरि जाइत छलै तकरा गरा मे मरल पशुक-जउड़ लटकौने प्रायश्चित हेतु घरे-घरे दयनीय मुद्रा मे मौन रहि भीख माँगैत देखि चुकल छलाह...। आइ दुनू भौंइ अपना-अपना कें किछु ओहने सन स्थिति मे पाबि रहल छलाह...। एम्हर पागधारी नक्षत्र मंडली विचार क' रहल छल—

"श्राद्ध कोन होअय?"

"वैदिकी?"

"पंचदान?"

"के बजलाह पंचदानक नाम? वजबाक गति नहि अछि तँ कम-सँ-कम चुप तँ रहू। अहाँ कें ई नञि बूझल अछि जे शास्त्रक अनुसार वैदिकी श्राद्ध भेने मुइनहार कें पइठ होइत छनि? आ सरबन बाबू दुनू भौंइक कोनो हाड़ हिलैत छनि? कथीक अभाव छनि?"

"हँ यौ! अभाव किऐ रहतनि? दोसर, प्रतिष्ठो किछु अर्थ रखैत छैक कि नहि? प्रखंड भरिक कोन गाम मे के नहि चिन्हैत छनि सरबन बाबू कें?"

"आ राघवेजी कोन कम छथि?"

"हँ। से तँ ठीके! कोन गामक नवयुवक नहि चिन्हैत छनि राघव कें?"

"असल मे चिलमक सम्बन्धे ततेक विस्तृत होइत छैक...।"

"फेर...। की बाजि देलहुँ अहाँ? जखन मुँह खोलब बुड़िल्ले बोकरब। भतृहरि कहने छथि...।"

"आब भतृहरि कें एखन रहय दियनु। ट्रैक सँ हटै नहि जाइ जाउ।"

"ठीके कहैत छी। उचित तँ यैह जे वैदिकी होउक।"

"हँ...हँ...। वैदिकीए होउक।...की सरबन बाबू?"

जगमगाइत नक्षत्र मंडलीक मध्य सकुचायल सकपंज-निष्प्रभ बैसल सरबन बाबूक बुद्धि जेना हेरायल सन भ' गेल छलनि। आब जेना झुकल माथ उठयबाक अवसर आ बाट देखाइ पड़ि रहल छलनि...। कनेक महग अवश्य छलै, मुदा दोसर उपाये कोन छलनि...?

"ठीक छै। हमरा दिस सँ हर्ज नहि। कनेक राघवजी सँ सेहो पूछि लियनु।"

"कि राघवजी?"

सबहक नजरि राघव लला पर आबि स्थिर भ' गेल रहनि। धुआँयल मुखाकृति... झड़कल-झड़कल। कारी झामर ठोर...। तमाकुलक योग सँ गनगनायल गाँजाक लाली प'ल उठबिते आँखिक डिम्हा सँ हुलकी देब' लागल रहनि...।

"ठीके छै। जे सबहक विचार से हमरो...।"

आब भोज। नक्षत्र मंडलीक अनुभवी पाकशास्त्री सभ उनटि-पुनटि क' एहि मुद्दा पर विचार करय लगलाह...। खूब घमर्थन भेल...। अन्तत: निर्णय देल गेल—

"एकादशा दिन यदि संभव होअय तँ तुलसी फूल वा कनकजीर वा करिया कामोदक पुरना अरवा चाउर। जँ से उपलब्ध नहि भ' सकय तँ बासमती तँ अबस्से होअय। फेर राहड़िक दालि...सात टा तीमन...बड़, बड़ी, पापड़, दही, चीनी, सकड़ौरी आदि-आदि।"

"आ द्वादशा दिन पूड़ी-जिलेबीक भोज की करबह हौ सरबन! जखन एतेक भेबे केलै तँ बनियाँबला भोज की करबह। ओहुना कनिञा काकीक भोज लेल सबहक मोन टाँगल छै...। से दही-चूराक करह। भगलपुरिया कतरनी चूरा... कम सँ-कम चारि बेर अहगर क' छल्हिगर दहो...चीनी...डालना...तीलक अँचार...आलुक अँचार...नोन-मिरचाइ आ अंत मे बुनियाँ...की?"

"ठीक छै ने सरबन बाबू?"

"मुदा, इस्टीमेट?"

"बनाब' हौ गोपाल। तों तँ हिसाब-किताब मे माहिर छह। बड़का कक्का आ भुटकुन बाबा सँ पूछि लहुन। आ अहूँ लोकनि विचार-सहयोग दियनु मास्टर साहेब आ नेता जी...।"

एस्टीमेट बनल। श्राद्ध आ भोज दुनू मिलाक' प्राय: डेढ़ लाखक! सरबन बाबूक हवा गुम्म आ राघव लला सटकदम्म...।

"की सरबन बाबू, भेल ने?"

सरबन बाबू दुनू भौंइ कें चुप देखि ठीकेदार साहेब कें नहि रहल गेलनि, "एना चुप किऐ छी? टकाक दिक्कति अइ? ई दिक्कति कोनो दिक्कति छै? असल बात तँ ई जे अहाँ सभ चाहैत की छी? जँ चाहैत छी तँ व्यवस्था भ' जेतै। हम कोनो समाज सँ बाहर थोड़े छी? आ जँ अवसर पर काज नञि आबय तँ धन बेकार। कथी? सधयबाक चिन्ता? भक्क! अरे माय-बाप फेर घुरिक' नहि अबैत छथिन। ओ पुत्र कें जन्म कथी लेल दैत छथिन? एही लेल ने जे पुत्र समय पर पुरुषार्थ देखाबय? एहन श्राद्ध करय... एहन ब्रह्मभोज करय जे उद्धार क' देअय... स्वर्गक फाटक फोलि देअय। आ से अवसर उपस्थित अछि अहाँ सभक समक्ष। आब आवश्यकता अछि पुरुषार्थ देखयबाक।"

"ठीके तँ कहैत छथि भाइ। बेसी सोचल नहि जाओ। अरे, समय पर पाइ आपस क' सकबनि तँ बेस, नहि तँ टीसन लग सड़कक कात महक जे दसकठवी गाछी अछि सैह लिखि देबनि भाइ कें। ओहुना आब गाम महक जमीनक प्रति मोह बेकारे। गाछिओ तँ उजड़िए गेल अछि...।"

ठीकेदार साहेबक मुंशी भोगी झाक मंतव्य नीक जकाँ बूझि रहल छलाह सरबन बाबू। गँजेड़ी

राघव बूझय वा नहि। जमीनक ओइ टुकड़ी पर बहुत दिन सँ नजरि छनि ठीकेदार साहेबक। ओ ओत' मार्केट कॉम्प्लेक्स बनाब' चाहैत छथि। सामान्य स्थिति रहैत तँ सरबन बाबू ठीकेदारक एहि कूटनीतिक चालिक जबरदस्त जवाब दित'थनि...। मुदा, एखन तेहन ने उलंग फैसल छथि जे कोनो आन बाटे ने सूझि रहल छनि। के देत डेढ़ लाख रुपैया? जे देत से बदला मे किछु-ने-किछु चाहबे करत। निःस्वार्थ मदति आब के ककरा करैत छै? कम-सँ-कम ई समय पर द' तँ रहल अछि। सरबन बाबू चारू दिस तकलनि...। सबहक दृष्टि मे एकेक टा आग्रह। हँ कहि दियौक ने। सपूत बनू...अपन नाम कँ सार्थक करू...!

''हम तँ तैयार छी। मुदा, एक बेर राघव जी कँ सेहो पूछि लियनु।''

''की राघव जी?''

ठीकेदार साहेब आ हुनक मुंशी भोगी झा कँ बेछिल्ले बाँस धौंसि देबाक योजना मोनहि मोन बनबैत आ तत्काल स्थगित करैत राघव लला कँ प्रश्न सुनितहि लगलनि जेना केओ हुनक पौरुष कँ ललकारि रहल होनि। क्रोध बाट बदलि क' सरबन बाबू पर केन्द्रित भ' गेलनि—

''देखै जाइ जाउ। हम कोनो मउगीक साया मे घुसिया क' रह'वला मर्द नहि छी। सभ कँ अपन फिकिर कर' लेल कहियौ। राघव मर्द अछि आ मर्द वला बात कहत। आ मर्दवला बात वैह अछि जे लागय से देआइ, मुदा बाजय रसनचौकी...।''

पित्त तँ सरबन बाबूक सेहो लहरलनि, मुदा गरा मे उतरी तँ हुनके छलनि। दबा गेलाह...।

अजेय योद्धा सभक पराक्रम...

से आइ द्वादशाक जबरदस्त भोज भ' रहल अछि...। लगैए पूरा गाम उनटि आयल अछि...। हाथ जोड़ि क' सबहक स्वागत करैत दुनू भाँइक आग्रह, ''मोन भरि खाइ जाउ। जे वस्तु जतेक चाही से लिय'। कोनो वस्तुक कमी नहि।'' कमी किऐ रहतै? ठीकेदार साहेबक सहयोग देखि भरि गामक युवक लोकनिक उत्साह फरकि उठल छलनि...। संगहि सहयोग छलनि भमरपुराक सोगारथ यादवक।

सोगारथ यादव। सरबन बाबूक परम मित्र। प्रखंड राजनीतिक संगी। ढढ़िया, मिल्की, खजुबारा, भभरपुरा, खेरिया टोल, राढ़ी माने ई जे परोपट्टाक सभ गाम छनि मारल गेल...। महिसबार सभ कँ सोझे बथाने पर जा पकड़लनि सोगारथ बाबू, ''हौ भाइ सभ, साल भरि तँ देहातक दूध एकत्र क'...पानि मिला...ड्राम मे भरि...विदाउट टिकट जनता ट्रेन सँ जाक' दड़िभंगा मे बेचिते छह...चानी कटिते छह...। कहियो क' किछु पुण्यो कमाबह। बस चारि दिनुका दूध दएह। बूड़ा' जे हमरे दैत छह। चारिम दिन एक-एक टा पाइ गनबा लएह...।'' सोगारथ यादवक निशाना कतहु खाली जानि। ततेक ने दूध भेलै जे सय तौला...नहि-नहि, तौला नहि खोर मे पौरल गेल दही...।

''अढ़ाइ सय खोर...।''

''तँ तोरा माने की? अट्ठारह मन अरवा चाउर आ बीस मन चूड़ा खयनिहार गाम मे एहि सँ कम मे की होइतै?''

से दुनू भाँइक आग्रह जे मोन भरि खाइ जाउ आ कामना करै जाउ जे कनिञा काकी कँ पइठ होइन...। पंक्तिबद्ध आसन जमैने भोज खयनिहार सभ...। एक टा पाँति पच्छिम मुँह तँ दोसर पाँति पूब मुँह...। एहिना तेसर पाँति पश्चिम मुँह तँ चारिम पाँति पूब मुँह...। सम्मुखक दू पाँतिक बीच मे बारिक लोकनि कँ अयबा-जयबा लेल रस्ता। एत' सँ ओत' धरि पाँति-पाँति मे कुम्भकोपरिदधिचिपटान्नशर्करालवणव्यंजनानिम-धुराणि च सँ जूझैत लोक सभ...। चलैत मुँहक चपर-चपर...। बारिक लोकनिक 'ई लाबह हौ', 'ओ लाबह हौ' केर गुंजित स्वर...। सघन भ' गेल अन्हार सँ लड़ैत जेनरेटरक पचासो ट्यूब-लाइट...जगमग...जगमग...सभ किछु जगमग...।

समाजक पैंच-पैंच नाकवला लोकसभ मे अपना कँ अग्रगण्य बुझनिहार अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबू लोकनि पहिल खेप मे नहि बैसलाह अछि। ओ लोकनि दोसर वा तेसर खेप मे बैसताह। एखन तँ ओ सभ पाँति सबहक मध्य मे टहलैत कखनहुँ भोज खयनिहार सभ सँ दहीक स्वाद वा डालना मे नोनक मात्रिक मादे पूछि रहल छथि, तँ कखनहुँ बारिक लोकनि कँ कोनो खास जगह पर खास वस्तु ल' क' पहुँचबाक निर्देश उछालि रहल छथि...।

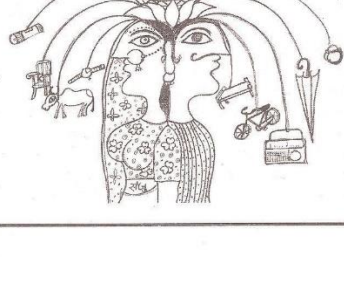

मुड़ी गाड़ि तन्मय भ' भोजनलीन लोक सबहक लगन देखि जेना...जेना किछु मोन पड़ि रहल अछि...। हँ...कनिञे काकी कहैत छलीह खिस्सा...। मैथिल सभक भोजनपटुताक मादे सुनि इंद्रक घमंड फड़कि उठल रहनि। बड़का भोजन भट्ट छथि मैथिल सभ तँ हमरा ओतय आबथु। हम नोत दैत छियनि। हमर व्यवस्थानुरूप भोजन क' कय देखाबथु तँ हम इन्द्रासन हारि जायब। स्वीकार करताह? अप्पन पसिन्नक क्षेत्र मे आबि फैसल शत्रु कँ देखि जेना योद्धा कँ हँसी लागि जाइत छै तहिना उर्ध्व अहंकारी देवराजक एहि मूर्खतापूर्ण चुनौती पर मुसकिया देलनि मैथिल लोकनि। स्वीकार क' लेल गेल चुनौती...।

परंच इन्द्रो तँ पक्का खिलाड़ी छलाह। भोजक जबरदस्त आयोजन कयलनि। अपार खाद्य-सामग्री। मुदा, आहि रौ बा! ई की? परम्परानुसार सम्मुख पाँति बनाक' बैसल मैथिल लोकनिक दहिन हाथ पर कौंचि सँ ल' क' पहुँचाधरि बाँसक फराठी राखि जडड़ सँ लपटि क' बान्हि देल गेलनि। आब भोजन क' देखाबथु...। मुदा बाह रे मैथिल! ओ मैथिल केहन जे कोनहु परिस्थिति मे भोजन क' कय नहि देखाबय? सम्मुखक पाँति सभ कनेक लगीच घुसुकि आयल आ आमने-सामने बैसल मैथिल लोकनि एक दोसरा कँ एक-दोसराक पात पर सँ खाद्य-सामग्री ल' बिनु दहिन हाथ मोड़ने खोआबे लगलाह...। जल पीबाक लेल वाम हाथ तँ मुक्त छलनिहेँ। इन्द्र चारू नाल चित्त! भोजनोपरान्त गर्वित मैथिल लोकनिक समक्ष ठाढ़ नतशीश इन्द्र अपन इन्द्रासन ग्रहण करबाक निवेदन कयलथिन...। मैथिलक उदार गर्वोक्ति भेलनि, ''इन्द्रासन अपनहि राखल जाओ। हम सभ ल' क' की करब? मुदा, स्मरण रहय जे पुनः हमरा लोकनिक भक्षण-सामर्थ्य कँ चुनौती देबाक भूल नहि होअय। ई हमर सबहक क्षेत्र थिक। एहि क्षेत्र मे हम सभ अजेय छी।...''

से आइ एक कात मे ठाढ़ हम एहन अजेय योद्धा सभक पराक्रम देखि रहल छी...। नजरि भोजस्थलक कात मे पाँति सभक छोर पर स्थित सड़क दिस जाइत अछि...। ओत' समाजक दीन-हीन वर्गक महिला, पुरुष, छौंड़ा, छौंड़ी

सभ अलग्यूनियमक थारी आ बट्टा नेने प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि...जे कखन लोक सभ भोजन समाप्त क' कय उठत आ ओकरा सभ कें अघायल लोकक अँइठ उठयबाक अवसर भेटतै... । भूखक मारल लोकक एहि भीड़ मे सेहो कैक टा छोट-छोट वर्ग छै... । अपना सँ तथाकथित निम्न वर्गक लोक कें कनेक फराके रहबाक निर्देश देबाक प्रकृति एहू वर्गक लोक सभ मे छै—से स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल अछि... ।

पच्छिम भर अकास मे लौका लौकब शुरू भ' गेलैए। नहू-नहू मेघ ऊपर उठि रहल अछि... । रहि-रहि क' लौकति लौका भोज खयनिहार आ खुयनिहार दुनू पक्ष कें कनेक हड़बड़ा देलक अछि। किछु गोटे लोक सभ कें शांतिपूर्वक भोजन करबाक आग्रह क' रहल छथि। लगैए इन्द्र फेर आइ गड़बड़ी पर उतारू छथि... ।

ओम्हर गाम भरिक एकत्रित कुकुर सभ आपस मे कटाउझ क' रहल अछि। कटाउझ मे जे कुकुर हारि जाइत अछि से कनेक हटि क' विचित्र विलम्बित स्वर मे भूक' लगैत अछि... जेना कानि रहल हो... । ओह! ओहने सन... । जेना ओहि राति कानि रहल छल... । ओहि रातुक सघन निस्तब्धता कें चौरैत कुकुर सभक रुदनक ओ थरथराइत विझायल छुरी... ।

आगि-पानि-लोह-पाथर...

ओही रातुक बाद आयल छल ओ जेठक एक टा पचपचायल भोर... । उसीन क' राखि देब'चला तौसायल कारी रातुक बादक ओ भोर... ।

साँझहि सँ सड़ल गुमकी छलै... । पसेना-पसेना देह...कखनो सुखबयबाक नाम नहि... । ऊपर सँ लाखनि सँ भरल डबराक मच्छरक प्रकोप... । एम्हर-सँ-ओम्हर दौगैत...गुम्हरैत...भूकैत...कनैत कुकुर सभ... । एक्को रत्ती चैन नहि... । छटपट-छटपट करैत राति बहुत नहू-नहू बीति रहल छल... । कखनो-कखनो डबरा महक जलमुर्गी सभ चियों-चियों क' उठैत छल। ककरो चैन नहि... । कोना होइतै? जेठ खतम होब' मे प्रायः छओ दिन रहि गेल रहै परंच बुन्न पड़बाक नाम नहि... । भरि दिन अकास सँ आगि बरसैत छलै आ साँझहि सँ जे बोकर' लगैत छल पृथ्वी छेहा तौस से राति भरि उसिनाइत रहैत छल प्राणिमात्र... । पता नहि कहिया बुन्न पड़तै...?

हम ठेकानि नहि सकलियै जे कतेक राति भेल हेतै... । प्रायः डेढ़...नहि दू... । कनेक पुरबा सिहकलै... । पसेना सँ भीजल देह ठंडायल आ प'ल भरिआय लागल... । कुकुर सभक तेज झौहटि सँ निन्न टूटल... । एतेक किऐ लागि रहल छै...? भक्क! कुकुरो के कोनो ठेकान छै? जरूरी छै जे कोनो चोरे कें देखि क' भूकल होअय? भ' सकैए दोसर टोलक कुकुर पर नजरि पड़ल हेतै कि शुरू भ' गेल हैत... । सोचैत-सोचैत फेर प'ल भरिआय लागल... । कखन बरखा अयलै...हम किछु नहि बूझि सकलियै... ।

जेना एक टा झटका खाक' निन्न टूटल होअय... । बाहर सड़क दिस गुलगाल भ' रहल छलै... । क्रमशः तेज होइत... । कोठली सँ बाहर दलान पर अयलहुँ। भोर भ' चुकल रहै मुदा एखन सूर्योदय हेबा मे किछु बिलम्ब रहै। हमर घरक पूब द'क' जे रेल लाइन गेल अछि—दखिन-पूब सँ उत्तर-पच्छिम दिस—तेम्हरे लोक सभ जा रहल छल... । की बात छै? हम किछु आगाँ बढ़लहुँ... । ओकोलि ककाक दलान पर किछु लोक ठाढ़ भेल रेल लाइन दिस इशारा करैत बतिया रहल छलाह... । हुनकर सभक तर्जनी कें पाछाँ करैत हमर नजरि देखलक जे रेल लाइनक आस-पास किछु महिसवार, हाथ मे लोटा नेने 'पोखरि दिस' जयबा लेल बहरायल, किछु भलेमानुस आ ज'न-बोनिहार कें अढ़यबाक लेल विदा भेल, किछु कृषक लोकनि विस्मय आ दुःखक मुद्रा मे बहस क' रहल छथि... । एतेक फरकी सँ बात बूझब कठिन छल... ।

"की भेलैए?" हम पुछलियै।

"लगैए क्यो कटि गेलैए।"

"के?"

"हौ, हमरा तँ लगैए जे कालिह मैट्रिकक रिजल्ट बहार भेलै। कहाँदन बड्ड खराब रिजल्ट भेलैए। अबस्स कोनो फेल केलहा छौंड़ा कटि गेल हेतै।"

"नहि हौ, कोनो विद्यार्थी नहि रहल हेतै ओ। आइ-काल्हि ट्रेनक छत पर चढ़बाक बड्ड चलन भ' गेलैए। ओही मे सँ कोनो अगत्ती टपकि पड़ल हेतै।"

"ई अहाँ कोना कहैत छियै भाइ? ईहो तँ भ' सकैए जे कोनो तड़िपिब्बा वा गँजपिब्बा आँघरा गेल हैत रेल लाइन पर...आ... ।"

जतेक मुँह ततेक बात। ओम्हर ओकील कका एहि सभ सँ निरपेक्ष मनोयोगपूर्वक अपन बड़द कें सानी खुआ रहल छलाह।

"की कका, के कटि गेलैए?"

"पता नहि!" ओ हमरा दिस तकबो नहि कयलनि। नादि पर नजरि गाड़ने रहलाह। हुनक ई निरपेक्षता हमरा कनेक विचित्र जकाँ लागल। लागल जे हिनका जरूर बूझल छनि। कदाच् जानि-बूझि क' अपना कें कोनो काज मे ओझरा क' रखने छथि। हम रेल लाइन दिस बढ़लहुँ।

"हौ बौआ, तों ओम्हर नहि जाह। तोहर करेज एतेक मजगूत नहि छह...बर्दाश्त नहि हेतह... ।" ई हमर माय छलि जे पता नहि कखन सहटि क' पाछाँ-पाछाँ एत' धरि आबि गेल छलि।

"तों चिन्ता नहि कर। हम तुरंत आबि जायब। आ हमरा किछु नहि हैत। आब हम दस वर्खक ओ समीर नहि छी जे शोणित देखिक' रह भ' जायत।", हम आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ।

हमर पाछाँ-पाछाँ लछमी सेहो ओही दिस जा रहल छलि। ओकर यैह रस्ते छलै। एही द' क' ओ नित्त हीरा बाबूक ओत' बर्तन-बासन कर' जाइत छलि। सामने सँ पप्पू आबि रहल छल। पूछलियै तँ ओ कहलक, "एतेक तँ निश्चित अछि जे कोनो स्त्री कटल अछि। पैघ-पैघ केस छै। हमर हिम्मत नहि एलाउ कयलक जे लग जाक' देखियै। देखै नजि छियै जे ककरो लग जयबाक साहस भ' रहल छै? सभ दस हाथ फटकिए सँ देखि रहल अछि...आ देखिक' अपन-अपन बाट ध' रहल अछि... । एहन भयानक दृश्य नहि देखल भाइ... । हमर तँ मोन कोनादन क' रहल अछि... । हमरा जाय दिय'... ।" पप्पू घर दिस बढ़ि गेल।

तावत लछमी हमरा सँ आगाँ निकलि रेल लाइन पर घटनास्थल लग पहुँचि चुकल छलि... । आगाँ बढ़ैत हम देखलहुँ जे ओ पुरुष सभक गोल कें चौरैत भीतर गेलि... । "अरे बाप रे बाप! दैबा रे दैबा! ई की भेलै रे दैबा। कनिआ काकी अय कनिआ काकी! ई की कयली अय कनिआ काकी?", लोकसभक गोल मे घेरायल लछमी भोकरि रहलि छलि... । ओ देखाइ नहि पड़ि रहलि छलि, मुदा ओकर करुण-तीक्ष्ण स्वर गूँजि रहल छलै... । आब कोनो संदेह नहि रहि गेल छलै... । हम लपकलहुँ... । गोल मे पैसलहुँ... । हे भगवान! हिला क' राखि देब'चला भीषण वीभत्स दृश्य छल... ।

कनिआ काकी, ओ कनिआ काकी, जे वृद्धावस्था दिस डेग बढ़ा चुकलाक बादो सबहक लेल कनिये काकी छलीह...जे बाट पर चलैत काल एना लगैत छलीह जेना धरती सँ पूछि-पूछि क' डेग बढ़ा रहलि होथि... । जे धरतीए जकाँ सर्वंसहा आ अन्तर्मुखी छलीह...जे प्रत्येक जुड़शीतलक भरे टोल भरिक नवयुवक लोकनिक चानि ठंडा देब' लेल बासि जलक लोटा नेने आबि जुमैत छलीह... । जे तिला सैंकरौंति दिन सभ कें ताकि-ताकि क' तिल-चाउर हाथ मे थमा दैत पूछैत छलथिन, "बौआ तिल बहब' ने?" से कनिआ काकी आइ रेलक पटरीक आस-पास रोड़ा सभक ढेर पर खंड-खंड भेलि छिड़िआयल पड़लि छलीह... । ओह! हे भगवान!

रेलक पुबरिया पटरीक ओइ पार दुनू दौंग...दुनू पटरीक बीच मे धड़ आ पछबरिया पटरीक एहि पार मुंड... । आन-आन अंग जत' छिड़िआयल छलै ओतहि मुंडक स्थिति कनेक

विस्मयजनक! लगैत छलै जेना केओ ठोढ़ीक नीचाँ सँ सटाक' घेंट कटने होइक आ ओरिया क' रोड़ाक ढेर पर राखि देने होइक—ऊर्ध्वमुख। मुंडक केस माथ सँ एकदम सटल छलै...। चँडायल पीयर चेहरा पर सामने देखैत पथरायल निर्जीव निर्वाक आँखि मे उदासी जेना जमि गेल हो...। केम्हरो सँ कोनो कोण सँ देखितियै तँ हरायल आँखि जेना सोझे अहीं कें देखैत अनुभव होइत...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...। आश्चर्य! शोणितक दर्श नहि...। लगैए बरखा बाद मे आयल रहल हेतै...। धोल-पखारल लहास आर भयावह लागि रहल छलै...।

आनन-फानन मे खबरि पसरि गेलै। कनिआ काकीक दुनू पुत्र आ पुतोहु माथ-छाती पीटैत आबि चुकल छलथिन। दुनू भाँइ रेलवे पर ओंघरा-ओंघरा क' कानि रहल छलाह। ओम्हर दुनू देयादिनी सेहो छाती पर दुहत्थड़ मारैत घ'ना क' रहल छलीह...। लछमी आब दुनू कें सम्हार' पर लागल छलि...। बहुत कारुणिक दृश्य छलै...।

आब जखनकि स्थिति प्रायः स्पष्ट भ' चुकल छलै तँ त्वरित निर्णय लेब' मे माहिर लोक सभक विचार भेलनि जे एहि सँ पहिने कि थाना मे खबरि होइक आ गुंडा बैंकक मैसेन्जर जकाँ दारोगा सदल-बल आबि जुमय, दाह संस्कारक काज सम्पन्न क' लेल जाय...। एक बेर जँ लहास छाउर भ' गेल तँ फेर दारोगा की क' लेत? चलू आब जे भेलै से भेलै। शीघ्रता करै जाउ...।

फेर जल्दी-जल्दी मे लोक सभ लहासक टुकड़ी सभ कें बीछि-बीछि क' बोरा मे ठुँसलक...खाट पर लादि उठौलक...मटिया तेलक कंटर लेल गेल...बाड़ी-झाड़ी मे जे बाँस-राहठ भेटलै से उठबैत गेल...आ भागल श्मशान। आनन-फानन मे डेढ़-दू घंटा मे कनिआ काकी कें फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' देल गेलनि...। पँचकठिया फेंकलाक बाद कठियारी सभ बाधे-बाधे बढ़ल...खिरोइ दिस...धूर पकड़ने...आगाँ-पाछाँ..पंक्तिबद्ध।''देखै जाइ जइह'।सम्हरिक'। दोसराक पयर पर पयर नहि लाग'।...आ केओ गोटे घुरिक' तकिह' नहि। अकाल मृत्युक मामिला छै...नहि तँ अपनहि बझिह'...।'' बड़का कक्काक निर्देश कें सभ चुपचाप सुनि लेलक...। कुल्लम पन्द्रह गोटे तँ रहबे करी। दुनू भाँइ सरबन बाबू आ बाकी हम सभ तेरह गोटे। ककरो मुँह फोलबाक साहस नहि भ' रहल छलै...। जोश मे, संस्कार मे सम्मिलित होयबाक लेल, आबि तँ गेल छल लोक मुदा आब एक टा विशेष प्रकारक अदंक करेज कें दलकौने छलै...। सभ खेते-खेते धूर पकड़ने जा रहल छल...। सड़क पकड़बाक साहस नहि भ' रहल छलै। यदि पुलिस आबि गेल होइक तखन...? ओना नेता

जी सोझे मोटरसाइकिल सँ थाना भागल हेताह। सरबन बाबूक आग्रह पर भमरपुरा सँ सोगारथ यादव कें सेहो संग क' नेने हेथिन। एक नम्बरक खच्चड़ अछि चौकीदार। तुरंत साइकिल सँ थाना लेल विदा भ' गेल हैत। मुदा नेता जी तँ मोटर साइकिल सँ गेलाह अछि। ओ अबस्स पहिनहि पहुँचि गेल हेताह...। तथापि यावत् ओ घुरिक' नहि अओताह तावत् की कहल जाय...।

कतेक समय भेल रहल हेतै? बेसी-सँ-बेसी दस...। मुदा बरखाक बाद स्वच्छ भ' गेल अकास सँ एखनहि तिक्ख रौद बरस' लागल छलै। लागि रहल छलै जेना चानि चनकि जेतै...। सभ गोटे एक टा गाछी मे विलमि गेल। केओ ककरो सँ नजरि नहि मिला रहल छल...। वर्तमान प्रसंग पर केओ चर्च नहि करय चाहैत छल। अनर्थक भीषण विशिष्टता आ मात्रा कें सभ अटकारि रहल छल। दाह-संस्कारक गैर-कानूनी पक्षो कें सभ जानि रहल छल...।''चलै जाह हौ। शीघ्रता करै जाह। आब सोझे खिरोइ पर!''

जेठक कड़कड़ायल रौद मे लहालोट भेलि खिरोइ पस्त पड़लि छलि...। धार कहाँ छलै...। एक तँ ओहिना प्रतिवर्ष बाढ़िक संग आयल बालू सँ भथैत-भथैत ओ उत्थर भ' गेल छलै। दोसर एहि साल एखन धरि ठीक सँ बरखा कहाँ भेल छलै...। पुलक दक्खिन एक टा पैघ सनक खाधि मे जे जल छलै सैह...बाकी कतहु जलक निशान नहि। खाली जामे टा धार...। रातुक बरखा सँ पेटी महक बालुका-राशि जँ भिजलो रहल हेतै तँ से आब एखन हालक नाम नहि। एखनहि बालु उड़ि रहल छलै...। भोरे जे महिसबार सभ महिस कें धोबाक क्रम मे खाधि महक जल कें घोंकने छल से एखनो साफ नहि भेल छलै। ...ओहिना घोर मट्ठा। ओही जल मे सभ गोटे नहाइत गेल...। कनिआ काकी कें तिलांजलि देलक...। पन्द्रह टा लोक तिल बहि देलक कनिआ काकीक...।

घुरैत काल हम बाट मे सोचैत रही...। की तिल बहबाक यैह अर्थ होइत छै? नजरिक समक्ष लोक तरसैत रहओ...तड़पैत रहओ...बेल तरक मारल बबूर तर जाइत रहओ...अनुचित अवांछित कलंक आ दंश सहैत रहओ...मुदा समय पर केओ कल्ला अलगाब'वला नहि...सभ अपना-अपना मे लिप्त आ जखन ओ टूटि जाय...टूटिक' छिड़िया जाय तँ ओकरा फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' दियौ आ एक चुटकी तिल माथ पर ल' डुबकी द' दियौ...बस भ' गेलै तिल बहब...। तिल बहबाक अर्थ आर की होइत छैक?

कारी मड़र सूचना ल' क' आयल छल जे नेता जी आपस आबि गेलाह अछि। सभ टा मैनेज भ' गेलै...। चिन्ताक कोनो बात नहि...। सूचना द' ओ नरौह लेल विदा भ' गेल...। महापात्र कें सेहो खबरि करबाक छलै ने! मैनेज भ' गेलै। माने ई जे आब कोनो डर नजि। निधोख गाम जायल जा सकैत छल। तथापि पता नहि किएक कठियारी लोकनिक समूह मूड़ी गोंतने सड़क धयने गाम दिस जा रहल छल। खेत मे काज करैत ज'न-बोनिहार सभ उमकि क' पन्द्रहो पराक्रमी व्यक्तिक समूह कें देखि रहल छल...मुदा हमरा सभ मे सँ केओ एम्हर-ओम्हर देखय नहि चाहैत छल...। पता नहि के किछु पूछि देअय! रौद बड्ड तिक्ख भेल जा रहल छलै...। सबहक फेर चानि चनकय लागल छलै...। ओम्हर पता नहि किएक एक टा टिटही बड्ड व्याकुल स्वर मे टिटियाय रहल छल...।

सरबन बाबूक आँगन मे राखल आगि-पानि-लोह-पाथर कें छुबैत काल देखल जे टोल भरिक स्त्रीगण सभ जमा छलीह आ दुनू देयादिनी ओंघरियाय दैत चिकरि-चिकरि क' लयात्मक ढंगें कानि रहलि छलीह...जेना कोनो हृदयविदारक करुण गीत गाबि रहलि होथि...। गीतक प्रत्येक पाँतिे मे श्रद्धेया सासु माक विशिष्ट दुर्लभ गुण आ ताहि सँ आब सदाक लेल वंचित भ' जयबाक अफसोसक मर्मस्पर्शी वर्णन आरोह-अवरोहक संग भ' रहल छल...। कोनहु सहृदय कें द्रवित क' देबा मे समर्थ एहि रोदनाक यथेष्ट प्रभाव त्वरित-रुदन मे प्रवीण जनी-जाति सभ पर स्पष्ट गोचर भ' रहल छल...। ओ सभ कनितो छलीह आ दुनू देयादिनी कें भरोस तथा साहस रखबाक परामर्शो द' रहल छलीह...। सघन उदासी आ करुण स्वर कें अनुभव करैत कठियारी सभ आगि-पानि-लोह-पाथर छूलक...। कर्ता दुनू भाँइ कें छोड़ि सभ अपन-अपन आँगनक लेल विदा होइत गेल...।

नवारी दुःख कि बुढ़ारी दुःख...?

''जय हो...जय हो...महौ-महो भ' गेलै...'' दही तेबारा परसल जा रहल अछि। जे चुकबी मारने छलाह से पलथी मारि लेलनि अछि आ जे पलथी

मारने छलाह से चुक्की मारि लेलनि अछि। आसन बदलि क' सभ दही सुड़कि रहल छथि...।

"अरे के खुअबैत अछि आइ-काल्हि, एतेक हृदय खोलिक'?"

"कनिञा काकी छलीह मुदा भागमंत!"

"आह! ताहू मे कोनो संदेह? एहन सपूत सभ कें जन्म देनिहार भागमंत नहि तँ आर की कहल जयतीह?"

"देखियनु पुण्यक प्रताप जे मर' सँ पहिने ककरो सेवा करबाक कष्टो देलथिन?"

"हँ यौ ठीके कहैत छी। एक तँ उत्तरायणक समय, दोसर मृत्यो कोना क्षण मे क्षणाक भेलनि। कोनो कष्टो तँ नहि भेलनि...।"

एक कात मे ठाढ़ हम चौंकि पड़ैत छी...। मोन होइत अछि जे किछु बाजी। मुदा, एखन बाजिक' लाभे की? आ ई टिप्पणी तँ मगन मोनक असहज टिप्पणी अछि। एहि पर प्रतिक्रिया की करब? आ कोन फूसि कहलकै? ठीके ने कहलकै...। की कष्ट भेल हेतनि...? दू सँ चारि मिनट मे सभ समाप्त...। नहि! हुनका कष्टे कहिया भेलनि? यदि भेलो होनि तँ ककरो कहलथिन नहि...। कहबो कयलथिन तँ कष्टक मादे नहि—निसाफ करय लेल...आ से...।

ओहि दिन अंत्येष्टि-संस्कार सँ घुरल रही। आँगनक मुँह पर माय भरि लोटा जल, नीमक पात आ ललका सुखायल मिरचाइ राखि देने रहय। मिरचाइ कें दाँत सँ काटि...थुकड़ि...नीमक पात चिबा जल सँ कुरुड़ कयलहुँ आ पयर धोलहुँ। चापाकल पर जाय फेर सँ स्नान कयलहुँ...। जाह! दतमनि तँ आइ करबे नहि कयलहुँ...। कखन करितहुँ? छोड़! कोन भोजन करबाक अछि? ककरा धँसतै? मायक करेज! ओ किछु खा लेबाक हठ करय लागलि रहय। ओकरा टारय लेल अनेरे कनेक कठोर होइत हमर कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहय आ आँखि मे नोर सेहो ढबढबा गेल रहय...। कहुना ओ अपन हठ छोड़ि देलक। हमरा ककरो सँ गप्प करबाक मोन नहि होइत रहय।...एहि मनःस्थिति मे लखन हम अपन कोठली मे आबि पड़ल रही तखन कनिञा काकीक एहि अनपेक्षित आ भीषण परिणति पर सोचैत-सोचैत लागि रहल छल जे माथ फाटि जायत...। ई होयबाक नहि चाहैत छलै...। काकी एतेक दुर्बल तँ नहि रहलीह कहियो...। किछु सुनल आ किछु देखल छल जे जिनगीक हिंसक आँखि मे आँखि गड़बैत कनिञा काकीक मुखाकृति पर कहियो संभावित पराजयक आशंकाक लेशो धरि नहि झलकल छलनि...। तखन ई काज? कहाँ एहन तँ नहि...?

एतनी टा रहथिन कहाँदन जहिया व्यास कका बिआहि क' अनने रहथिन हुनका। हुनका सँ पैघ तँ जाउत-जइधी सभ छलथिन। साड़ी धरि नहि सम्हारि पबैत छलीह। बेर-बेर लटपटाक' खसि पड़थि। जाउते-जइधी सभ नाम देलकनि—कनिञा काकी। फेर तँ सभक ओ कनिञे काकी बनि गेलीह। नेनपन मे हमरा आश्चर्य लागय जे हम तँ हुनका कनिञा काकी कहिते छियनि हमर बाबूजी सेहो सैह कहैत छथिन। ई कोना भ' सकैत छै? ई तँ पछाति जा क' स्पष्ट भेल रहय जे वस्तुतः टोलक संबंधे ओ हमर बाबुए जीक काकी लगथिन। जे कि हमर घरक बगलवला आँगन मे ओ रहैत छलीह तेँ सभ कें कनिञा काकी कहैत देखि हमरो वैह कहबाक अभ्यास भ' गेल रहय। हमरे किऐ? देओर-भैंसुर कें छोड़िक' प्रायः सभ कें सैह अभ्यास भ' गेल छलनि...।'

दाइ (दादी) कहैत छलीह जे कनिञा काकी पाँच बहीन छलीह। भाइ एक्को टा नहि। दरिद्र पिता बड़ सँ ख सँ नाम रखने रहथिन, जानकी। ओ पाँचो बहिन मे सभ सँ पैघ छलीह। अपना पाछाँ चारि गोट बहिन कें ल' अनबाक दोखी छलीह। खिसिआयलि माय सदिखन दुरजरु कयने रहैत छलथिन, "अलच्छी! केहन जरल भाग ल'क' आयल जे...।"

जानकीक जीवन-संघर्ष छठमे वर्ख मे प्रारंभ भ' गेल रहनि। पिता भोरे स्नानक बाद शालिग्राम पूजन क' निकलि जाइत छलथिन जजमानक गाम। वंशी चौक लग भीष्मक टोलक वासी श्यामानंद पुरोहित कें जजुआर गाम धरि नित्य पयरे जाय पड़ैत छलनि। हुनक दिनचर्या चारि बजे भोर सँ शुरू भ' जाइ छलनि...आ संगहि दिनचर्या शुरू भ' जाइ छलनि जानकीक...। भोरे उठिक' फूल लोढ़ब...पूजाक बासन माँजब...छाँव करब...। आ तकर बाद मायक काज। रतुका अपैत-अँइठ बासन सभ माँजब...। घर-आँगन बहारब...चूल्हि नीपब...तरकारी काटब...चाउर बीछब...। एतेक भेलाक बाद माय तँ लागि जाइत छलथिन भानस-भात मे...एम्हर छोट-पैघ काज सभ जानकीए कें कर' पड़ैत छलनि—जेना इनार पर सँ जल भरि क' आनब...छोट-छोट बहिन सभ कें सम्हारब...। घरक लगे मे प्राइमरी स्कूल रहनि तथापि ओ कहियो स्कूलक मुँह नहि देखि पौलीह...।

जानकी कें दू गोटे सँ भरपूर सिनेह आ वात्सल्य भेटलनि...। एक तँ पिता बड्ड मानैत रहथिन। नाम रखने रहथिन जानकी, मुदा आवेशेँ कखनो वैदेही तँ कखनो मैथिली कहि सेहो सोर करथिन। दोसर गोटे छलथिन बड़की पितिआइन। गाम भरि मे कथकहिनी आ गितगाइनक रूप मे प्रसिद्ध। कनेक कड़गड़ सुभावक। मायो अपन एहि बड़की देयादिनी सँ कनेक डेराइत छलथिन। तेँ जानकी पर तनल बड़की काकीक स्नेह-सुरक्षा-क्षत्र कें देखि मोनहि मोन सुनगैत तँ बड्ड छलीह, मुदा प्रकटतः लहकि नहि पबैत छलीह। कनिञे काकीक मुँहें हम सुनने रही जे गीत गयबाक लूरि आ जितिया, सप्ता-विपता, बड़साइत, मधुश्रावणी आदिक कथा कहबाक आकर्षक-मोहक ढंग ओ अपन ओही बड़की काकी सँ सिखने रहथि...।

हुनका स्मरण नहि रहनि जे नेनपन मे कहियो कनिञा पुतरा, सतधरा वा कितकित खेलबाक अवसर भेटल होनि। जनमिते परिस्थितिक हाथेँ वयस्क बना देल गेल छलीह। धूआ बालिकाक आ मोन वयस्कक। प्रायः एगारह वर्खक रहल

हेतीह तँ पंचपुत्रीक पिता कैं हुनक बिआहक चिन्ता सवार भेलनि...। जजमान परमेश्वर ठाकुर लग चर्च कयलथिन तँ किछु दिनुका बाद ओ कहलथिन, ''मुरैठ मे हमर पिसियौतक टोल मे एक टा लड़का छै। दू भाइक भइयारी। पैघ भाइ विवाहित। छोट कुमार छै। कनेक पंडित प्रकृतिक अछि। सत्यनारायण पूजन, मूड़न, उपनयन, बिआह करा लैत अछि। देख'-सुन' मे बड्डु बेस। थोड़ेक जमीनो छै। यदि पसिन्न होअय तँ हम प्रयास करी। हम जनैत छी जे अहाँ कैं कैंचाक दिक्कति अछि। तँ चिन्ता नहि कयल जाओ। बिआह रातुक खर्चो देया देब...। श्रीविहीन संत्रस्त श्यामानंद पुरोहित कैं लागल रहनि जेना केओ थापड़ मारने होनि। मुदा निरुपाय ओ 'बेटी बेचना' कहयबाक संभावित कलंक कैं अवधारैत जानकीक बिआह क' देलथिन। आ एहि तरहेँ बालवधू बनि जानकी उर्फ कनिञा काकी एहि गाम मे अयलीह...।

मायक उमिरक जेठ देयादिनी आ सिनेही पतिक छत्रछाया मे कनिञा काकीक जीवनक ई नव अध्याय पहिलुके अध्याय जकाँ छलनि। फेर वैह कड़ाचूर मेहनतिक दिनचर्या...निरन्तर...। प्रायः बारह बर्खक बाद देयादिनी कैं लाग' लगलनि जे भीन होयब जरूरी छनि। हुनको सँ बेसी हुनक पुतोहु सभ कैं। निरन्तर कलहक परिणति अन्ततः भीन-भिनाउज मे भेलै। जेठ जन जेठांशक नाम पर नीक-नीक खेत-पथार सभ चुनि लेलथिन। कनिञा काकी छटपटा क' रहि गेलीह...। मुदा, पैघ भाय कैं पिताक आदर देनिहार धैर्यक धनी व्यास कका हुनका एतबे कहथि, ''अहाँ किछु नहि बाजू। भगवान पर भरोस राखू। सभ ठीक भ' जैतै।''

आर की कयलनि कनिञा काकी? अप्पन मेहनतिक अतिरिक्त भगवाने पर तँ भरोस कयलनि। कड़ाचूड़ मेहनति क' अपन गृहस्थी कैं सम्हारलनि। तीन साढ़े तीन बीघा जमीन... बाढ़िक मारल। उपजाक नाम पर नामे लेल अन्न...। कने-मने पड़िताइ सँ होइत पतिक आमदनी...। एहन स्थिति मे गृहस्थीक गाड़ी ससरब मोश्किल रहनि। किछु करब जरूरी छलनि। हारिक' लाज-धाक कैं ताख पर रखलनि ओ। बड़की काकी सँ सीखल विद्या काज देलकनि। अँगने-अँगने जाक' कथा-पिहानी कहब...गीत गायब...दनौरी, तिलौरी, चरौड़ी पाड़ि देब...अहिपन-पुरहर-कोबर लिखि देब...धान-गहूम फटकि-बना देब आदि-आदि काज सँ किछु आमदनी भ' जाइत छलनि...। गाड़ी कहुना क' ससर' लागल रहनि।

ओहि दिन कोठली मे पड़ल-पड़ल हमरा आँखिक आगाँ कथा कहैत कनिञा काकीक छवि नचैत रहल...। गोर दपदप छौंकी सन छरहर धूआ...छूरी सन पातर ठोर...कनेक भरल-भरल गाल...पैघ-पैघ किछु बजैत जीवन-रस सँ भरल आँखि...अँउठिया केस...कुल मिलाक' सोहनगर चेहरा...। हुनका कहियो हम लहक-चहक वला कपड़ा पहिरने नहि देखलियनि...। भ' सकैए कम उमिर मे पहिरने होथि। मुदा, हुनक जे पुरान-सँ-पुरान छवि हमर मानस मे अंकित अछि ओहि मे एकको टा एहन नहि अछि जे ओ एकपड़िया छोड़िक' कोनो दोसर साड़ी मे होथि...। जजमनिका मे कहियो काल पति कैं ढंगगर रंगीन साड़ी भेटि जाइन तँ पेटी मे जोगा क' सेँति लैत छलीह—ई सरखन बाबूक कनिञा लेल...ई रघबज जीक कनिञा लेल...आ ई गुंजाक लेल...।

अप्पन इच्छा-अभिलाषा-लालसा कैं अनठियबैत दबबैत भोर सँ राति धरि अखंड मेहनति करैत ओ कोनो तरहेँ अपन घर कैं सम्हारैत रहलीह...पाइ-पाइ कैं जोड़ैत रहलीह ...आ संतान सभ कैं पढ़यबाक प्रयास करैत रहलीह। बड़का बी.ए. क' ट्रेनिंग कयलथिन आ हाइ स्कूल मे शिक्षक बनि गेलथिन। अध्यापन सँ बेसी प्रखंडक राजनीति मे रुचि लैत अनौपचारिक रूपेँ सक्रिय रहनिहार सरबन बाबू कैं आइ के नहि चिन्हैत छनि? छोटका राघव मुदा दिशा भटकि गेलथिन। हाइए स्कूल मे रहथि कि गामक गँजेड़ी सभक संपर्क मे आबि गेलाह। पढ़ाइ मे कम आ चिलम सँ एक बीत ऊँच धधरा उठाब' मे बेसी मोन लाग' लगलनि...। मैट्रिको नहि क' सकलथिन। एखन ठीकेदारी मे लागल रहैत छथिन। बेटी गुंजा बेस चंसगर रहथिन। फर्स्ट डिवीजन सँ सप्तम बोर्ड कयलथिन, तथापि बेटी रहथि। इच्छा रहितो पाँच किलोमीटर दूर कमतौल बालिका उच्च विद्यालय मे पढ़य नहि जा सकलीह...। आब तँ सासुरो बसना कतोक बर्ख भ' गेलनि...।

नहि जानि कनिञा काकी हमरा एतेक नीक किऐ लगैत छलीह? भ' सकैए हुनक वत्सल सुभाव हमरा अपना दिस टनैत होअय। खाहे कोनो आन कारण होइक, मुदा हमरा हुनका सँ पटैत खूब छल। हुनका सँ नहू-नहू स्वर मे कोनो लोकगीत वा कोनो कथा सुनब हमरा बड्डु नीक लगैत छल। एकर अतिरिक्त हुनक नेनपनक स्मृति हुनके मुँहेँ सुनैत हमरा लगैत छल जेना कोनो रहस्यमय प्रदेशक यात्रा क' रहल होइ...। एहन प्रसंग मे कखनो क' हुनक जीवन-संघर्ष आ वर्तमान मानसिक स्थितिक झलक सेहो भेटैत छल...। जेना-जेना धिया-पूता सभ पैघ भ' रहल छलनि...पढ़ि रहल छलनि... तेना-तेना हुनका लाग' लागल रहनि जे आब किछु बर्ख आर! तकर बाद सभ किछु ठीक भ' जायत। सबहक दिन फिरै छै। सभ दिन कतहु दुक्खे होइ? सप्ता-विपाक कथा मे सेहो रानी सँ पुछने रहथि देवी, ''नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख? दुःख तँ कोनहु हालति मे भोगहि पड़तहु। अपराध भेल छौक तोरा पति सँ। मुदा, तोहर आत्मा छौक शुद्ध। तँ इच्छा पूछि रहल छियौक। बाज! नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख?'', देवीक प्रकोप सँ भयभीत रहितहुँ रानी बुधियारी सँ सोचैत विनम्र-चिंतित स्वर मे चयन कयने रहथि, ''नवारी दुःख तँ सहियो लेब मुदा बुढ़ारी दुःख तँ सहलो ने जायत।'' सप्ता-विपाक कथा मे रानी कैं तँ 'तथास्तु' केर आश्वस्ति भेटि गेल रहनि, मुदा कनिञा काकी कैं? ओ स्वयं कहैत छलीह, ''बौआ, हमरा लगैत रहय जे आब किछु बर्ख आर... जीवनक अभिशप्त दीर्घ कालखंड बीतय वला अछि...। मुदा, कहाँ जनैत रही जे कथा कथा छैक आ जीवन जीवन...। कहाँ जनैत रही जे बसात कैं मुरुठी मे पकड़बाक प्रयास...!!''

सत्ते! कनिञा काकी कहाँ जनैत रहथि जे फसिल लगा क' संभावित उपजाक सपना देखैत मिथिलाक कृषक लोकनिक सपना जेना प्रतिवर्ष बाढ़ि मे बहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि, तहिना हुनको सपना मात्र सपने भ'क' रहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि...। से जनितथि तँ जेठ पुत्र कैं शिक्षक बनैत आ छोट कैं पेट्टी कान्ट्रेक्टरक रूप मे आगाँ बढ़ैत देखि एक टा मृगतृष्णा मे नहि फँसितथि...।

पोता-पोती कैं तेल मालिश करैत...स्नान करबैत...सुग्गा कौर, मैना कौर खुअबैत...रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत ओ निरंतर मगन रह' लागल छलीह। आब तँ हुनका एक्के टा लालसा छलनि। बस...किछु दिन नीक जकाँ सुख भोगि ली...। आ तकर बाद सिऊँथ मे सेनुर नेने आँखि मूनि ली...। सुनिक' एक दिन कतेक कातर भ' उठल रहथिन व्यास कका...। जेना कोनो बच्चा कैं अपन माय सँ बिछुड़ि जयबाक आशंका त्रस्त क' देने होइक...।

प्रायः सत्तर वर्षक एहि बच्चा कैं की कहल जाय? दिन-राति जानकी-जानकी रटैत रहयवला ई बच्चा कोना रहि पाओत हमरा बिना? एगारह बर्खक उमेर सँ ओ देखैत आबि रहल छथि अपन एहि बच्चा कैं। दुनियादारी सँ प्रायः अनवगत ई बच्चा कथू लेल कहियो चिन्तित नहि भेल। किछु जरूरी होइक तँ जानकी! कतहु सँ घुरिक' आबय तँ जानकी! बड़की पुतोहु कैं बड्डु अनसोहाँत लगनि। बुढ़ारी मे कतहु लोक एतेक...। जानकी...जानकी...जानकी! बाह रे जानकी! कहलकै जे हम सुनरी कि पिया सुनरा गामक लोक बनरी-बनरा! पुतोहु कैं जे मोन

होनि से सोचथि आ बाजथि। मुदा, ओ स्वयं जनैत छथि जे प्राय: दसे बर्ख मे टुग्गर भ' गेल ई बच्चा पुन: टुग्गर भ' जयबाक आशंका सँ ग्रस्त अछि...। ओहि दिन पतिक भीतर सँ हुलकी दैत आ फेर सम्पूर्ण मुखाकृति पर पसरैत एक टा टुग्गर कातरता कें देखि हुनका लागल रहनि जेना फेर सँ ब्लाउज भीजि गेल होइन आ एक टा दुधिया सुगंध पसरि गेल होइक...।

फेर कहियो व्यास कका लग ई बात बजबाक साहस नहि भेलनि...। आ एक दिन माघ मासक कुहेसल भोर मे व्यास कका अपनहि आँखि मूनि लेलथिन। हुनका आँखि मुनिते जेना कनिञा काकी अपना कें कटाह एकाकीपनक हिमगीत चाँगुर मे फँसल अनुभव कयलनि। ओह! ओहि दिनुका हुनकर कानब...! तुलसी चौरा लग व्यास ककाक शव पर माथ पटकि-पटकि क', करेज फाड़ि कनैत कनिञा काकीक ओ छवि...।

एम्हर पतिक शव कें लोक श्मशान ल' गेलनि आ ओम्हर ओ अचाँचके मौन भ' गेलीह...। जेना एकदम निस्पंद...जड! टोल-भरिक स्त्रीगण सभ जे-जे करबैत गेलथिन ओ करैत गेलीह। चूड़ी फोड़ि देल गेलनि...। मौन निर्विकार चेहरा नेने ओ सहयोग दैत गेलथिन...। फेर कोना-कोना अस्थि-संचय सँ ल'क' श्राद्ध धरिक ओरिओओन भेलै, काकी कें किछु बूझल नहि भेलनि। दुनू भाँइ कें जेना जे फुरयलनि... लोक सभ जेना जे परामर्श देलकनि...करैत गेलाह...।

खिड़की पर अँटकल मुंड...

''बौआ...बौआ! उठह ने हौ! कतेक सुतबह?'', माय हमर कोठलीक केबाड़ पीटि रहल छलि। हमरा लागल जेना कोनो यात्रा सँ घुरि क' आयल होइ। संभवत: माय बूझि रहल छलि जे बेटा सूतल अछि। ''चाह बना दिय?'', मायक एहि प्रश्नक उत्तर मे हम स्वीकृतिसूचक माथ डोलबैत...नहि जानि किएक माय सँ आँखि मिलयबा सँ बँचैत चापाकल दिस बढ़ि गेल रही...।

चाह पीबैत रही तँ माय कहने रहय, ''जाह! कने घूमि-फिरि आबह। मोन बहटि जेतह...।'' विदा तँ भ' गेल रही मुदा, कोम्हर जाइ से निर्णय बाधित छल। रेल लाइन दिस? नहि! खिरोइ दिस? नहि-नहि!! तखन टीसन? हँ चली...। टीसन पर चाहक दोकान पर लोक सभक चर्चक विषय वैह छल जाहि सँ हम बाँच' चाहैत छलहुँ...। हम ओत' सँ उठि अरुणक पानक दोकान लग जा ठाढ़ भ' गेलहुँ। हम नित्त जतेक भाँग खाइत रही ताहि सँ प्राय: तिगुना हमरा खाइत देखि अरुणक आँखि विस्मय सँ फाटि गेल रहै...। हम ओकरा दिस ध्याने नहि देलहुँ आ विदा भ' गेलहुँ बाध दिस। बौआइत रहलहुँ...बौआइत रहलहुँ... कहुना सम्पूर्ण प्रसंग कें बिसरि जयबाक प्रयास करैत रहलहुँ...।

प्राय: साढ़े आठ बजे राति मे घर घुरलहुँ तँ मायक खोंचारैत प्रश्न सँ बचबाक एक्के टा उपाय छल जे चुपचाप दू-चारि टा सोहारी खाक' अपन ओछाओन ध' लौ...। आइ फेर निन्न निपत्ता छल...। क्रमश: जेना-जेना राति बीति रहल छलै तेना-तेना निसबद्ध भेल जा रहल छलै...। दूर दछिनबारी टोल दिस सँ कुकुर सभक झौहटि सुनाइ पड़ि रहल छलै... मुदा एम्हर एकदम निस्तब्धता...। कुकुर सभ निपत्ता...जलमुर्गी मुँह सीने...कतहु कोनो चूलचाल नहि...। पशुपति एक्सप्रेस धड़धड़ायल पास क' गेल...फेर पुन: सन्नाटा...। अचानक लागल जेना हमर कोठलीक अगुअइत मे किछु खड़खड़ायल होअय...। कथी भ' सकैए? हैतै कथू। के आँखि खोलओ?...फेर लागल जेना खिड़की दिस किछु भरिआयल सन। आँखि खुजि गेल...। नजरि खिड़की दिस उठल...। खिड़की पर कनिञा काकी छलीह...। कनिञा काकी नहि, कनिञा काकीक मुंड...। धड़ निपत्ता...। खाली मुंड...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...भीजल केस माथ मे सटल...चँछायल रक्तहीन धोल-पखारल निष्प्रभ चेहरा...सोझे हमरा दिस तकैत आँखि...। उँह! भ्रम थिक। भाँगक वैह लच्छन ठीक नहि। एकभगाह क' दैत अछि। झुट्ठे। कहाँ क्यो अछि? अनठिया क' सुतबाक प्रयास कयलहुँ तँ अनुभव भेल जे हृदयक गति तेज भ' गेल अछि...धक् ...धक्!...धक्! हम डरबुक नहि छी। कहाँ कैओ अछि...? हमर आँखि फक् सँ खुजल...खिड़की पर अँटकल मुँड हमरा ओहिना निहारि रहल छल...। एक बेर, दू बेर, कैक बेर यैह क्रम चलल...। पसेना-पसेना भ' गेलहुँ...। तरासे कंठ सुखा रहल छल...। चौकीक नीचाँ लोटा मे जल राखल छल...मुदा हिलबाक साहस...? आँखि मूनि चिचिअयबाक प्रयास कयलहुँ, ''माय...माय...!''

''बौआ...बौआ! की भेलह? डर होइत छह की?'', माय केबाड़ फोलि देलक। ई केबाड़ फोलि देलाक बाद मायक कोठली सँ हमर कोठली जुड़ि जाइत अछि। ओ हमर चौकी पर आबि बैसलि। माथ पर हाथ देलक। आँचर सँ हमर माथ पोछैत जल पिऔलक।

''की भेलह?''

''माय, खिड़की पर कनिञा काकी छलीह!''

''दुर् बताह! ओ बेचारी कथी लेल अओतीह? ई तोहर अपने मोनक डर छलह...। पहिने कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस नहि जाह। तों अपना कें जतेक नहि चिन्हैत छह ताहि सँ बेसी हम तोरा जनैत छिअह। ओ किऐ अओतीह बेचारी? एहि ठाम हुनक की छनि? जँ रहितनि तँ एना जयबे कैरतीह?''

पता नहि किएक हम ओहि क्षण बिसरि गेल रही जे आब प्राय: चौबीस बर्खक भ' चुकल छी...। मायक कोर मे मूड़ी गाड़ि ठोहि पाड़ि क' कनैत रहलहुँ...।

''चलह बौआ! आब सुतबाक प्रयास करह। बहुत राति भ' गेलै। अच्छा, कने घुसकह, हमहूँ एतहि पड़ि रहैत छी।''

हमरा माय सँ अपन कोठली मे जाक' सूति रहबाक आग्रह करबाक साहस नहि भेल। हम गुबदी मारि लेलहुँ...। हमरा सूतल जानि नहू...नहू माय फोंफ काटय लागलि...। आ एम्हर हम सोचैत रही...माय कहैत अछि जे ओ हमरा हमरो सँ बेसी जनैत अछि। की सबहक माय अपन संतान कें एहिना जनैत हेथिन? की कनिञा काकी अपन बेटा सभ कें एहिना जनैत रहथि...?

निरर्थक योजक-चिह्न...

ओहि दिन व्यास ककाक त्रयोदशा रहनि। प्राय: दस-एगारह बाजि रहल हेतै। कनिञा काकी अपन कोठली मे पड़ल-पड़ल आब सदाक लेल अनुपस्थित भ' चुकल पतिक विगत स्मृति कें सहेजबा मे लागल रहथि कि आँगन मे हल्ला भेलै...। दुनू पुतोहु आपस मे लड़ि रहल छलथिन। पहिने ओ लोकनि एक दोसरा कें हीन प्रमाणित कयलनि...। फेर एक दोसराक नैहर कें गहिंत घोषित कयलनि...। संतोष नहि भेलनि तँ एक-दोसराक भाय-बाप कें चिबा जयबाक धमकी देलनि...। तथापि किछु कसरि रहि जयबाक संदेह भेलनि तँ एक-दोसराक अंग-विशेष कें खच्चारि कें आँचार भरि देबाक दावा ठोकय लगलनि...।

ऐन एही अवसर पर सरबन बाबू आ राघव ललाक प्रवेश एहि लंका कांड मे भेलनि। ओहो दुनू गोटे परस्पर वाचिक आक्रमणक क्रम मे ई बिसरैत चलि गेलाह जे एक-दोसराक सहोदर छथि...। तामसक आधिक्य मे समक्ष ठाढ़ शत्रु कें अगम्यागमनक आरोपी घोषित करैत एक टा हिंसक संतुष्टि सँ तृप्त होइत गेलाह...। कलह बढ़ैत गेलै... बढ़ैत गेलै। नौबति मारि-पीटि धरि पहुँचि गेलै...। ई तँ रच्छ रहलै जे हल्ला सुनि किछु लोक आँगन मे जुटि गेलाह आ दुनू भाँइ कें अलग कयल गेलनि। तथापि दुनू देयादिनी अपन नेनपन सँ ल'क' आइ धरि सिखलाहा गारि सभक बरखा करिते रहलीह...।

झगड़ा तँ कहुना शांत भेल, मुदा लोक सभ कारण जानि क' चकित छलाह। एतेक साधारण बात लेल एतेक झगड़ा? त्रयोदशा होयबाक कारणेँ आइ राति घर मे माछ वा माउस बनब स्वाभाविके छली। मुदा माछ आनल जाय वा माउस, से निर्णय नहि भ' पाबि रहल छली। सरबन बाबूक सार कें माछ बेसी नीक लगैत छलनि तँ राघव ललाक ससुर कें माउस। मामिला एतहि ओझरा गेलै आ बतकुच्चनि होइत-होइत एत' धरि पहुँचि गेल रहै...। आब तँ दुनू भाँइ अड़ि गेलाह जे चूल्हि साझी रहि नहि सकैए...। आइए आ एखनहि बाँट-चूट भ' जाय।

एहन कलह कोनो नव बात नहि छली। पहिनहुँ कतोक बेर दुनू भाँइ टकरा चुकल छलाह। दुनू कें एक-दोसराक नेत पर शंका छलनि। दुनू कें होनि जे दोसर महाबेइमान अछि। एम्हर हम घर लेल खटैत-खटैत मरि रहल छी आ ओम्हर ओ चोरा-चोरा क' पाइ जमा करैत अछि। एहि शंकाक आगि कें लहकयबाक काज दुनू देयादिनी समय-समय पर बड्ड योग्यतापूर्वक करैत आबि रहल छलथिन...। मुदा आइ, आइ तँ हद भ' गेलै। कदाचित दुनू पक्ष एहि दिनक प्रतीक्षा मे छल। कनिआ काकी अपन परिवार मे होइत एहि धिनाउन विस्फोट कें टुकुर-टुकुर देखैत रहलीह आ सोचैत रहलीह जे की हमर खून मे एतेक स्वार्थ भरल छल...।

ओहि दिन तँ बूढ़-पुरान सभ जेना-तेना बुझा-सुझा क' दुनू पक्ष कें शांत कयलनि, परंच भानस एक ठाम नहि भेले। दुनू घर मे लोक सभ अपन-अपन इच्छानुसार भोजन बनौलनि। एम्हर रहि गेलीह माय। तँ ओहि दिन दुनू भाँइ जेना मातृ-भक्तिक आदर्श प्रस्तुत करय लेल तत्पर रहथि। पुतोहु सभ तँ आओर आगाँ-पाछाँ, "मा! ई एक बेर कहथुन तँ जे की खाय के मोन होइत छनि? ई निश्चिन्त रहथु मा! एकदम अमनिआ रहतनि। कनिकी संदेह नञि करथु। ई जे कहथिन से बना देबनि। सेबैयक खीर बना दियनु? आकि मखानक? रसगुल्ला मँगा दियनु...?" तात्पर्य ई जे एक टा सद्यः विधवा जे-जे वस्तु खा सकैत अछि वा जे-जे उपलब्ध भ' सकैत छली, सबहक नाम गना देल गेली...। मुदा कनिआ काकीक एक्के रट, "नहि बौआ! नहि कनिआ! हमरा भूख नहि अछि।" ओ तँ वैह नहि बूझि पाबि रहल छलीह जे जाहि आँगन मे आइ एते अठठाबज्जर खसल होइक ओत' ककरो कंठ मे किछु कोना धँसि सकैत छै?

दोसर दिन भोरे अधिकांश पाहुन विदा भ' गेल रहथिन। टोलक दू-चारि टा लोक आ एक-दू टा पाहुन कें ल' दुनू भाँइ दलान पर श्राद्धक खर्चक हिसाब-किताब करय लेल बैसलाह। मामिला फेर ओझराय लगलै। ओझराइत-ओझराइत पहिने गारिक अध्याय चललै...फेर लाठी चलबाक नौबति आबि गेलै...। आब एहन स्थिति देखि लोको सभ बाँट-चूट कइए देब उचित बुझलनि। ओहि दिन तँ नहि, मुदा दोसर दिन पंच सभ जुटलाह आ भीन-भिनाउजक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। प्रायः सभ चल-अचल संपत्तिक बखरा लागि गेलाक उपरान्त एक टा एहन वस्तु बाँचि गेलै जकरा बाँटब असंभव छली...। ओ वस्तु चक्कू, टेंगाड़ी, कुड़हरि वा आरी माने कोनो प्रकारक हथियार सँ काटिक' वा तराजू सँ जोखि कें बाँटल नहि जा सकैत छली। आखिर ओहि वस्तु कें बाँटल जाय तँ कोना बाँटल जाय? दोसर, दुनू भाँइ मे सँ कोनो ओहि वस्तु कें बाँटय नहि चाहैत छलाह। दुनूक इच्छा रहनि जे दोसर गोटे अपन दावा छोड़ि देअय आ ई पूराक पूरा हमरे भेटि जाय...। ओ वस्तु छलीह कनिआ काकी!

पंच लोकनि चकित छलाह! वाह रे मातृभक्ति!! आइ कालि्ह एहन मातृभक्त कत' देखाइ पड़ैत अछि? पुतोहुक तँ बाते छोड़ि देल जाय। पुत्रो सभ मे एहन मातृभक्ति दुर्लभ भ' गेल अछि। बड्ड भागमंत छथि एहन माय। ठीके, व्यास जी बड्ड सोचि कें नाम रखने हेताह अपन दुनू पुत्रक। नामक प्रभाव किछु ने किछु तँ पड़िते छै ने...वाह!

अंततः पंचलोकनि दुनू भाँइ कें एक दोसराक मातृभक्ति कें सम्मान देबाक उपदेश दैत एहि बात पर राजी क' लेलनि जे ओ सभ 'पार' लगा लेथि। एक-एक सप्ताहक पार। माने ई जे कनिआ काकी बेरा-बेरी सप्ताह भरिक लेल दुनू परिवार रहल करतीह आ बेटा-पुतोहु कें सेवाक अवसर दैत रहतीह। की? कनिआ काकी? कोनो आपत्ति तँ नहि? ओ की बजितथि? किछु बाजय लेल एक टा निष्कर्ष पर पहुँचब जरूरी छलनि। हुनक माथ पर चकरघिन्नी भेल छलनि...। ओ बूझि नहि पाबि रहल छलीह जे विगत दस-बारह बर्खक कालखंड मे बेटा-पुतोहुक व्यक्तित्वक जाहि अनपेक्षित पक्ष सँ ओ नहु-नहु परिचित भेलीह अछि ताहि सँ आजुक पक्षक सामंजस्य कोना बैसाबथि? ओ टुकुर-टुकुर तकैत रहलीह...। दुनू ठोर सटल रहलनि...। हुनक चुप्पी कें स्वीकृति बूझल गेल...।

'पार' ओही दिन सँ प्रारंभ भेलै। पहिल पार भेटलनि जेठ पुत्र सरबन बाबू कें, हुनके इच्छाक आदार करैत। ई घोषणा करैत पंचलोकनि पंचैती समेटबाक लेल उद्यत होइते रहथि कि आँगन दिस हल्ला उठलैं...। हल्लाक केन्द्र पर नजरि पड़िते सभ स्तब्ध रहि गेलाह...। माँझ आँगन मे दुनू देयादिनी परस्पर भिड़ल छलीह...। असल मे भेलै ई जे पारक घोषणा होइतहि जेठजनी दुरुखाक केबाड़क पाछाँ सँ चूड़ी खनका क' सरबन बाबू कें इशारा कयलथिन। ओ लग गेलाह तँ देखलनि जे पत्नीक हाथ मे मायवला पुरना टिनही बाकस छनि। हुनके दिया कनिआ काकी कें अपन घर चलबाक समाद अगुतायल-हड़बड़ायल स्वर मे देलथिन जेठ जनी। समाद सुनियो क' कनिआ काकी 'की-करी, की-नहि' क सोच मे पड़ल रहलीह...। संपूर्ण घटनाक्रम हुनका लेल भीषण बेदनादायी छलनि...। एहि विखंडन कें रोकबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छलनि। आब विखंडन कें रोकबाक कोन कथा? ओ तँ भ' चुकल रहै। संपूर्ण वीभत्सताक संग! ओ स्वयं की करथि? कि एतबहि मे आँगन मे अनघोल मचल...।

प्रतिद्वन्द्वी देयादिनी जकाँ छोट जनीक सेहो नजरि प्रत्येक घटनाक्रम पर आ कान प्रत्येक स्वर पर रहनि। जेठजनी दुरुखाक केबाड़ लग सन्नद्ध छलीह छोट जनी दलानक कोठलीक खिड़की लग तत्पर! पारक घोषणा होइतहि छोटजनी जेठजनी कें लपकि क' सासुक कोठली मे जाइत...सासुवला टिनही बाकस ल'क' धड़फड़ाइत दुरुखाक केबाड़ लग अबैत...चूड़ी खनकबैत...आ पति कें किछु फुसफुसा क' कहैत देखलनि। निमिष मात्र मे ओ सभ बात बुझि गेलीह..."गै दाइ! ई बात छैक? फुर्ती ने देखियौ! इह! लगैए हम छोड़ि देबै। आँखि आगाँ अपन आशा-अभिलाषाक अपहरण देखि जे चुप रहि जाय से एक बापक बेटी नहि।' ओ झपट्टा मारिक' बाकस कें ध' लेलनि। छीना-झपटी मे दुनू देयादिनी असंतुलित भ' दुआरि पर सँ आँगन मे खसलीह। चोट भरपूर लगलनि...। पंच सभक नजरि जखन पड़ल रहनि तखन दुनू गोटे बाकसक कड़ी कें पकड़ने अपना-अपना दिस घीचि लेबाक प्रयास क' रहल छलीह...। संगहि वाक्-युद्ध चालू छल...निरंतर। एक-दोसराक बेटा, घरवला, भाय, बाप सभ कें सोझे गीड़ि जयबाक

धमकी देल जा रहल छल...।

अवाक् कनिञा काकी दुनू पुतोहु आ हुनका सभक मध्य योजक चिह्न जकाँ वर्तमान संदर्भ बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह...।

पंच सभ दुनू देयादिनी कें डाँटिक' फराक कयलनि आ बाकस कें सबहक मध्य मे आनल गेल। कोन रहस्य छै एहि बाकस मे? किऐ दुनू देयादिनी एहि बाकस कें हथियाब' लेल एतेक आफन तोड़ने छथि? ई बाकस तँ कनिञा काकीक दुरगमनिञा बाकस छनि जे हुनक बाबूजी बड़ सख सँ देने रहथिन। तहिया जेहन रहल हो, मुदा आब तँ भ' गेल अछि पुरान... बिझायल...प्रायः जर्जर सन...। ताहि लेल एतेक तमाशा।

असल मे, दुनू बेटा-पुतोहुक मोन मे एक टा अद्भुत आशा बहुत दिन सँ सुगबुगा रहल छलनि...। ई सभ जनैत अछि जे ओ सभ दिन मितव्ययी रहलीह अछि...। कहियो हाथ खोलिक' खर्च नहि कयलनि। तखन तँ ओ अवश्य किछु-ने-किछु जमा करैत हेतीह। हुनका पास अवश्य कोसलिया हेतनि। एहन गुम्मी छथि जे बेटा-पुतोहु कें हवा लागय देतीह...। जरूर बेटी लेल जोगाक' रखने हेतीह...। ओहो जे गुंजा अछि ने से माय जकाँ गहीर अछि...। मुदा ताहि सँ की? छोड़बनि थोड़े। आ गहना? भला गहना छोड़ल जाय?

राघव लला आ हुनक पत्नी कें आशा छलनि जे जेँकि राघव छोट बेटा छथि तेँ मायक कोसलिया आ गहना पर हुनके सभक अधिकार छनि। ओम्हर सरबन बाबू दुनू व्यक्तिक सोचब छलनि जे एक तँ ओ जेठ छथि, दोसर आइयो माय सरबने बाबू कें 'बौआ' कहैत छथिन तँ स्वाभाविके हुनक अधिकार बेसी मजगूत छनि। मुदा, दुनू पक्ष मे सँ कोनो एहि मादे प्रकटतः चर्च नहि क' रहल छल। दुनू पक्षक कान पर एहि आशंकाक उल्लू बैसल छलै जे जँ बात खुजि गेल तँ दोसर पक्ष अपन हिस्सा ने माँगि लेअय! चतुर कुटनीतिक जकाँ प्रयास कयल जा रहल छल जे अपार मातृभक्तिक प्रदर्शनक बलेँ माय कें अपना संग राखि लेल जाय...। एक बेर माय अपन पक्ष मे, अपन हिस्सा मे आबि गेलीह तँ बाकसो अपनहि आबि जायत...। एहि लेल दुनू पक्ष सार्काक्ष, सतर्क आ सन्नद्ध छल...। जखन खिड़की लग ठाढ़ि छोटजनी देखलनि,जे दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि जेठजनी की क' रहल छथि तँ ओ जेना सेन्हे पर चोर कें पकड़ि लेबाक अंदाज मे झपट्टा मारलनि आ पतिक कान फूकि पहिल पार अपन माथे सहर्ष स्वीकार करबाक चलल चालि खाली जाइत देखि जेठजनी पर खिसिया क' रहि गेल रहथि...।

पंच लोकनि कनिञा काकी सँ कुँजी ल' बाकस कें फोललनि। ताहि खन कनिञा काकीक चेहरा मारकीन जकाँ मलिन-मटियौन भ' गेल छलनि...नीरक्त...निर्भाव...निष्प्रभ! आँखिक चारूकात असंख्य बादुर उड़ैत...कनपट्टी पर गिरगिट चलैत...। बाकस मे सँ बहर भेलै...दू-तीन टा पुरान साड़ी...सेनुरक एक टा गहै जे कदाचित साड़ी मे सन्हिआयल रहि गेल रहै...। व्यास ककाक एक टा पुरान मैलछौंह फोटो, खादीक एक टा पुरान दुरुत्ती चद्दरि...आ एक जोड़ा पुरना खराम जे मृत्यु सँ पूर्व व्यास कका पहिरैत रहथि...बस्स! दुनू देवादिनी कें विश्वास नहि भेलनि। दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि ओ लोकनि पहिने नहु स्वर मे फेर जोर सँ निर्देश देलथिन जे बाकस कें उनटि-पुनटि क' देखल जाय। मीलायल आस नेने दुनू भाँइ सेहो एहि बात पर जोर देलनि। पंच मे सँ एक गोटे ईहो क' के देखा देलथिन। किछु नहि खसलै! सभ टा वस्तु ओही मे राखि क' ताला लगा बाकस कनिञा काकी लग राखि देल गेलनि। कुँजी सेहो हुनके द' देल गेलनि। एक टा पंच आग्रह करैत कहलथिन, ''जाउ सरबन बाबू, आब माय कें ल' जइयनु।'' हताश सरबन बाबू मरल मोन सँ बाकस उठा माय कें ल' क' आँगन गेलाह।

''ई जंजाल किऐ उठा क' ल' अनलहुँ। फेँकि दितियै डबरा मे वा द' दितियै ओकरे सभ कें जकरा सभक करेज फटैत छलै एहि लेल।'' आँगन मे ठाढ़ि पत्नी हुनका डाँटय लगलथिन। ओ कनेक थकमका गेलाह। ओम्हर छोट जनी कें ई बात खबखबा कें लगलनि। ई राँड़ी की बुझैत अछि? ओ खौंराक बेटी अछि तँ हमहू जलबारक बेटी छी। घुमा-फिराक' कूट करत तँ हम नञि बूझबै? आ हम छोड़ि देबै की?

''हमर सभक करेज किऐ फाटत? फटतै ओकर सभक जकरा अपन बेटाक सराध लेल ढेउआक कमी होइ आ जे निर्लज्ज जकाँ बाकस चोराक' भागय।''

एहि जोरगर आक्रमण सँ जेठजनी छिलमिला गेलीह। ओ आँचर उठाक' सूर्य दिस तकैत बजलीह, ''हे दिनकर दिनानाथ! जनिह' तोंही...। जरल उगै छह...जरल डुबै छह...। धोंछी सभ हमर बेटा कें नजरि पर चढ़ौने रहैए...। तोंही निसाफ करिह'। हे नाथ! गुँहखौंकी सभ कें मुँह मे खदखद पिलुआ फरबिह' हे दिनानाथ!''

आब तँ छोटजनी कें सनसना कें लगलनि। एहन घिनौन आक्रमण! नञि। आब अप्रत्यक्ष आक्रमण सँ काज नहि चलत। प्रत्यक्ष आक्रमण बेसी चोटगर, ''हमरा किऐ पिलुआ फरत? फरतौ तोरा सभ कें। तोहर बेटा कें...तोहर चाँद सन घरबला कें...भाय कें...बाप कें...आ सेहो नेअरिया पिलुआ...।''

एवंप्रकारेँ प्रत्यक्ष आक्रमणक क्रम चलैत रहल...चलैत रहल...।

अपूर्ण आशाक साइड इफेक्ट...

आ ओही दिन सँ शुरू भ' गेलनि कनिञा काकीक जीवनक एक टा नवीन क्रम...। कड़ाचूर मेहनतिक क्रम...। ओना तँ ओ अपनहि बैस क' खायवाली कहियो नहि रहलीह, मुदा आबक काल किछु आने छलै...। जाहि बेटाक पार मे ओ रहथि, घरक कोन काज नहि करथि? चाउर बिछब, चिक्कस चालब, घर-आँगन बहारब, बच्चा सभ कें सम्हारब...माने ई जे कोनो-ने-कोनो काज मे लागले रहैत छलीह...। तैयो जँ केओ कमी निकालि-निकालि क' फज्झति कर' पर तुलल रहय तँ की कयल जाय? दुनू पुतोहु अपन-अपन पार मे हुनका पर क्षुब्ध रहैत छलथिन। हुनका सभ कें शंका नहि विश्वास छलनि जे ओ महाबेइमान छथि...नमक हराम छथि। जेठजनीक पार मे छोटजनीक दुआरि पर बैसि जायब वा हुनक बच्चा कें दुलारब तथा छोटजनीक पार मे जेठजनी सँ बतिआयब वा हुनक कोनो सौदा दोकान सँ आनि देब कनिञा काकीक बेइमानी मे गनल जाइत छलनि...। रहरहाँ घुमा-फिराक' व्यंग्य तँ कयले जाइत छलनि जे ओ अपन सभ टा कोसलिया बेटी कें द' देलनि...। एहन अवसर पर बेटी आ नातिक लेल होइत गारि-सरापक बरखा हुनक आत्मा कें हेहरु क' दैत छलनि...। उनटि क' उत्तर देब वा आपत्ति करब हुनक स्वभाव कहियो नञि रहलनि। मोनहि मोन कूही होइत ओ एतबे सोचथि जे ओइ बेचारीक कोन दोख? ओ तँ अपनहि दैवक डाँग सँ थकुचायलि अछि। एकमात्र बारह बर्खक बेटा कें कहुना क' पोसैत ओ कतेक कष्ट सँ जीवन बिता रहल अछि, से कोनो नुकायल छै? केकरा नञि बूझल छै? तैयो एतेक गारि-सराप।

जखन कखनो गुंजाक मादे सोचैत छलीह कनिञा काकी तँ लगैत छलनि जेना केओ करेज कें पकड़ि क' निचोड़ि दैत होनि...। कतेक दुलारू रहय बापक! पतिक आगाँ बेटी कें डाँटय के कहियो हिम्मति नहि भेलनि हुनका। से आइ...। कखनो क' अपन बेटो पर गर्व सेहो होइत छलनि। लगैत छलनि जे बेटी हुनको सँ बेसी साहसी छनि। अपना नवारी मे लाख कष्ट रहल होनि...कम-सँ-कम सिनेही पतिक छाँह तँ उपलब्ध रहनि...आ गुंजा कें?

ककर भाग मे की लिखल रहैत छै, से के जनैए? जहिया व्यास कका बेटीक लेल वर देखि क' आयल रहथि तहिया कनिञा काकी कें बड़ संतोष भेल रहनि जे बेटी मात्र पौने कोस दूर

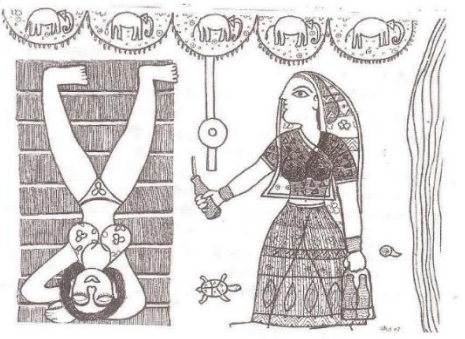

रहत। एहि गाम सँ पूब थोड़ेक दूरी पर खिरोइ आ तकर बाद ढढ़िया...। ढढ़ियाक पंडित उमाधर झा कैं के नहि चिन्हैत छनि? परोपट्टा मे नामी...प्रसिद्ध वैदिक! तिनक पोता। गोर नार चकैठ सन धूआ। बी.ए. पास। की हेतै जे एखन कोनो नोकरी नहि भेलनि अछि? तत्काल उत्साहपूर्वक खेतिए मे लागल। संगहि गामक सार्वजनिक काज सभ मे आगाँ-आगाँ रहनिहार दुस्साहसी युवक। के जनैत रहय जे यैह दुस्साहस काल भ' जैतै।

सतासीक चढ़ल बाढ़ि मे लगनमा पुल लग खिरोइक उफनैत धार मे हेलबाक दुस्साहस ढढ़ियाक तीन टा नवयुवक कैं गाँड़ि गेल रहै...। ओही मे ओहो रहथि। सात दिनुका बाद जखन पानि उतरल रहै तँ कोस भरि दूर ततैला लग बबूरक झोंझ मे ओझरायल लहास भेटल रहै...फूलल-फूलल...किछु-किछु सड़ल सन। कहुना क' संस्कार कयल गेल रहै। एहीक संग गुंजाक सभ टा स'ख-मनोरथ जेना बाढ़िक संग बहि गेल रहै...। आब तँ कहुना क' बेटाक लेल जीबाक छलै...। से बस संघर्ष करैत जीबि रहल अछि...।

गुंजा कैं बड़ु प्रेम आ भरोस छलै अपन भाय सभ पर। भाय सबहक विरुद्ध ओ किछु सुन' लेल तैयार नहि रहल कहियो। नेनपनो मे झगड़ा भेला पर यदि कोनो संगी ओकरा भायक गारि पढ़ि दैक तँ ओ किटकिटा क' संगीक मुँह नोंचि लेअय। आर जे गारि देबाक हो से दे, मुदा यदि हमर भाय सभ कैं किछु कहबैं तँ छोड़बौ नञि, से बूझि ले। भायक प्रति ई प्रेम बिआहक बादो बनल रहलै। तैं ने ओ सभ साल दुर्गापूजा मे जे नैहर आबय तँ भरदुतिया मे भाय सभ कैं बड़ु सिनेह सँ नोतैत छलि...आ टोलक छोट-पैच बेटी-धी सभ कैं प्रेरित करैत भरपूर ओरिआओन सँ सामा-चकेबा खेलैत छलि। कतेक विश्वास छलकै छलै ओकर आत्मा सँ जखन ओ बेस उहंकार सँ गबैत छलि—

गाम के अधिकारी अहाँ सरबन भैया यौ
अहाँ राघव भैया यौ
भैया गोठ चढ़ि पोखरि खुना दिय'
चम्पा फूल लगा दिय' यौ...।

मुदा, कहाँ सुनि सकलथिन भाइ सभ बहिनक करुण हाक कैं। बहिनोइक श्राद्ध मे जे दुनू भाँइ नोत पूरि क' अयलाह, से जेना तकर बाद ढढ़ियाक बाटे बिसरि गेलाह...। राजनीतिक काज सँ बौआइत सरबन बाबूक लिस्ट मे ढढ़ियाक नामे नहि छलनि आ राघव लला, तँ सहजहि एक टा अलगे दुनिया मे मस्त रहैत छलाह। अभावग्रस्त गुंजा एक बेर पूसी पूर्णिमाक अवसर पर गौतम कुंडक मेला मे माय सँ भेट क' कय कहने रहनि जे भैया सभ कैं कनी मदति करय लेल कहिअहुन...। मुदा भैया सभ तँ सुनिते मातर अपन-अपन रोदना ततेक ने पसारि बैसलथिन जे मायक मुँहक बात मुँहे मे रहि गेल रहनि...।

तैयो गुंजा साहस नञि छोड़ने अछि...। की भेलै जे नैहर आयब छोड़ि देने अछि? बापोक श्राद्ध मे नहि आयलि...। खूब जनैत छथि ओ अपन बेटी कैं। अपन दुर्दशा माय कैं देखाब' नहि चाहैत अछि...। जो गै बेटी! हम अपन अभागक अतिरिक्त तोरा किछु नहि द' सकलियौ...। यदि हमरा पास किछु रहैत तँ तोरा एना बेलल्ला नहि होब' दितियौ...।

आ एम्हर बेटा पुतोहु कैं होइत छनि जे बेइमान बुढ़िया सभ किछु बेटी कैं द' देलक...। सभ किछु? कथी-कथी? स्वार्थक आवेग मे हुनका लोकनि कैं एतबो स्मरण नहि रहैत छनि जे हमरा पास रहबे की करय? गहनाक नाम पर मायक देल एक जोड़ी माकड़ी। ओहि मे सँ एक टा कैं तोड़बा क' बड़कीक बेटा कैं हनुमानी बनवा देलथिन तँ दोसर पर नजरि गड़ि गेल रहनि छोटकीक। ओहि सँ ओ बाली बनवा लेलनि। रहल टका! तँ यदि से रहैत तखन यैह दुर्दशा रहैत हमर आ हमर बेटीक...?

सोचैत-सोचैत कनिञा काकी अपन विगतजीवनक छानबीन करय लगैत छलीह...। कत' गलती भ' गेलनि? कत' चूकि गेलीह? जे किछु जहिया आमदनी होइत छलनि तकर पाइ-पाइ ओ परिवार कैं बनाब' मे खर्च करैत रहलीह...। सख-सधोरि कैं कोठीक कन्हा पर रखने छलीह...। तीर्थ यात्रा ककरा कहैत छै ओ कहियो नहि जानि सकलीह। बड़ु भेलनि तँ गौतम कुंड, अहिल्या स्थान वा बेसी-सँ-बेसी गंडेसर...पयरे...दर्शन-पूजा क' बिनु कैंचा खर्च कयने आपस...। सदा एक्के टा लक्ष्य! धिया-पुता सम्हरि जाय...मनुक्ख बनि जाय...आर की? कत' कसरि रहि गेलनि प्रयास मे? सत्य कही तँ ओ यदि कमी कयबो कयलनि तँ बेटिए संग...। ओहन चंसगर बेटी! कतेक इच्छा रहै ओकरा पढ़बाक। मुदा कोना जाय दितथिन कमतील...। पाँच किलोमीटर दूर...केओ संगी नहि, बेटी जाति... ओह! यदि ओ पढ़ि-लिखि गेल रहितनि तँ आइ...। दुनू बेटाक बिआह बड़ु स'ख सँ कयने रहथि। कहाँ जनैत रहथि जे बिआहक लेल प्रस्थान करैत बेटा सभ कैं परिछनक उपरान्त परम्परानुसार जे छाती सँ लगौतीह से जेना माय सँ बेटाक विमुखताक प्रस्थान-पर्व सिद्ध हेतनि...। अपना जनतबे पुतोहु सभ कैं कोनो कम सिनेह देलथिन? दुनू पुतोहु कैं हुलास सँ नव-नव नाम देने रहथिन—हीरा सुन्नरि आ फूल सुन्नरि। जेना आन-आन सासु लोकनि करैत जाइत छथि तेना ओ कहियो पुतोहु सभ कैं कसिक' नहि रखलथिन। टोलेक देयादिनी छलथिन 'अरेरवाली बहिन'। ओ कहबो करथिन, ''कनिञा एना ढील देबै तँ पछतायब। कहबी छै, हल्लुक सवार घोड़ा फउद मारैए।'' परंच एहन अवसर पर कनिञा काकी खाली हँसि क' रहि जाथि। कहियो भारी सवार होयबाक प्रयत्न नहि कयलनि। किछु-ने-किछु हेर-फेर क' कोसलिया जमा करबाक लुतुक रहैत छनि स्त्रीगण मे। कोनो-कोनो चतुरी सँ चुपचाप लहनो लगबैत छथि। मुदा ओ कहियो एहि दिशा मे सोचबो नहि कयलनि...। ककरा सँ चोर 'बितथि? आ आइ हुनका पर आरोप मढ़ल

जाइत छनि...। आरोप नहि जेना कलंकक टीका...। अपन हाड़-हाड़ निकलल देह कैं निहारैत हुनका लगैत छलनि जे कदाच टूटि क' रहि गेल अपन निराधार आशा-अपेक्षा कैं देखि ओ लोकनि एतेक खिसिया क' रहि गेल छथि जे...। कदाच एही कारणें जिनक पार मे ओ रहैत छथिन तिनक तामस हरदम लहरल रहैत छनि..। कदाच तें ओहि सप्ताह भरि ओइ घर मे भात बहुत कम बनैत छै...। आ जतबा बनैत छै से कनिञा काकीक लेल नहि रहैत छनि...। हुनका लेल मकइ वा बड्ड भेल तैं गहुमक जनहा रोटी आ तरकारीक नाम पर किच्छो वा नोन-तेल। हुनका माछ-माउस वा पियाजु-लहसुन सँ दिक्कति होइत छनि। होइत छनि तैं होइत रहनु...। ओहि सप्ताह मे उपेति क' तीन-चारि दिन बनबे करतै...।

भीन भिनाउजक बादे सँ दुनू भाँइ दनादन प्रगति क' रहल छलाह...। गामक लोक कें देखि क' ठकमूढ़ी लागि जानि। दुइए साल मे दुनू भाँइ दड़िभंगा मे लक्ष्मीसागर मोहल्ला मे छपकी पर डेढ़-डेढ़ कट्ठा जमीन ल' नेने छलाह आ एतय गाम पर तीन-तीन कोठली पक्का घर सेहो बना नेने रहथि। बस दलानवला भाग टा पुराने छलै...। माटिक भीतवला एक टा पैघ कोठली। एहि कोठली सँ आँगन दिस जाउ तँ एत' सँ ओत' धरि दुआरि जकर एक दिस एक टा एकचारी कोठली। एहि मे कनिञा काकी रहैत छलीह। दलानवला पैघ कोठली मे एक दिस चारि-पाँच टा माटिक कोठी सभ जे आब प्रायः खालिए रहैत छलै...कहियो तोड़ि क' फेंका जयबाक प्रतीक्षा मे। एहि कोठली मे केओ बाढ़नि-सोढ़नि नहि दैत छलै...। साझी चीज साँग पर...। कहियो क' मोन होनि तँ कनिञे काकी बहारि-सोहारि दैत छलथिन—पारवालीक उलहन सुनियो क'। कोठली सँ बाहर आउ तँ दलानक बरंडा पर एक टा पुरना चौकी राखल...। गर्दा सँ भरल। दलानक काजे कोन? सरबन बाबू कें गाम-गाम राजनीति करय सँ पलखति नहि आ राघव ललाक दलान छलनि गामक टीसन वा ब्रह्मस्थान वा पंचायत भवन जतय संगी सभक जुटान होइत छलनि...। के देखैए दलान कें? दुनू कें अपन-अपन परिवारक बेसी चिन्ता छलनि...। कहुना प्रगति करी...। से दुनूक प्रगति देखि कनिञो काकी चकित छलीह। जे लोकनि बापक श्राद्ध मे एक बीघा खेत बेच लेलनि...। से एही बीच मे एतेक पाइ कत' सँ आनि लेलनि? एहन अवसर पर ओ अपन कान छूबि बाबा वैद्यनाथ सँ माफी माँगि लेथि...। क्षमा करब हे बाबा! हमर नजरि नहि लगौक। काकीक बेटा तँ बेटा, पुतोहु सभ तँ आर होशियार छलथिन। मुट्ठी बान्हि क' खर्च करैत जाइत छलथिन। खास क' सासुक लेल तँ हुनकर सभक मुट्ठी किछु आर कसि जाइत छलनि...। ओ सभ किछु देखैत रहैत छलीह...बुझैत रहैत छलीह आ सहैत रहैत छलीह...।

गामक स्त्रीगण सभ प्रायः एहि बात लेल नित्यग्रस्त रहैत छथि जे ओ चारि-चारि टा हरिवासर कयने छथि। मुदा, एहि दू वर्ख मे कनिञा काकी कतेक हरिवासर क' चुकल छलीह, से के जानय...। अपना कें साधिक' राखि देने रहथि ओ...। एम्हर हम कहियो हुनका मुख पर तृप्तिक लेशो नहि देखि सकल छलहुँ। सदिखन जेना गिल्ल छाउर अउँसल...। ईह! की सुन्नर अउँडेया केस रहनि हुनक। से आब धड़धड़ा क' पकैत-ओझराइत बगड़ाक खोंता भ' गेल छलनि...।

इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ...

''हँ-हँ! चल' दियौ...चल' दियौ...।'' चारिम बेर दही परसल जा रहल अछि...। दहीक बारिकक संगे चीनी, डालना, आ बुनियाँक बारिक सेहो गतिशील-सक्रिय छथि...। बेसी लोकक पेट भरि चुकल छनि। तैयो रसना मानि नहि रहल छनि...। छीलल माथ...चानन लेपल कपार...पीयर धोती, पीयर जनेउ आ भागलपुरी दोपटा सँ शोभित सरबन बाबू आ राघव लला हाथ जोड़ि-जोड़ि क' आग्रह क' रहल छथिन, ''हड़बड़ाइ नहि जाइ जाउ। सभ कें इच्छा भरि भोजन करय दियनु। कोनो वस्तुक कमी नहि...।''

जिनक पेट भरि चुकल छनि से मोने मोन अपन एहि मूर्खता पर पछता-खिसिया रहल छथि जे पहिने चूड़े बेसी ल' लेलाह। एतबे नहि, पहिले वा दोसरे बेर मे दही अहगर क' ल' लेलाह। ईहो नहि ध्यान देलनि जे गर्मीक पुरान दही खटगर होइत छै आ भोज मे तँ पहिने पुराने दही परसल जाइत छै। आब असली खायवला दही परसल जा रहल अछि...। मुदा, खाथु कोना? पेट मे जगह कहाँ छनि? आ बुनियाँ कोना खयताह? अपना कें संसारक सभ सँ बड़का उलूकनन्दन बुझैत ओ लोकनि मुँह लटकौने किछु बेसी अग्रचेती सभ कें देखि जरि रहल छथि जे कोना ओ सभ पहिने तँ हाथ बारने रहलाह आ आब हाथ-मुँह चारिम गेयर मे चला रहल छथि..।

हम सहटि क' कनिञा काकीक आँगन दिस बढ़ि जाइत छी। एत' अलगे अनधोल मचल अछि...। बाहर पुरुष वर्गक पहिल खेपक भोज आब लगिचायल छै। योजनानुसार स्त्रीगणक बिझो भ' गेल अछि। आब यावत पुरुष वर्ग भोजन क' कय उठत, अँइठ-कूठ उठाओल जायत, खरहरा देल जायत तावत स्त्रीगण कें पारस देल जेतनि। पूरा आँगन भरल अछि...टोल भरिक बेटी-धी आ बूढ़-पुरान स्त्री सभ सँ...। सबहक हाथ मे थारी आ बट्टा। ककरो-ककरो हाथ मे बट्टाक बदला लोटा। पारस पहरल जा रहल छै। सभ कें पहिने ल' लेबाक हड़बड़ी लागल छै। दुनू देयादिनी अतिव्यस्त छथि।

''केओ छूटथि नहि। सभ कें भरि इच्छा दियनु। हे दाइ सभ, पहिने पारस ल'क' अपन-अपन आँगन ध' अबै जाउ। आ हे, आँगने मे नहि रहि जायब। जल्दी सँ घुरि क' अबै जाउ आ भरि इच्छा भोजन करै जाउ। अहाँ सभ कुमारि-बारि छी...भगवती स्वरूपा छी। अहाँ सभ जे भरि पोख खा लेब आ भगवती कें कहबनि तँ मा कें अवस्स पइट हेतनि...।'' जेठजनी अपन बोल कें आर मधुर बनबैत आग्रह करैत छथिन।

''हँ-हँ किऐ नहि! जीबैत रह तँ गूह भात आ मुइला पर दूध भात। इह! नाटक ने देखू!! एहने पइट भगवान आहूँ सभ कें देथि!!!'' चउदह बर्खक मुँहफट बुचियाक टिप्पणी कें सुनैत मातर ओकर बड़की बहिन कामिनी घबड़ा जाइत अछि। ओ बुचियाक मुँह पर तरहत्थी रखैत डँटैत अछि, ''बुचिया तोरा बाज' के ठेकान नहि छौ। तोहर ठोर पर बड़ी बड्ड पाक' लागल छौक। हरदम लुबलुब करैत रहैत छें'। बेसी उचितवक्ताक सारि नञि बन।'' ई कहि कामिनी एक ठुनका बुचियाक गाल पर दैत अछि।

ई जेना बड्ड अनसोहाँत लगैत छै गितिया कें। बुचिया ओकर संगी छै। दुनू मे 'फूल' लागल छै। आब कामिनी कें किछु कोना कहौक गितिया, मुदा ओकर अप्पन जीह कें के रोकि लेतै, ''अर्थै यै जलबार वाली भौजी! गुंजा दीदी कें नहि देखै छियनि। एहू बेर नहिए बजौलियनि? जाय दियौ। आबि क' की करितथि? माय कें तँ चिबाइए गेलियनि अहाँ सभ...।'' गितियाक एहि कथन पर आस-पासक सभ चौंकि पड़ैत अछि। केओ बजैत तँ नहि अछि किछु, मुदा सभ कें तामस बड्ड होइत छै। ई दुनू धोंछी सभ लाहेब करत। जँ जलबारवाली वा खौंराबाली सुनत तँ पता नञि की हैत? भोज खाइते रहि जयतीह छिछिआह्रो सभ! मुदा, लगैए, दुनू देयादिनी कदाच बुचिया वा गितियाक टिप्पणी नहि सुनि पौलनि अछि। यदि सुनबो कयने हेतीह तँ संभवतः अनठिया देलनि अछि...।

हम दलान पर आबि जाइत छी। बस्स। किछु काल आर। पहिल खेपक भोज सम्पन्न भ' जैतै। आ फेर पान-सुपारी लेल घमासान मचत...। हम सहटैत-सहटैत अपन दलान पर आबि जाइत छी। आँगनक गेट बन्न अछि। माय सरबन बाबूक आँगन गेल अछि। हम दलानक

आगाँ भालसरीक छाँह मे कुर्सी ध' बैसि जाइत छी...। अकास साफ अछि...। कृदि-फानि क' मेघ सभ दखिन-भर चलि गेल अछि। भ' सकैए पच्छिम मे बरसल होअय। एहि गाम धरि अयबाक साहस नहि क' सकल। संभवत: इन्द्र कैं अपन पराजय मोन पड़ि गेल हेतनि...।

अन्हरियाक पंचमीक उदास चान रेलवेक ओइ पार आमक गाछीक उपर उगि आयल अछि। नहू-नहू रेलवे आ तकर ओइ पार बल्ला मे ठाढ़ इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ देखाइ पड़ि रहल अछि...। नहि जानि कतोक भूत-प्रेतक बास छै ओहि गाछ पर...। ई कोनो हम नहि कहि रहल छी। कतेक लोक देखि चुकल छथि। कोनो-कोनो महिसवार कैं तँ पसर चरबैत काल घेरियो नेने रहै आ नकिआयल स्वर मे तमाकुल मँगने रहैं...। सुनै छियै, ओहि इमली गाछ पर जतेक भूत-प्रेत अछि से प्राय: वैह अछि जे कोनो-ने-कोनो कारणेँ रेल सँ कटल अछि...। जहिया ई रेल लाइन बनल हेतै तहिया के सोचने हैत जे कतेक लोकक लेल अंतिम प्रस्थानक कतेक सहज-सुलभ-सस्त-साधन उपलब्ध कयल जा रहल छै...। मुदा नहि! कहाँ प्रस्थान क' पबैत अछि केओ? कहाँदन सभ कैं ओही इमली पर वास लेब' पड़ैत छै...। की कनिआ काकी सेहो ओही पर...? मुदा, एहि ग्यारह-बारह दिन मे कहाँ कतहु नजरि आयल अछि हुनक धूआ? खाली ओहि राति...।

एक मुट्ठी भात...

ओहि राति हमरा लग सूतलि माय फोंफ कटैत रहय। बेटा कैं वात्सल्यक सुरक्षा दैत...। की हम सुरक्षित भ' गेल रही? खिड़की पर सँ कनिआ काकीक मुंड जरूर निपत्ता भ' गेल रहनि...परंच मोन मे सन्आियल हुनक आँखि ओ बेधक दृष्टि...। की कहय चाहैत रहय ओ दृष्टि...? की अर्थ रहै ओकर...? ओना किऐ देखने रहथि कनिआ काकी हमरा ओइ दिन?

ओइ दिन कनिआ कार्कीक नाति आयल रहनि—नानी कैं देखय। माय सँ जिद् क' कय। कतबो मजगूत हृदयक होथि गुंजा परंच मायक लेल दरेग तँ छलनिहेँ ने। की करितथि? नहि रोकि सकलथिन बेटा कैं। कहने रहथिन जे नहि मानबैं तँ जो मुदा साँझ धरि घुरि अबिहैं।

तहिया काकी छोटजनीक पार मे छलीह। भोरे-भोर आबि जुमल ओहि बारह बरखक पाहुन कैं देखिते छोटजनीक पारा चढ़ि गेलनि। फल भोग' पड़लनि धिया-पुता कैं। अनेरे माय सँ मारि खाइत ओ सभ हकबका गेल जे ओकर सभक अपराध की छै? तामसे छोटजनी बहुत कम मात्रा मे भात बनौलनि। एतबहि जे हुनक अपनहुँ नेना सभ लेल अपर्याप्त रहनि...। ओ ओहि बारह बर्खक पाहुनक आगाँ मकइक रोटी आ रामतरोइक तरकारी परसि देलथिन आ नहाय लेल बाड़ी मे चलि गेलीह...। एम्हर ओ बच्चा कहुना क' दू कौर खयलक आ नानीक मुँह ताकय लागल...। काकीक करेज मे हूक उठलनि...। हुनक आत्मा कलपि उठलनि...। हुनका लगलनि जेना अन्तस मे जमल कोनो वस्तु पिघलि रहल होनि आ गरा बकौर लागि रहल होनि...। ओ अपना क' कहुना क' सम्हारलनि आ एक टा निर्णय लेलनि...। लाज तेयागि क' जेठजनीक दुआरि दिस बढ़लीह...कनेक थकमकयलीह...आ चढ़ि गेलीह दुआरि पर...।

''हीरा सुन्रि, एक मुट्ठी भात देब?'' ई सुनिते हीरा सुन्रि किटकिटा उठलीह।

''केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?''

''कनिआ, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध कैं...?'' पहिल बेर कनिआ काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

''अरे, वाह रे अबोध! ककरो बापक किछु धारने छियै की? केओ खराँत राखि गेल अछि की? एतबे दरेग छनि तँ निकालथुन ने कोसलिया आ खुअबथुन रसगुल्ला...।''

देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्य:स्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भीजल केस नग्न पीठ पर लहराइत... साया कैं छाती पर वामा हाथेँ सम्हारने...। स्थिति कैं अँटकौरत-अँटकौरत हुनक कान मे जेठजनीक संवादक अंतिम अंश नीक जकाँ पड़लनि,

''...बनैत जायत सभ धन्ना सेठ...आ...एक टा पाहनु कैं दू मुट्ठी भात खुअबैत हींग चूब' लगैत छै!''

छोटजनी कैं लेसि देलकनि। तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलनि...। ओ खरमासक आगि जकाँ लहकि उठलीह...। ओ जल्दी-जल्दी सायाक डोरी कैं छाती पर कसलनि आ कनिआ काकी संग व्यास ककाक सात पुश्तक उद्धार करैत लपकलनि। हुनक झाँटा पकड़ि क' घिचलनि। कनिआ काकी तलमला क' खसि पड़लीह...। आब ओ दुनू हाथेँ कसि क' झोंटा कैं ध' लेलथिन आ घिसिअबैत-घिसिअबैत अपन दुआरि लग आनि पटकि देलथिन...।

''आइ आब' दे मुन्ना के पप्पा कैं तँ भात खुअबैत छियौ...। तोरो आ तोहर नाति कैं सेहो...। गै राँड़ी...बुढ़ौरी! तोँ गेलय की करय मुदइ के दुआरि पर? हमरा बदनाम करय लेल? आइ तोहर भथियान ने चहका देलियौ तँ हमहू भोला मिसरक एक बूँदक नहि...।''

एवं प्रकारेँ सासुक इलाज कय ओ अपन घर मे कपड़ा पहिरय चलि गेलीह आ ओत्तहि सँ गरियबैत रहलीह...।

चटुआ पर भोजन लेल बैसल नाति नानीक दुर्दशा देखि पहिने तँ हकबकायल...फेर किछु नहि फुरयलै तँ कानय लागल...। आ कनिआ काकी! ओ ने किछु बाजि रहल छलीह आ ने कानि रहल छलीह। बस चितांग पड़ल शून्य दृष्टिएँ अकास दिस तकैत रहलीह...। नातिक कानब सुनि चेत भेलनि...। जेना-तेना उठलीह आ नाति कैं पौँजिया क' कानय लगलीह...।

ओही दिन बेरू पहर नाति अपन गाम चलि गेलनि। संयोग सँ हम खरदाहाक खेत देखि

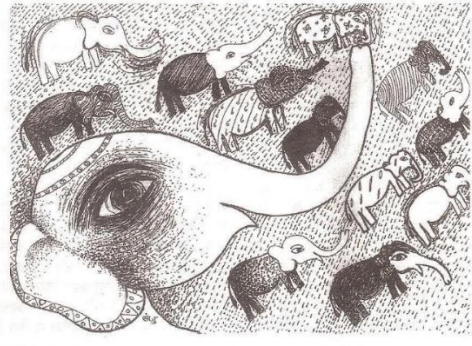

आपस होइत रही तँ देखलियै जे रेलवेक ओइ पार जे गाछी सभक बाद डिस्ट्रिक्ट बोर्डवला साबिकक सड़क छै ततहि कनिञा काकी नाति कें विदा क' रहल छथि... । विदा करबाक ढंग कनेक विचित्रे सन... । भरि पाँज क' नाति कें पकड़ने ओकर मुँह, आँखि, कान, कपार सभ कें धड़ाधड़ चूमि रहल छलीह । नानीक पाँज मे फँसल नाति कसमसा रहल छल, मुदा ओ ओकरा जेना मुक्त कर' लेल तैयार नहि रहथिन... । कननमुँह भेल नाति कें गसियाक' पकड़ने विह्वल भेलि कनिञा काकी अचक्के हमरा समक्ष मे ठाढ़ देखि ठमकि गेल रहथि... । नाति मुक्त भ' पैघ-पैघ साँस लेब' लगलनि... । तखन कनिञा काकीक आँखि विचित्र छलनि। नजरि झुकि गेल रहय हमर... । नाति विदा भ' गेलनि। हमरा लागल जे ओ आब गाम घुरतीह। पुछलियनि तँ ओ हमरा बढ़ि जयबाक संकेत कयलनि आ अपने जाइत नाति कें पाछाँ सँ देखैत रहलीह...देखैत रहलीह... । की ओ वस्तुतः नातिए कें देखि रहल छलीह वा आर किछु...? हम पच्छिम दिस अपन गाम जा रहल छलहुँ... । कतेक बेर घुरिक' तकलहुँ तँ देखल जे ओ ओहिना ठाढ़ पूब दिस देखि रहल छथि...लगातार... ।

ओहि दिन जखन ओ गाम पर घुरि क' अयलीह तँ अपन दुःख की कहितथि बेटा सँ? ओ तँ पहिनहि सँ तैयार भेल बैसल रहनि स्वागतक हेतु। एक टा हाथ छोड़ब रहि गेलै नहि तँ कोन दुर्दशा बाकी रखलकनि राघव लला! बेटाक मुँहें ओहन घिनौन-घिनौन गारि सुनिक' काकी कें लागि रहल छलनि जे हाड़ टा रहि जायत नहि तँ देहक माउस गलि गलि क' खसि पड़त... । इच्छा भेलनि जे जँ एहि काल धरती फाटि जाइत तँ ओहि मे समा जइतहुँ... । मुदा से संभव कहाँ छलनि...?

सरबन बाबू एहि सभ सँ निरपेक्ष। हुनक प्रत्येक भंगिमा जेना यैह कहि रहल छलनि, ''हमरा नहि कह किछु। हमर पार मे तो एखन नहि छें। ओकरे कही जकर पार मे छही... ।''

अगत्या ओहि दिन कनिञा काकी साँझ सँ ल'क' राति धरि टोल-पड़ोस आ गामक कोन अल्लौं बाबू आ फल्लौं बाबूक ओत' नहि गेलीह...किनकर-किनकर खुशामद नहि कयलनि...''हमर निसाफ करै जाउ...!'' मुदा, कोनो गोटे दोसराक घरेलू मामिला मे बजबाक जरूरति नहि बुझलनि... । दिन भरि दोसराक घरेलू बात कें कौचर्यक स्थायी विषय बना क' मजा लेनिहार स्त्री-पुरुष प्रत्यक्षतः हिनक मामिला मे हस्तक्षेप करब अनुचित बुझलनि... । असल मे सरबन बाबूक ब्रह्मपेंच आ राघव ललाक लंठइ सँ सबहक पिल्ही चमकि रहल छलनि... । के उपकार क' कय फँसत ग'। जाय दियौ। फेर तँ माय-बेटा, सासु-पुतोहु एक्के हैत... । बुड़बक बनब हम सभ। छोड़ह-छोड़ह। हमरा सभ कें कुकुर कटने अछि की? जानय जौ जानय जौंत। हमरा सभ कें अपने कोन कम समस्या अछि? आ जत' दू टा बासन रहैत छै ओतहि ने ढनमन होइत छै... । तखन घरक बात ल'क' दरबज्जे-दरबज्जे अँगने-अँगने बौआयब... । ई कोन नीक बात भेलै? नञि अपने चैन सँ रहतीह आ ने हमरा सभ कें रह' देतीह गुंजाक माय। लगैए ईहो सनकल जाइत छथि... ।

भोर जे कहियो नञि भेलै...

सनकि तँ गेले रहथि ओ। तखन ने ओहन विचित्र रूप धारण क' नेने रहथि... । ओहि राति ओ घुरिक' आँगन नहि गेलीह। दलानवला कोठली मे कोठी सभक दोग मे जाक' पड़ि रहलीह... । एक दिन...दू दिन...तीन दिन... । हम एहि बीच मे दड़िभंगा गेल रहौं। तेसर दिन जखन चारिबजिया ट्रेन सँ गाम अयलहुँ तँ ज्ञात भेल जे तीन दिन सँ ओ ओही अवस्था मे बिनु खयने-पीने ओही ठाम कखनो बैसल, तँ कखनो पड़ल रहैत छथि... । ने तँ किछु बजैत छथि आ ने ककरो बातक उत्तर दैत छथिन। निकासो लेल बाहर जाइत केओ नहि देखलकनि अछि। भ' सकैए रातिक' एकांत मे जाइत होथि। सभ समझा-बुझा क' हारि गेल अछि...हुनका पर कोनो असरि नहि... ।

हम जखन पहुँचल रही तखन तुरंत सूर्य अस्त भेल छलाह। दलानक कोठली अपेक्षाकृत फड़ल रहलाक बादो किछु भरिआयल सन आ अन्हार सन लागि रहल छली। कदाचु कोठी सभक कारणें... । आँखि गड़ाक' देख' पड़ल रहय हमरा... । हम मृदुल स्वर मे टोकलियनि, ''कनिञा काकी!'' दू-तीन बेर टोकलाक बादो ओ उठिक' देबालक सहारा ल' बैसलीह... आ नजरि उठाक' तकलनि... । चाड़क घसकल खपड़ा सँ बनल छिद्र सभ द'क' तुरंते डूबल सूर्यक ललौन प्रकाश कोठली मे जत'-तत' आबि रहल छली... । प्रकाशक एहने एक टा टुकड़ा कनिञा काकीक बगल मे देबाल पर पड़ि रहल छली... । ओहि मद्धिम होइत ललौन प्रकाश मे नोनी लागल देबाल आ कोठी सभक जर्जर स्थिति पर नजरि गेल... संगहि नजरि गेल कनिञा काकीक चेहरा पर... । जनम-जनम के उदासी जेना हुनक आँखि मे जमि क' रहि गेल रहै... । नहुए कँपित ठोर जेना किछु कहय चाहैत होअय, मुदा कहि नहि पाबि रहल होअय... । हम आग्रह कयने रहियनि जे अनशन तोड़थि। जे भेलै से भेलै। ओ तँ माय छथिन। बिसरि जाथु सभ किछु। हमरा विश्वास रहय जे ओ हमर बात मानि जयतीह... । मुदा, ओ टस-सँ-मस नहि भेलीह। हारिक' हम पुनः भोर मे अयबाक बात कहि चलय लगलहुँ... । अचानक देखल जे हुनक ठोरक कँपन बन्न भ' गेल रहनि आ आँखि एक टा विचित्र प्रकारक चमक सँ चमकय लागल रहनि... ।

रोगाह इजोरिया सँ झँपाइत गाम...!

''एह! थइ-थइ भ' गेलैक... । महो-महो भ' गेलैक... । कनिञा काकीक दुनू बेटा कमाल क' देलनि... । कतेक नीक जकाँ अपन कर्तव्य निमाहि देलनि... ।'' भोज खयनिहार लोकनिक अघायल टिप्पणी चलि रहल अछि... । खुशीक आवेग मे किछु गोटे अँड़ेठे मुँहे नारा लगाब' लगलाह अछि... ।

''कनिञा काकीक?''
''जय!''
''सरबन बाबूक?''
''जय!''
''राघव बाबूक?''
''जय!''
''धर्म केर?''
''जय हो!''
''अधर्म केर?''
''नाश हो!''
''प्राणी सभ मे?''
''सद्भावना हो!''
''विश्व केर?''
''कल्याण हो!''...

पहिल खेपक भोज समाप्त भ' गेल अछि। चन्द्रमा नहु-नहु अकास मे चढ़ि रहल छथि...मुदा इजोरिया साफ नहि अछि... । धूसर मटिआह रंगक...जेना रोगाह होअय...जांडिस सँ पीड़ित... । एहि रोगाह इजोरिया सँ आच्छादित गाम क्रमशः शांत भ' रहल अछि... ।

ओम्हर सरबन बाबूक दलान पर पहिल खेपक ब्राह्मण-लोकनि पान-सुपारी ल'क' जा चुकल छथि... । खरहरा देल जा रहल अछि... । आ दोसर खेप मे बैसबाक लेल प्रतीक्षारत बुभुक्षु ब्राह्मण लोकनि तत्पर छथि... ।

आ एत' हम एहि कुर्सी पर जेना जमि क' रहि गेल छी...की करी? जाइ कि नञि जाइ?

संपर्क : द्वारा-डॉ. पी. के. झा
पी:जी.टी. (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय,
कटिहार, बिहार-854105
मो. 9430038969

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास

मुन्नी कामत

समकालीन चित्रकार संजू दास

कोनो कला सिखबाक लेल गुरु सँ बेसी लगन आऽ सतत् अभ्यास आवश्यक अछि।ई कहब अछि मिथिलाक धिया श्रीमति संजू दासक। हिनकर यैह हुबा हिनका सबल सफल बनौलक। १५ जनवरी १९७२ में जनमल ग्राम कमरौलीक (दरभंगा) श्री प्रभु नारायण आऽ श्रीमती देवकी दासक पुत्री गामक माटि सँ खेला आय राजधानीमे बैस सातो रंगक चितेरी बैन गेली। मिथिला संस्कारमे पोषित संजू दासक सफलताक पहिल अंश हुनकर मिथिलानी हेनाय अछि। मिथिलाक धिया जन्म संगे लुरी, व्यवहार, गुण विरासत मऽ लऽ अबैय य'।मुज -सिक्की कला,कुरुसिया,सब पाबैन -त्योहार मऽ घर -आंगन मऽ बनाओल अरिपन ,घरक देबाल पर आंकल विभिन्न कलाकृतिक दर्शन मिथिला में सहज अछि। संजू दास अहिसब कलामे निपूर्ण छलीह पर कहियो

ई नै सोचने रहि जे अहि आधार पर ओऽ देशक नामी -गामी चित्रकार संगे अपनो स्थान सुनिश्चित करथिन।

गामक परिवेश मऽ पलल संजू दासक जीवन तखन दोसर मोर लेलक जखन हुनकर विवाह सन् १९९५में हाटी भोआर ग्रामक श्री रवीन्द्र दास सँ भेल।जे पटना आर्ट कॉलेज के प्रशिक्षित आधुनिक चित्रकार छल।यैह हिनकर गुरु आऽ सफलताक मूल कारण अछि।
जखन हाथ पकैर बाट देखबैय लेल हमसफर संग होय तँ फेर मंजिल कहाँ दूर रहैत अछि ओकरा हासिल करैयक जुनून और बैढ़ जाइत अछि। संजू दास जी जखन महानगर में बसली तँ घुमैयक नाम पर पति संगे चित्रकला प्रदर्शनी मेँ बेसी जैत छलीह।कलाक बिया तँ हुनका भीतर अंकुरैल पहिने सँ छल बस ओहि अंकुरैल बिया केँ माटि आऽ प्रकाशक आवश्यकता छल जे पति श्री रवीन्द्र दास सँ प्राप्त भेल।आय पतियक संरक्षण मऽ वैह बिया प्रस्फुटित भऽ पौधक निर्माण केलक जकर उंचाई हमरा सबकें गौरवांवित करैत अछि।

संजू दास द्वारा बनाउल नीला आऽ हरियर पृष्ठभूमि पर हर उम्रक आकृति मऽ प्रयोग कैल चटकिला रंगक कलाकृति अहाँ के अपना दिस खिचत। किछ देर लेल मात्र नै ,ठहरबाक बादों मनन लेल मजबूर करत। मिथिला कलाके आधुनिक कला सँ जोड़ि एगो अलग तरहक सृजन मात्र हिनके चित्रकला मऽ भेटैत अछि। हिनकर यैह शैली हिनका सबसँ विशेष बनबैत अछि। मैथिला शैलीक आत्मा अछि चटक रंग,बारिक रेखा,अलंकारिक झार-बूटि , आऽ प्रकृतिक चित्रण अहि शैलीकें आधुनिकताक आभूषण पहिरा संजू जी अपन कैनवास पर उतारैत रहलि।

हिनकर कला मात्र प्राकृतिक आऽ मानवीय सुंदरता तक सिमित नै अछि।

चित्रकलाक अर्थ मात्र देबालक खुबसूरती नै बल्की ह्रदयक मनोभावके दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाक विभिन्न रूपक माध्यम सँ प्रकट कैर ओकरा रंग द्वारा सुन्दर आऽ सजीव बनेनाइ कला अछि। हिनकर कला किछ एहने सन अछि।जहि मऽ स्त्रीक श्रम, स्त्रीक स्वप्न, स्त्रीक संघर्ष, स्त्रीक मनक उड़ान, स्त्रीक शोषण आदि एगो स्त्री सँ बेसी सजीवता ओयमे और के आनि सकत। हिनकर मनन दृष्टि बहुत गंभीर अछि जे हिनकर कलाकृति मऽ हम महसूस कऽ सकैत छी।

आदरणीय संजू दास २०बरख सँ लगातार पारिवारिक जिम्मेदारीयक निर्वाह करैत समाज मऽ प्रतिष्ठा प्राप्त कलैथ। हिनकर कला आब ग्राम आऽ राज्ये टा मऽ नै देश आऽ विदेशो मऽ शोभनीय अछि। अखन धैर ६टा एकल प्रदर्शनी हिनकर भेल अछि भारत कला संस्थानक संग्राहलय मऽ हिनकर कला संग्रहित छैन।

विभिन्न संस्था द्वारा सम्मानित श्रीमति संजू दास अखन बस उठि ठार भेलखिन आगा चैल हुनका अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर अपन गाम,राज्य आऽ देशक नाम स्थापित करैयक अछि। बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ महिला कलाकार सँ सम्मानित अहि कलाधर्मी कैं स्वस्थ तन आऽ शसक्त मनक उड़ान लेल हमर ढ़ेरों शुभकामना।

हिनका प्राप्त सम्मानक विवरण:-

2017-18 कुमुद शर्मा पुरस्कार (बिहार सरकार वरिष्ठ कलाकार पुरस्कार)

एकल

1999 ग्रैंडलेज़ बैंक गैलरी (चाणक्यपुरी दिल्ली)

1999 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली

2000 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली

2002 नंद लाल बसु कला दीर्घा, पटना

2012 कॉन्वेनसन लॉबी हैबिटेट सेंटर

2013 कन्वेंशन लॉबी हैबिटेट सेंटर

चयनित समूह प्रदर्शनियां

2022 नारी नारायणी तृतीया वसंत राव परियोजना

2022 गैलरी पायनियर द्वारा बिहार का विहंगम दृश्य

2021 राजेश चंद द्वारा क्यूरेट कैलऑनलाइन ड्राइंग प्रदर्शनी

2021 AIFACS अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी

2000 पेस समूह प्रदर्शनी

2018 महिला चित्रकारक सामूहिक प्रदर्शनी एनजीएमए

मैथिली भोजपुरी अकादमी द्वारा 2010 रंगपूर्वी समूह प्रदर्शनी

2003 अनशेकल्ड स्पिरिट

2001 उनकी कहानी (फ्रीडम आर्ट गैलरी द्वारा समूह प्रदर्शनी संगठन)

2001 एएन इवनिंग विथ फिगर्स ओआरजी बाय आर्ट जंक्शन

भागीदारी

उमा शंकर पाठक द्वारा संवर्धित 2021 समूह प्रदर्शनी एनआईवी आर्ट गैलरी

2018 डाइसिटी के हस्ताक्षर

2003 यूपीएलकेए द्वारा इंटर स्टेट एक्सचेंज प्रदर्शनी ओआरजी

2001 उत्तर प्रदेश राज्य प्रदर्शनी

2001 उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी द्वारा पश्चिमी क्षेत्र प्रदर्शनी संगठन

2001 लघु कला प्रदर्शनी गढ़ी

1997 ललित कला अकादमी द्वारा कला मेला संगठन

1997 AIFACS अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी

एआरटी शिविर

2022 यूपी ललित कला अकादमी और एमएसएम ट्रस्ट द्वारा अखिल भारतीय शिविर पटनातो पी जम्मू ओआरजी

2022 अर्थशिला कला संवाद बिहार कला शिविर प्रिवार्थन द्वारा आयोजित
रवींद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा 2021 अखिल भारतीय शिविर संगठन
1998 ऑल इंडिया कैंप ओआरजी बाय पेस ग्रुप नोएडा
2007 ऑल इंडिया आर्ट कैंप देहरादून ओआरजी बाई रीच
2009 साहित्य कला परिषद दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय शिविर संगठन
कार्य संग्रह: एनजीएमए दिल्ली, आईटीडीसी दिल्ली, परिवर्तन बिहार और भारत और विदेश में कई निजी गैलरी
स्लाइड शो संगोष्ठी और प्रस्तुति
भारत की लोक कला यूपी ललित कला द्वारा आयोजित
आईजीएनसीए दिल्ली में मैथिली साहित्य उत्सव
2002 पटना (पुनाश पटना द्वारा ओआरजी)
2018 मिथिला पेंटिंग पर लखनऊ ललित कला अकादमी।

प्रकाशन
कवर पेज (आउटलुक अंग्रेजी और हिंदी, हंस, वर्त्तमान साहित्य और गृहशोभा) आदि
सामकालीन कला (हिंदी), दैनिक जागरण, सखी पत्रिका, जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, पटना हिंदुस्तान में लेख

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास

मुकेश दत्त

अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास

मिथिला प्रदेशक दरभंगा जिलाक कमरौली गाम मे जनमल, आधुनिक शैलीमे अपन कलाकृतिक लेल चर्चित, पहिल लोक कलाकार संजू दास भारतक चर्चित चित्रकार छथि। एहि कलाकारक कलाकृतिक समीक्षा आइ देशक चर्चित पत्र-पत्रिकामे छपैत रहल अछि। हिनक एखन धरि छह गोट एकल प्रदर्शनी आयोजित भऽ चुकल अछि अओर हिनक कलाकृति देशक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घामे सेहो संग्रहित अछि। बिहार सरकारक प्रकाशित 'बिहार की समकालीन कला' आ 'सौ साल मे बिहार की कला-कला और कलाकार' दूनू पुस्तकमे हिनका नव पीढ़ीक प्रतिभावान कलाकारक रूपमे उल्लेख कएल गेल छैन्ह। बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला

कलाकारक सम्मान 'कुमुद शर्मा पुरस्कार' सँ सम्मानित संजूजीक प्रदर्शनी एखन बिहार सरकारक पटना स्थित बिहार म्यूजियममे लागल छैन्ह। समकालीन कलामे हर कलाकारक अपन खास शैली होइत अछि, मिथिला पेंटिंगक दुनियासँ आधुनिक कलाक दुनियामे कदम राखयवाली पहिल कलाकार संजूजीक पेंटिंगकेँ क्यो आसानी सँ चिन्ह आ वर्गीकृत कऽ सकैत छथि।

हिनक चित्रमे ग्राम्य जीवनक व्यथा आ नारी जातिक आंतरिक करूण गाथाक झलक भेटैत अछि। संजूजी वएह चित्र बनएवा मे रूचि राखैत छथि जकर सीधा सम्बन्ध मानवीय मूल्य आ वास्तविकतासँ होए, प्राकृतिक विषय पर चित्र बनाएब हिनका सेहो खूब पसिन्न छैन्ह। एकटा ग्राम्य जीवनसँ अपन शुरूआत आ स्वप्रशिक्षित चित्रकार भेलाक वावजूदो हिनक कलाकृति मे नारीवादी कलाकार जेना धार सेहो देखबा मे आबैत अछि। ऑल इंडिया फाइन आर्ट एंड क्राफ्ट्स सोसाइटी, ललित कला अकादमी आदि कतेको प्राइवेट गैलरी सबमे हिनक कलाकृति प्रदर्शित भऽ चुकल छैन्ह। हिनक चित्रकेँ एकटा नवीन तरहक शैली कहल जा सकैत अछि जाहिमे मॉडर्न आर्ट आ पारम्परिक मिथिला शैली दूनूक नीक प्रयोग देखबामे आबैत अछि। उखरि-मूसर, सोन चिरईया, दौनी-ओसौनी, नदी-नाला, खेत-खरिहान, धन-रोपनी, झूमर-टिकुली, चौपाल-पंचायत सभ किछु एकटा कैनवस पर उपस्थित कऽ दैत छथिन संजूजी। हिनक सौम्यता आ कलाक प्रति समर्पण हिनक प्रसिद्धिक मुख्य कारण बुझना जाइत अछि।

माए देवकी देवीसँ लेल प्रेरणा हिनक ऊर्जा थिकैन्ह जे स्वयं एकटा गृहस्थ महिला छलीह मुदा कला-कौशलमे निपुण। हुनके सँ ई सुजनी कला, अरिपन देनाय आ मिथिला पेंटिंग बनेनाय सिखलीह। हिनक पिता श्री प्रभु नारायण दास ब्लॉक मे ग्रामसेवक छलाह। जतय धरि हिनक शिक्षा-दीक्षाक गप्प अछि तऽ अपन गामेक स्कूलमे पढ़ी आ गामेमे रहि प्राइवेट सँ ग्रैजुएसन केलैन्ह। विवाह हाबीभौआर निवासी आधुनिक चित्रकार रवीन्द्र दाससँ भेलैन्ह। दूइ

पुत्रीक माए संजूजी गृहस्थाश्रम सम्हारैत अपन कलाक प्रति सदिखन समर्पित रहैत छथि।

बाल्येकालसँ मिथिला पेंटिंग बनबैत आबि रहलीह संजूजीक रंग लगेबाक तरीका आ संयोजनमे सेहो आब परिवर्तन देखबामे आबैत अछि। आब हिनक आकृतिमे रेखाक नहि बल्कि रंगक प्रमुखता होइत छैन्ह। पहिने ई लोककला शैलीमे काज करैत छलीह मुदा विवाहक बाद लोक-कलासँ प्रभावित आधुनिककला शैलीमे काज करय लगलीह। ई बदलाव दिल्ली एलाक किछु दिन बाद राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घामे महिला कलाकारक प्रदर्शनी देखलाक बाद अयलैन्ह। ओहि प्रदर्शनीमे कतेको आधुनिक कलाकार सभहक काजमे लोककलाक प्रभाव छल, तऽ ई सोचय लगलीह जे हमहुँ तऽ एकटा लोककलाकार छीहे हमरा तऽ मात्र आधुनिककलाक किछु बारीकी टा सीखबाक जरूरत अछि। ओकर बादे सँ हिनक आधुनिककलाक यात्रा शुरू होइत छैन्ह। हिनक सभ कलाकृतिमे विषय स्त्रीक जीवन आ हुनक आकांक्षा होइत छैन्ह जे मात्र आकृतिमूलक कले मे संभव भऽ सकैत अछि। ग्रामीण जीवन तऽ रंग-बिरंगा होइते छैक, शायद तैँ हिनका चटख रंगसँ किछु बेसी स्नेह छैन्ह।

आइ एकटा स्वप्रशिक्षित कलाकारक रूपमे अपन कला यात्रासँ बेहद खुश भऽ कहैत छथिन, "जाहि कला महाविद्यालयमे हमर नामांकन नहि भेल आइ ओतुका छात्र-छात्रा आ शिक्षक लोकनि सेहो हमरा एकटा कलाकारक रूपमे सम्मान दैत छथि, हमरा लेल एहिसँ बढ़ि कऽ आर खुशी की होयत।" देशक लगभग सभ महानगरमे हिनक काज प्रदर्शित भऽ चुकल अछि आ कतेको कला शिविरमे हिनका आमंत्रित कएल जा चुकल छैन्ह। हिनक पहिले प्रदर्शनीसँ काम बिकय लागल छलैन्ह, दोसर प्रदर्शनीक बाद हिनकर कलाकृति आधुनिक कला दीर्घामे संग्रहित भेलैन्ह। प्रिंट आ इलेक्ट्रानिक मीडियामे हिनका आ हिनक कलाकेँ खूब जगह भेटैत छैन्ह। हिनका नजरिमे

कला जीवनक प्रतिबिम्ब अछि, तैँ हिनक किछु कलाकृतिमे साहित्यक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। किएक तऽ हिनका कविता आ नाटक सेहो खुब पसंद छैन्ह। हिनक शुरूआती कलाकृति सब बेसी ग्रामीण जीवनशैली पर आधारित होइत छल, मुदा आइ-काल्हि ई नारी मनक आकांक्षा पर काज कऽ रहल छथि। अणुशक्ति सिंह, अनामिका आ केदार नाथ सिंह केर कविता हिनका खुब पसंद छैन्ह।

कला हिनका लेल आम दिनचर्या छल किएक तऽ मिथिलाक हर स्त्री कलाकार होइ छथिन, मुदा ई कहियो ई नहि सोचने रहथि जे आगाँ चलि ओ स्वयं एकटा कलाकार बनतीह। चूँकि हिनकर पति सेहो एकटा प्रसिद्ध कलाकार छथिन तऽ हिनको मनमे भेलैन्ह जे हिनको कलाक विधिवत शिक्षा लेबाक चाही मुदा से संभव नहि भऽ सकलैन्ह। हिनका जनतबे दुनिया भरिक कोनो आर्ट कॉलेज कलाकृति बनेनाय नहि सिखाबैत छैक। एकटा कलाकार बनबाक लेल तकनिकी शिक्षाक अलावे निजी चिंतन आ सामाजिक-राजनीतिक स्थितिक जानकारी सेहो जरूरी होइत अछि।

दिल्लीसँ प्रकाशित होएवला मैथिली त्रैमासिक पत्रिका 'मिथिलांगन' लेल देल अपन एकटा साक्षात्कार मे पुछल प्रश्न "अहाँकेँ कलाकारे बनकाक मन किएक भेल?" केर उत्तर मे कहने छलीह, "जेना मिथिलाक आम स्त्रीगण विवाह आ पर्व-त्यौहारक अवसर पर कागज, कपड़ा आ दीवार पर थोड़-बहुत चित्रकारी करैत छथि तहिना हमहुँ करैत रही। मुदा कहियो हम सोचने नहि रही जे हमहुँ एक दिन कलाकार बनब, किएक तऽ तखन हमरा ई बात नञि बूझल छल जे शहर मे गामक एहि कलाकेँ लोक एतेक पसिन करैत छथि आ कलाकार लोकनिक एतेक सम्मान आ पाई देल जाइत छैन्ह। शुरूआत मे हम कागजे पर जलरंगसँ छोट-छोट पेंटिंग बनाबी ताहि पर आयल पेस्टल लऽ कऽ ओकरा फिनिशिंग टच दैत रही। जलरंग आ आयल पेस्टलकेँ बाद हमरा ऐक्रेलिक रंगसँ कैनवास पर काम करबाक मन भेल। मुदा हम छोटे आकार मे बेसी पेंटिंग बनौलहुँ। मात्र एकटा पैघ आकारक बनौलहुँ जेकरा पहिल एकल

प्रदर्शनी मे प्रदर्शितो कएलहुँ। किछु पेंटिंग बीकायल जाहिमे ओ बड़का पेंटिंग सेहो छल, ओहिसँ हमर आत्मविश्वास बढ़ल। तकर बाद हम पैघ-पैघ आकार पेंटिंग बनेनाय शुरू कऽ देलहुँ। हमर पति हमरा सदिखन सहयोग केलैन्ह आ उत्साह बढ़ौलैन्ह। दिल्लीक खुलल माहौल हमर कलात्मक अभिरुचिकेँ नव दिशा देलक।"

एहिये साक्षात्कारमे "आधुनिक कलाक प्रति कोना आकर्षित भेलहुँ?" केर जवाब दैत कहलैन्ह, "चूँकि हमर विवाह एकटा आधुनिक कलाकारसँ भेल तैं विवाहक बाद हमरा बेसी भेंट-घाँट कलाकारे लोकनिसँ भेल। एतेक धरि जे घूमनाई-फिरनाइयो बेसी कलादीर्घे आ कला प्रदर्शनिये मे भेल। ओहि समय राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय मे भारतीय महिला कलाकार सभहक एकटा प्रदर्शनी देखबाक अवसर भेंटल ओकरे बाद हम आधुनिक कलाक प्रति आकर्षित भेलहुँ। हम सोचलहुँ किएक नञि मिथिलाक लोक कलाकेँ आधुनिक कलासँ जोड़ल जाए। तकर बाद हमर कलामे एकटा निखार आबि गेल। जखन हमर पेंटिंग राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय लेल चयनित भेल तखन कतेको कलाकार कहलाह जे आब अहुँ आधुनिक कलाकार भऽ गेलहुँ।"

अपन सबल पक्षमे, नव-नव क्षेत्रक लोक सबसँ गप्प केनाए हिनका नीक लागैत छैन्ह, तऽ स्त्रीक शोषण वा स्त्रीक बुराई पसंद नहि छैन्ह। अपन पेंटिंग मे सेहो एहि विषयकेँ ओ प्रमुखतासँ चित्रित करैत छथि। साहित्य आ नाटक खूब पसंद छैन्ह जकर उपयोग ओ अपन कलाकृतिक पात्र-चित्रण करबामे करैत छथि। तऽ दोसर दिश दुर्बल पक्षमे हुनका कजोट छैन्ह जे, हमरा अंग्रेजी नहि आबैत अछि आ कला क्षेत्रमे बेसी किताब, सेमीनार आ खरीददारक वार्ता अंग्रेजी मे हेबाक कारणें दिक्कत होइत अछि।

अपन पेंटिंगक बारे मे बताबैत कहैत छथि, "पॉल गोगवां आ मार्क शैगालक रंग योजना हमरा बड्ड पसिन अछि, हमर पेंटिंगकेँ देखलासँ अहाँकेँ ई बुझा

जायत। हमर शुरुआती प्रदर्शनीक चित्र सबमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक सुन्दर झलकी छल, ताहि मे बेसी ग्रामीण महिला सभहक दैनिक क्रियाकलाप पर आधारित चित्रण छल। ओकर बाद स्त्री मनक संवेदना आ आकांक्षाक चित्रण केनाए शुरू कएलहुँ मुदा प्रतीक आ बिम्ब गामक स्मृतिये पर आधारित छल। हालाँकि अपन चित्रक संयोजन मे हम कोशिश करैत छी जे मधुबनी पेंटिंगक खुशबू बाँचल रहय, जेना- पूरा सतह पर अलंकारिक बेल बूटा, रेखांकन आ छोट-छोट आकार सबकेँ सजावट जकाँ उपयोग करैत छी। बेसी चित्रकार स्त्री देहक सुंदरताक चित्रण करैत छथि। मुदा, हम एकटा स्त्री छी तैं हमर कोशिश रहैत अछि जे स्त्रीक श्रम, ओकर प्रेम, ओकर आकांक्षा आ ओकर मोनक भावना आदिकेँ सेहो चित्रित कएल जाए। हमर कलाकृति पहिल नजर मे लोककला जकाँ आभास दैत छै मुदा, ओकर संयोजन, रंग लगाबयकेँ तरीका आ विषय समकालीन होइत छैक। वएह कारण छैक जे हम समकालीन कलाक सब मुहावरा इस्तेमाल करैत छी खासकर उत्तर आधुनिकतावाद आ नारीवादी कलाकृतिक। एतेक धरि जे डिजिटल कला मे सेहो बड्ड संभावना देखि रहल छी।"

मिथिला पेंटिंग आ आधुनिक कलामे फरक करैत कहैत छथि, "देखबा मे जरूर अलग लगैत छै, मुदा सब कला एक्के रंगक छैक। हमरा जनितबे आधुनिक कला आ लोक कलामे बेसी फरक नहि छैक खाली माध्यमक फरक छैक। आधुनिक कला फाइन आर्टक विकसित रूप कहल जा सकैत अछि। बेसी लोक यथार्थवादी शैली मात्रकेँ फाइन आर्ट बूझैत छथिन आ हुनका कठिन बूझना पड़ैत छैन्ह आ किछु गोटे आधुनिक कलाकेँ उटपटांग काज बुझैत छथि। आधुनिक पेंटिंग मे अमूर्तता आनबक प्रयासमे एक रंगमे कतेको रंग आ आकारकेँ ऊपर आकार देखबा मे भेटत। ओना आधुनिक कलाक बेसी प्रयोग शैली आ माध्यमक भेल छैक। महासुंदरी देवीकेँ रेखांकन देखिक कतेको कलाकार पिकासोसँ तुलना करय लागैत छथि। कोनो कलाकारकेँ अपन शैली छैन्ह आ नव विषय पर काजो कऽ रहल छथि खाली माध्यमक

फरक भेलासँ कोना नहि हुनका आधुनिक कलाकार कहबैन्ह। रहल बात समकालीनताक तऽ मिथिला पेंटिंगमे आब कतेको कलाकार दहेज, आतंकवाद, स्त्री-पुरुखक संबंध, भ्रूण हत्या, पर्यावरण सन आजुक समसामयिक विषयसँ जुड़ल नव सोच आ नव संयोजनमे काज कऽ रहल छथि। समकालीन कलाकारो सब एहने विषय पर काज करैत छथि।"

मिथिला कलाक मिथिलामे स्थिति पर ओ कहैत छथि, "कहल जाइत छैक जे संपूर्ण मिथिलाक जन-जनमे ई कला रचल-बसल छैक। मुदा हमरा देखबामे एहेन बात नहि आयल। मात्र मधुबनी शहरकेँ नजदीकवला गाम सब व्यावसायिक रूपसँ सफल भेलाक कारणेँ पूरा गामक लोक चित्रकारीमे लागल छथि। आन गाम सबकेँ बेसी प्रचार-प्रसार नहि भेलै। तैं ओ लोकनि मात्र पाबनि-तिहार धरि एहि कलाकेँ सीमित केने छथि। शहरकेँ दिश बेसी आकर्षण भेलाक कारण आबक लोक एहि कलाकेँ नहि सीखय चाहैत छथि। शहरमे जे मैथिल परिवार रहैत छथि हुनको ड्राइंग रूममे मिथिला पेंटिंग नहि भेटत, एतबै नहि गामो-घरमे आब देवाल पर सीनरी भेट जाएत, मुदा मिथिला पेंटिंग नहि भेटत। एखन धरि एहि कलाक लेल संग्रहालयक मिथिला आ देशक आन भागमे कमी अछि। दोसर कारण अछि मिथिला कलामे रोजगारक संभावना, सम्पूर्ण मिथिला तऽ नहि मुदा किछ गाममे अवश्य ई कला रोजगारक प्रमुख साधन बनि गेल अछि। कोनो कलाकेँ रोजगार बनेबाक लेल कलाकारकेँ लगातार काज करय पड़ैत छैन्ह आ अपनाकेँ कलाकार जकाँ प्रचारित सेहो करए पड़ैत छैन्ह, एतबै नहि ओकर बिक्री लेल सेहो प्रयत्नशील रहय पड़ैत छैन्ह।"

संजू जी मिथिला पेंटिंगक व्यवसायीकरण पर अपन विचार राखैत एकटा संगोष्ठी मे कहने छलीह जे, "व्यवसायीकरण शब्दकेँ लोक गलत नजरिसँ व्यवहार करैत छथि। मुदा हमर अपन विचार जे कोनो कलाक विकासक लेल व्यवसायीकरण जरूरी छैक। व्यवसायीकरणक लाभ छै, तऽ किछु हानि सेहो

छै। लाभ ई भेल जे मिथिलाक स्त्रीगण आर्थिक रूपसँ सबल भेलीह बिनु पढ़लो-लिखलो स्त्रीगण देश-विदेश घुमि एलीह। हानि ई भेल जे आब बेसी कलाकार मौलिक काज नहि कऽ कऽ नकल करैत छथि। बेसी चर्चित कलाकार लोकनि दोसरासँ काज कराबय लगलाह। किछु कलाकारक नीक स्थिति छैन्ह जिनका संपर्क छैन्ह, मुदा बेसी कलाकार एकरा मजदूरीसँ नीक बुझिक काज कऽ रहल छथि आ कलाकार बला सम्मानो भेटैत छैन्ह।"

एकटा परिचर्चामे, एहि क्षेत्र मे आबय लेल आवश्यक प्रशिक्षण आ संस्थानक विषयमे अपन विचार राखैत कहने छलीह, "अपन समाजमे सभहक माए-बहीने एहि कलाक प्रशिक्षण दैत छथिन। मुदा, एखन धरि मधुबनी स्थित मिथिला आर्ट इन्स्टीच्यूट नीक कला संस्थान मानल जाइत छैक। किएक तऽ ओतय नीक शिक्षक, कलाक सामग्री आ नीक कलाकारक चित्र खरीदबाक व्यवस्था सेहो छैक। सिखबा लेल कोनो नीक कलाकारसँ सिख सकय छी मुदा सरकारी नौकरी लेल कला महाविद्यालयमे शिक्षा आवश्यक अछि। ओतय पाँच सालक डिग्रीक संग बेसी कलाकारक ज्ञान लेबाक मौका भेटैत अछि। भारतमे सभ राज्यमे तऽ नै मुदा पटना, बनारस, लखनऊ, मुंबई, बड़ौदा, शांति निकेतन आदिमे एकर नीक पढ़ाई मानल जाइत अछि।"

मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक त्रैमासिकी पत्रिका 'परिछन' के देल अपन साक्षात्कारमे "अपनेक चित्रमे बेस चटख रंगक प्रयोग देखबामे अबैत अछि। अहाँ अपन कलाक अन्तर्वस्तुक संबंधमे बतबियौक?" प्रश्नक उत्तर दैत कहलैन्ह, "हमर कलाकृतिमे स्त्रीक भूमिका बेस सकारात्मक रहैत अछि। किछु दिन पहिने स्त्री-मनोदशा आ ग्रामीण स्त्रीक सक्रिय भूमिका पर एकटा प्रदर्शनी आयोजित कयने छलहुँ। हमर मान्यता अछि जे जौँ पुरुष आर्थिक जिम्मेवारीक निर्वाह करैत अछि तऽ स्त्री सेहो सामाजिक जिम्मेवारी निर्वाह करबामे सहयोग दैत छथि। गाम-घरक अशिक्षित स्त्रीगण सेहो शहरक कामकाजी स्त्री लोकनि जकाँ आर्थिक सहयोग दैत छथि। एकर अतिरिक्त हम स्त्री-पुरुष संबंधक जटिलताकेँ सेहो अपन चित्रक विषय बनौने छी।

आरम्भ भनहिं हम पारंपरिक अरिपन आ कोहबर आदिक रचनासँ कयलहुँ मुदा एखन धरि हम कतेको श्रृंखला (सीरीज) पर काज कयलहुँ अछि हमर पहिल प्रदर्शनी ग्रामीण जीवनक क्रिया-कलाप पर केन्द्रित छल। हमर 'मिड नाइट टॉक' चित्र बेस चर्चित रहल। जकरा जर्मनीक एकटा कला संग्राहक खरीदने छलाह। छटम प्रदर्शनीमे हम 'श्वेत-श्याम चित्रक प्रदर्शनी लगौने छलहुँ। आइ-काल्हि ग्रामीण दृश्य पर आधारित चित्र बना रहल छी। कुल मिला कऽ अहाँ कहि सकैत छी जे हमर कला ग्रामीण जीवनक सकारात्मक पक्षकेँ चित्रित करैत अछि, कारण जीवनक आरंभिक बीस साल हम गामे मे रहलहुँ जकर प्रभाव आइ धरि हमर काज पर अछि। अहाँ चाहि तऽ हमर कलाकेँ 'यादि मे बसल गाम' कहि सकैत छी।

हम मूलतः आकृतिमूलक चित्रे बनबैत छी। चित्र बनयबासँ पहिने रेखांकनक रूपमे कोनो दृश्य वा आकृतिक रचना करैत छी। फेर कतेको रेखांकनक संयोजनसँ संपूर्ण चित्रक कल्पना करैत छी। किछु कला मर्मज्ञ लोकनि हमर चित्रकेँ देखि कऽ जिज्ञासा प्रकट कयलैन्ह जे कैमरा सँ सेहो एतेक दूर अओर एतेक निकटतम चित्र एक संगे नहि झीकल जा सकैत अछि तऽ अपनेक व्यू-प्वाइंट की होइत अछि। हम हुनका बतौलियैन्ह जे दरअसल हम कलाक दृश्यकेँ एक संगे क्रममे जोड़ैत छी। बस यात्राक क्रममे देखल गेल दृश्य हमर व्यू-प्वाइंट होइत अछि। एखन धरि हम जलरंग रेखांकन, एकेलिक व मिश्रित माध्यम सबसँ काज कयलौंह मात्र आयल कलरमे काज करब बाँकी अछि। अनुमान लगा सकैत अछि जे मिथिलाक लोक-कला से हमर आत्यांतिक जुड़ाव अछि हमर चित्रमे मानवाकृतिक आँखि आ मुखमंडल बनावटि मिथिला पेंटिंगसँ प्रभावित अछि। चिड़ै, पशु इत्यादि हम मिथिला चित्रकलाक मूल स्वस्पहिं जकाँ बनबैत छी। हँ, रंग भरबाक ढंग व संयोजन आधुनिक कलासँ प्रभावित अछि। विषयक झुकाव संपूर्ण पुरबिया संस्कृति दिस अछि। कोनो कला संपदाक संरक्षण व्यक्तिक स्तर पर नहि होइत छैक। व्यक्तिगत स्तर

पर अहाँ अपन कलाकेँ निखारू आ ओकरा विकसित करत रहियौ तऽ निश्चित रूपसँ क्षेत्र विशेषक कला संपदा समृद्ध हेतैक आ ओकर विकास स्वतः हेतैक।"

तऽ एकटा आन प्रश्न, "समकालीन भारतीय कला परिदृश्ये संबंधमे अपने किछु कहय चाहब? अहाँक कला-रचना समकालीन कला परिदृश्यमे कोन तरहें हस्तक्षेपऽ रहल अछि?" केर प्रतिउत्तर मे कहलने छलीह, "समकालीन परिदृश्य मे भारतीय कला संपूर्ण विश्वक केंद्र बिंदु बनय जा रहल अछि। विश्वक सबसँ पैघ नीलामीमे भारतीय कला आ पारंपरिक कलाक नीलामी जोर-शोर सँ भऽ रहल अछि। दुनिया भरि मे भारतीय कलाक प्रति उत्सुकता बढ़ल अछि। दुनियाक सबसँ पैघ संग्रहमे मिथिला कला अओर पुरबिया क्षेत्रक कलाकार लोकनिक कलाकृति संग्रहित कएल जा रहल अछि। हमर कला समकालीन कला परिदृश्यमे हस्तक्षेप करैत अछि, एहि संबंधमे हम की कहू, ई तऽ कला समीक्षक बतौताह। मुदा हमरा पहिल बेर अपन काजक महत्त्व तखन बुझबा मे आयल, जखन कलाकृति नेशनल गैलरी मॉर्डन आर्ट द्वारा खरीदल गेल। किछु विदेशी कला समीक्षक लोकनि सेहो हमर कलाकृति खरीदलैन्ह। माधवी पारेख, पिलोपोच खानवाला सन कतेको महिला कलाकार जे स्वयं प्रशिक्षित छथि, हमर कलाकृति सँ प्रेरणा भेटैत छैन्ह से जतौलैन्ह। हमर किछु रेखांकन हंस आ समकालीन भारतीय साहित्य सन साहित्यक पत्रिका मे प्रकाशित भेल अछि।"

आजुक कलाक ट्रेंड केर बारे मे पुछला पर कहैत छथि जे हमरा बुझने आइ-काल्हि दू तरहक कलाक ट्रेंड छैक - फोटो रियलिज्म आ दोसर इंस्टॉलेशन कला। एकटाक कारण बाजार छैक तऽ दोसरक बाजार मे अपनाकेँ स्थापित करब। समकालीन कलाक दुनिया मे बाजार हावी छैक। जे कलाकारक कृति जतबा मे बिकैत छैक ओ ओतेक पैघ कलाकार मानल जाइत छैक। हालाँकि हम बाजारवादकेँ नीक मानैत छी, किएक तऽ जौँ हमर कलाकृति नहि बिकल रहैत तऽ भरिसक हम अपन छटा एकल प्रदर्शनी नहि कऽ पबितहुँ।

अखन किछु दिन पहिने सोशल मिडिया पर हिनक कलाकृति बेस चर्चामे रहल, कारण छल हिनक कलाकृतिकेँ अश्लील वा कलाकृतिमे अश्लीलता। एहि मादे हमर एतबे कहब अछि जे कोनो कलाकारक कलाकृति वा रचना पर अपन विचार रखनाय अति उत्तम विषय अछि, मुदा अपन विचार राखब सँ पूर्व ओहि विषयक जानकार भेनाय अति आवश्यक अछि। जाहि विषय मे ज्ञान नै अछि ओकर ज्ञान आ जानकारी लेलाक बादे अपन विचार राखब उचित। संजु दास जीक पेंटिंग केँ ष्ब्नजसववाष् सदृश्य अंतरराष्ट्रीय पत्रिका अपन कवर पर स्थान देलक (जकर चहूँदिश प्रशंसा कएल गेल), ई अपना सभ लेल गौरवक बात अछि। रहल अश्लीलताक बात, तऽ प्रत्येक व्यक्तिक नजर, देखबाक-सोचबाक-विचारबाक अपन-अपन दृष्टिकोण होइत अछि। जखन कियो अपन माएकेँ, अपन बहिनकेँ, अपन प्रेमीकेँ, अपन पत्नीकेँ, अपन बेटीकेँ देखैत छथि तऽ आँखि तऽ एक्के रहैत अछि मुदा सबकेँ देखबाक नजरि बदलि जाइत अछि। एक्के आँखिसँ लोक अपन माए, अपन पत्नी दूनूकेँ देखैत छथि, मुदा हृदय मे माए लेल श्रद्धा आ सम्मान तऽ पत्नी लेल प्रेम आबैत अछि।

ई हमर व्यक्तिगत माननाय अछि जे अश्लीलता प्रकृति वा रचना मे नै व्यक्तिक दृष्टिकोण मे होइत अछि। अपन दृष्टि नीक तऽ संसारक सभ वस्तु नीक। संगहिं नीक कामक सदिखन प्रोत्साहन हेबाक चाहि, नै की ओहिमे नीम-नुक्स निकालबाक चाहि। जेना कोनो चित्रकार साहित्यिक रचना पढ़ि कऽ चित्र बनाबैत छथि, तऽ ओहि रचनामे समायल भावकेँ ओ अपन तूलीका सेँ गढ़ैत छथि। ठीक तहिना कतेको रास कवि कोनो चित्र आ मूर्तिशिल्प देखि अपन कविताक रचना करैत छथि आ अपन रचना मे ओहि मूर्तिशिल्पक हुबहु वर्णन प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छथि, तखने तऽ हुनक रचना ओकर (चित्र आ मूर्तिशिल्पक) प्रतिरूप बनत। संभवतः संजूजी सेहो अपन चित्रकारी मे

सएह गुण आनय लेल एहि तरहक प्रयोग करैत हेतीह।
-मुकेश दत्त, मो 9910952191

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*

गोविन्द चन्द्र दास

कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*

मिथिला लोककला आर संस्कृति केर महान केन्द्र थीक। मुदा एकरा वैश्विक पटल पर अनबा मे कृष्ण कुमार कश्यप कें विशिष्ट योगदान छन्हि। ओना त ई एकटा समाज सुधारक, नारी उत्थान केर संस्कृति दूत छलाह, मुदा विवाद सेहो हिनक संग लागल रहल। कश्यप जी आई कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि। मिथिलाक संस्कृति विशेष क कला के संदर्भ मे हिनक अवदान के कोई बिसरि नहि सकैछ आओर नहि बिसरबाक चाही। एकर बावजूद समाज आर समालोचक कश्यप जीक संग न्याय नहि केलनि। हिनक मूल्यांकन उचित ढंग सं नहि कएल गेल। हिनका प्रति समाजक दृष्टिकोण बेस कठोर रहलैक। ओना त मिथिला कला संस्कृति अखनो समालोचनाक दृष्टि सं वंचित जकां अछि। मुदा सोशल मीडिया केर युग मे यदा-कदा नीक-बेजाय के विमर्श होमय लागल अछि। हालांकि कश्यप जी कें कामकाज केर आलोचना त भए सकैछ, मुदा ताहि स्तरक कोनो अथॉरिटी नहि बुझना जाइछ, जे हिनक उचित आकलन कए सकैथ।समाजक वास्ते कश्यप जी कें कतेक पैघ योगदान छन्हि से बुझनाई अत्यंत आवश्यक अछि। मुदा से नहीं, हिनक बनाओल चित्रकारी मे बेस सहजता सं अश्लीलताक अन्वेषण क लेल जाइछ। मुदा एतबे बात नहि छैक। पहिल बात जे कला रसविहीन नहि भए सकैछ।

भारतीय मानस मे नवरसक अवधारणा छैक। ताहि कोनो कलाकार रस सं विरत भए नहि सकैछ। दोसर बात जे प्रत्येक कलाकार आर कथाकार के

अपन शैली होइत छैक आ तेकर पहचान समाज के करय पड़तै।

बातचीत के क्रम में एक बेर हम कश्यप जी कें कथित आपत्तिजनक पेंटिंग पर प्रश्न केलियन्हि त हुनक कहनाम रहैन जे बहुजन के जनतब मे मिथिला चित्र तखन एलै जखन एकर बाजार शुरू भेल रहैक। चाहे कोनो जाति के महिला एकरा बनबथि होथि चाहे कायस्थ समाज मे एकर बेसी चलन छैक त सबके बुझबा मे तखने एलैक जखन 30-35 बरख पहिने बाजार मे समान गेलैक। एकर मतलब ई नहि छैक जे एकर परम्परा मे कामसूत्र नहि छैक। कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक। हुनक कहनाम रहनि जे पहिने कोहबर घर मे जाहिठाम कोठी राखल रहए ताहिठाम एकटा पार्टीशन होइत रहैक। सुनै छियै जे शब्द अछि कोनी-खोन्ही। ओ खोन्ही कोहबर घरक एकटा गुप्त भाग छैक। जाहिठाम सबहक आवाजाही नहि रहैत रहैक तेकरे खोन्ही कहल जाएत रहैक। ताहि खोन्ही मे नवरस कामदेवक चित्र रहैत रहैक। त कामसूत्र जे छैक ताहि सं वंचित कोनो कला शैली नहि छैक। आओर जखन मिथिला चित्र के बाजारीकरण भेलैक त एकरा बाजार मे अनलथिन के?... गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी। ओ सब वृद्ध स्त्री, विधवा स्त्री चाहे ताहि एज मे जे श्रीरामक भजन बेसी आओर दोसर चीज के चर्च-बर्च बेसी नहि कए सकैत छलथिन।

कश्यप जी कें नाम सं विवाद कें वितंडावाद ठाढ़ कएल गेल से उचित नहि। जाहि मिथिला चित्रकला कें ओ आजीविका आओर उपयोगितावाद सं जोड़बाक प्रयास केलैथ ओकरा नजरंदाज नहि कएल जा सकैछ। हिनक कृतित्व मे प्रतीक आर बिम्ब के माध्यमे निर्भीकता आर आत्मविश्वास सं चित्रण साहस के बात छैक। कश्यप जी कें लेखन वा चित्रकारी पर प्रश्न उठाओल जाइत अछि, मुदा ओ समाजक सच छैक। आर सत्य केर प्रकटीकरण केनाइ कोनो कलाकारक अधिकार छैक। ताहि विषय पर वाद विवाद भए सकैछ, मुदा एहि मे केवल अश्लीलता देखनाइ कोनो कलाकार

के संग अन्याय छैक। ताहि कश्यप जी कें काम कें अश्लीलताक संज्ञा दए खारिज नहि कएल जा सकैछ। यदि इएह बात छैक त कालिदास केर कालजयी रचना कुमार संभव आओर काशीनाथ सिंह कें "काशी का अस्सी" के खारिज कएल जा सकैछ की?

कश्यप जी जाहि पृष्ठभूमि सं छथि, ताहि मे ई बड़ साहसक बात छै। जाहि अभावक जिनगी (फीस जमा नहि करबाक कारणे स्कूल सं निकालि देल गेला) सं गुजरलाक बादो निजी स्वार्थ कें छोड़ि क समाज कें जे देलखिन ओ स्वयं मे एकटा उपन्यास छथि। हुनक मोन मे ई एकदम स्पष्ट रहनि जे नारी उत्थानक आ ओकरा स्वावलंबी बनेबाक काज करब। ओ गाम गाम घूमि मिथिला पेंटिंग के केंद्र स्थापित कए महिला सब कें जोड़ि हुनका सब के स्वावलंबी बनौलनि। पेंटिंग कें महज सजावटी वस्तु केर सोच सं बाहर निकालि क ओकरा उपयोगिताक सामग्री के रूप मे मान्यता दियाब केर प्रयोग हिनके देन छनि आर ई प्रयोग मिथिला केर बहुत परिवार कें संबल बनल। एहि सच के क्यो नकारि नहि सकैछ। बाद मे ओ आत्मकथा लिखला बासमती जाहि कें अध्ययन केला पर लोकक भृकुटी तनि सकैछ मुदा एतेक बेबाकी आर ईमानदारी सं अपन सच लिखनाई बड़ हिम्मत के बात छैक।

लोकतांत्रिक समाज मे आलोचना केर अधिकार त सबकें छैक, मुदा आलोचना आओर आरोप मे फर्क होइत छैक। एतबा धरि नहि, कश्यप जी जाहि पहचान आओर सम्मान कें हकदार छलाह, ओ हुनका नहि भेटलनि। मुदा मोनक कोनो कोण मे टीस रहबे करैत छैक। सौराठ मे पहिल मिथिला लोक कला विश्वविद्यालयक स्थापना कएल गेलैक। विश्वविद्यालय त बनि गेल, मुदा सबसं पैघ संकट रहै जे एकर पाठ्यक्रम की होयत आओर के बनेता? त कश्यप जी कें योग्यता आओर अनुभव के देखैत ई काज हिनके सुपुर्द कएल गेल। एकर अलावा गरीब बच्चा या भिखमंगनी सबहक बच्चा के पढ़ेनाई हिनक लक्ष्य रहनि। ताहि मे सेहो विरोधक सामना करऽ पड़लनि। कुल

मिलाकऽ कहल जा सकैछ जे महिला, दलित, पिछड़ल आर वंचित कें उत्थानक लेल सदिखन अथक प्रयास करैत दुनिया सं विदा भए गेलाह।

***(आ शशिबाला)*- सम्पादक द्वारा जोड़ल गेल। ऐ आलेखमे जतऽ जतऽ कश्यप जीक नाम अछि ओतऽ *आ शशिबाला सेहो पढ़ल जाय, कारण कश्यप जीक जिबैत कोनो चित्र एहेन नै अछि जे मात्र कश्यप जी आ शशिबाला संयुक्त रूपे नै बनेलनि।- सम्पादक**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी

रवीन्द्र कुमार दास

परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी

कहबी छैक “जे हर सफल पुरुष के पाछू कोनो नै कोनो स्त्री के हाथ छैक“ एहि कथन स हम सहमत छी मुदा स्थिति एकर विपरीत सेहो देखबा मे आबि रहल अछि l संजू के कहानी हमरा जीवन मे हमर बियाहक लेल चर्चा सों शुरू होइत अछि l हमर बाबूजी कमरोली गामक एकटा कथा फ़ाइनल केलनि तेकर मूल आधार छल कन्या चित्र लिखैत छलखिन l हमरो सेहन्ता छल जे लड़की चित्र बनबैत होइथ नहि त कम स कम चित्रकार स घृणा नहि करैत होइथ कियैक त एखनहु अपन समाज मे चित्रकार के लोक पागल बुझैत छथिन l द्विरागमन के बाद हमर मौसी संजू दिस ताकि क हमरा कहलीह जे अपने जकाँ पागल नै बना दिहेन l जहांतक पागलपन आ जूनून के गप्प छै

त आई हुनका मे अपन कलाक लेल जूनून देखिक मोन हर्षित होइत अछि l आई हमरा ख़ुशी होइत अछि जखैन क्यो कला लेखक वा चित्रकार हिनका स भेंट घाँट करबा लेल अबैत छथिन आ पुछैत छथिन चित्रकार संजू दास एतय रहैत छथिन हुनका स भेंट करबाक अछि l हमरा जनितबे मात्र पढ़ाइये मे नहि बल्कि चित्र ,अभिनय ,संगीत ,नृत्य वा साहित्य कोनो विधा मे सफलताक लेल जूनून भेनाइ जरूरी छै l हमरा मोन अछि जे प्रथम मिलन मे हम हिनका स्केचबुक पेन्सिल आ कलर बॉक्स भेंट केने रही कोनो गहना जेवर नहि l

विवाह के किछ दिन बाद संजू हमरा कहलैन हमरो मोन होइत अछि जे हमहू आर्ट कालेज मे पढि क कला के विधिवत शिक्षा ली l हम कहलियैन तैयारी करू ,टेस्ट दियौ एड्मिसन भय जाइत अछि त पटने मे रहू ,डेरा डांटा त अछिये l टेस्ट देलनि मुदा एड्मिसन जोकर तैयारी नहि छलैन एड्मिसन नहि भेलैन l हम कहलियैन जे अहाँ दुखी नहि होऊ कलाकार बनबा लेल मात्र जूनून आ लगातार प्रैक्टिस चाही l दुनिया भरि मे आ एहि देश मे कतेको कलाकार आर्ट कालेज स नहि छथि l एतेक पद्मश्री सम्मान स सम्मानित मिथिला पेंटिंग के कलाकार सब कोनो आर्ट कालेज मे थोड़े ने पढ़ने छथिन l

संजू दिल्ली एलीह तेकर बाद स्थिति बदलल l हम पटना आर्ट कालेज स फ़ाईन आर्ट के कोर्स केलहुँ आ एकटा अखबारक कला विभाग मे नौकरी जॉइन केलहुँ l तखन हम नोयडा मे रहैत रही l हमर जतेक मित्रगण छथि ताहि बेसी आधुनिक कलाकार छथि l घर मे बैसल छोट छोट पेंटिंग बनबैथ आ मित्रगण के देखबैथ l हमरा घर मे बेसी आधुनिक कला पर चर्चा होइत छल l नहु नहु हिनको आधुनिक कला मे रूचि लैत देखलहुँ l मॉडर्न आर्ट गैलरी मे एकटा भारतीय समकालीन महिला कलाकारक प्रदर्शनी देखलाक बाद ई निर्णय केलनि जे आब हम आधुनिक कला शैली सीखब आ ओहि

शैली मे काज करब l धीरे धीरे करय लगलीह आ प्रदर्शनी सब मे पठबय लगलीह l मित्र लोकनि कहलैन जे नीक काज करैत छथिन अहाँ हिनकर एकल प्रदर्शनी आयोजित करू l दुनू गोटे विचार केलहुँ आ हिनक पहिल प्रदर्शनी निशुल्क भेटलाक कारण ग्रीनलेज बैंक के चाणक्यपुरी शाखा मे लगाओल गेल l ओतय प्रसंशा त खूब भेलनि मुदा एकहु त पेंटिंग बिकल नहि मुदा हम दुनू गोटे निराश नहि भेलहुँ l एक साल तक किछु आर पेंटिंग केलीह जाहि मे एकटा बड़का कैनवास सेहो छलैन l सबटा पेंटिंग के दोसर प्रदर्शनी मंडी हॉउस स्थित रवींद्र भवन ललित कला अकादमिक गैलरी मे आयोजित भेल l एहि प्रदर्शनी मे पहिल दिन हिंदुस्तान टाइम्स के रंगीन पेज मे हिनकर पेंटिंग छपल आ साँझ तक मे बड़का कैनवास बला पेंटिंग बिका गेल l कोनो कलाकारक लेल ओकर पेंटिंग बिका जाए एहि स बड़का ख़ुशी आर की हेतैक l तेकर बाद हिनका मे हम अद्भुद उत्साह देखलहुँ l आई धरि कतेको पुरस्कार भेटलैंन ,कतेको प्रदर्शनी आ कला शिविर मे भाग लेने हेतीह मुदा पहिल पेंटिंग के बिकनाई जीवन मे बहुत महत्पूर्ण होइत छैक l आई अपन सर -कुटुंब नैहर आ सासुरक लोक गर्व स हिनका स भेंट करैत छथिन फोटो खिंचबैत छथिन l हमरा यद् अछि जहिया पहिल बेर ई टेलीविजन के समाचार मे आयल रहैथ जेकरा देखिक हिनक मां खुश भय गेल रहथिन l हम दुनू गोटे सेहो क्षण नहि बिसरि सकैत छी जहिया हिनका बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला कलाकार सम्मान भेटलैन हमर बाबूजी आ मां दुनू गोटे ओहि कार्यक्रम मे जेबाक लेल उत्साहित रहैथ lXZ

* एक त अपन समाज मे कला ,रंगमंच ,साहित्य ,संगीत आ नृत्य के सबस अधलाह काज बुझल जाइत छैक एहि विषय पर चर्चो केनाइ सेहो अधलाह बात अछि l हमर विचार स हर स्त्री मे कोनो ने कोनो प्रतिभा अवश्य होइत छैक आ हुनको मे लालसा होइत छनि जे हमरा मौका भेटैत त हमहू किछु करितहुँ मुदा अपन समाज मे आइयो धरि हुनकर परिवार आ पतिदेब स सहयोग नै भेटैत छनि l हाल मे हिंदी आउटलुक पत्रिका के पूरा अंक स्त्री देह

विशेषांक छपल छल ताहि मे सँजुके कतेको रेखांकन छपलइन l पूरा अंक फेसबुक पर शेयर केलनि त किछु लोक लिखलाह जे जानि बुझिक संजू चर्चा मे एबाक लेल अश्लील चित्र बनबैत छथि l एम्हर किछु दिन पहिने 2008 के मैथिली पत्रिका अंतिका मे छपल एकटा रेखांकन पर खूब चर्चा भेल l किछु गोटे लिखलाह जे संजू दास आ कृष्ण कुमार कश्यप दुनू मिथिला कला मे अश्लीलता पसाइर रहल छथि l किछु गोटे लिखलइन जे मात्र चर्चा मे एबाक लेल एहि तरहक चित्र बनबैत छथि l हम संजू के एक्के त गप्प कहैत छियैन जे लोक पिकासो आ फ्रांसिस न्यूटन सूजा के कलाकृति देखते त पता नै की कहते l भारत के सबस प्रतिष्ठिक महिला कलाकार अमृता शेरगिल अपन सेल्फ न्यूड बनौने छथि मैथिल समाज के सेहो देखबाक चाही जे दिल्ली मे राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे संग्रहित अछि l

-रवीन्द्र कुमार दास, मो. 9811712398

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१०.संजू दासक किछु बीछल कलाकृति

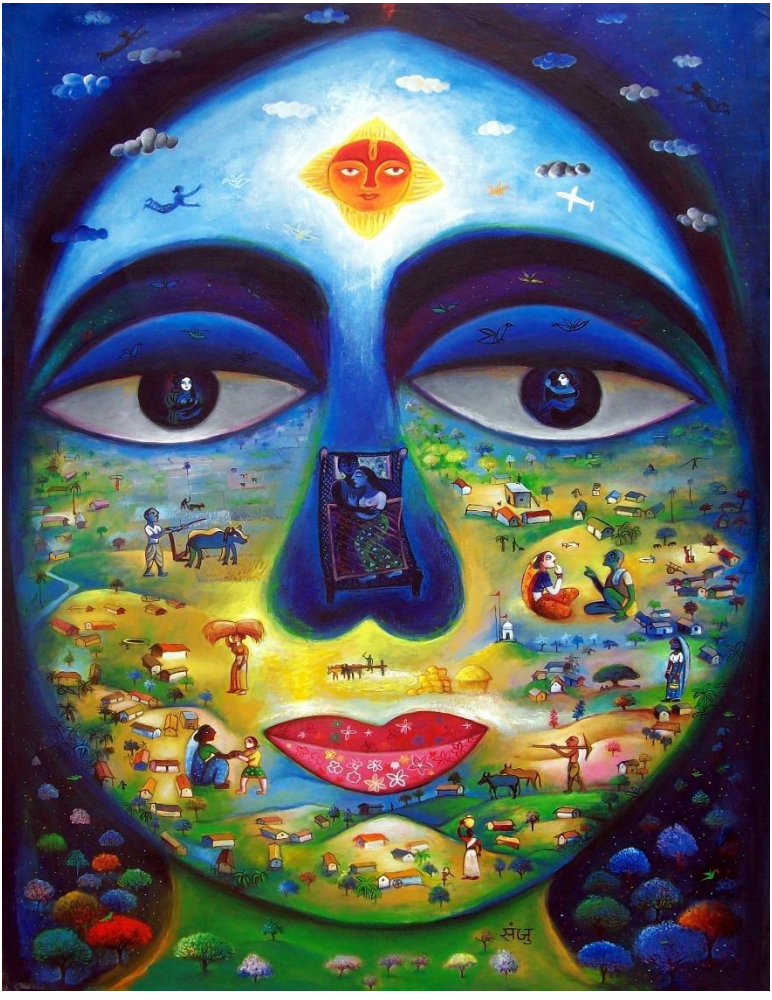

સંજુ

संजु

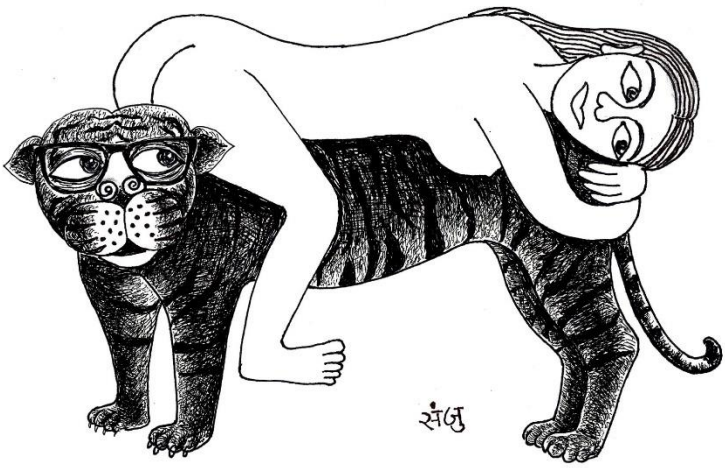
સંજુ

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय

गजेन्द्र ठाकुर

कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाएकटा परिचय -

कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई २०२० अगस्त १२ -। मृत्यु. ई.। पिता । जनबरी"सँवलिया" इन्द्रनारायण लाल .उपन्यासकार स्व-कवि - "नाइट स्कूल" मे नेना सभ लेल .ई १९६५, १९८१ ईकला आधारित " मे . क प्रवर्तन आ तक"जीवन आ शिक्षण पद्धतिर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ :क स्थापना। रचना"भारती विकास संस्था" क मैथिली अनुवाद"गोविन्द-गीत" आ "मेघदूत" शशिबालाक संग; माछ-

भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग२-१-; मिथिला चित्रकोर-, भाग३-; मिथिला अरिपन भाग४-; गोदना चित्र५-भाग -शैली-; मिथिला लोकचित्र।

शशिबाला- पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ -गीत" आ "मेघदूत" कृष्ण कुमार कश्यपक संग :। रचना(बिसहथ) क मैथिली अनुवाद"गोविन्द; माछभात-; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग२-१-; मिथिला चित्रकोर-, भाग३-; मिथिला अरिपन भाग४-; गोदना चित्र -शैली-५-भाग; मिथिला लोकचित्र।

कृष्ण कुमार कश्यप जी सँ लेल हमर साक्षात्कार साक्षात्कार२- मे कृष्ण कुमार कश्यप जी कलाक विभिन्न पक्षपर अपन विचार रखने छला। मिथिला चित्रकलाक नाम मधुबनी चित्रकला करबापर ओ चिन्तित छला। जितवारपुर स्कूल आ आन ठामक मिथिला चित्रकलाकारक बीचक फाँटि सेहो उजागर भेल।

"जखन लोक बाहरसँ अबैए तँ पूछैए जे अहाँक गाम कोन जिलामे अछि, आ से बुझने जे हम सभ मधुबनी नै दरभंगा जिलाक छी ओ बजैए 'यू आर नॉट फ्रॉम द ओरिजिनल प्लेस'- माने ओकरा होइ छै जे हमर चित्रकला असली मधुबनी चित्रकला नै छी आ से जितवारपुर स्कूलकेँ सूट करै छै।"

नरेन करुणाकरण अपन आलेख मिथिलाज वूमन पेण्ट देयर वे आउट ऑफ " बिहारक बरहेता गाममे भारती विकास मंच गरीब " -मे लिखै छथि "पोवर्टी महिलाकेँ चित्रकलाक मिथिला पद्धतिि सिखा रहल अछि, जइसँ बहुत रास महिला गरीबी भगेबामे अपनाकेँ समर्थ कऽ सकल छथि।"

नरेन करुणाकरण लिखै छथि जे कृष्ण कुमार कश्यपक पहिल शिष्या शशिबाला, जे आब ओत्तै शिक्षिका छथि, हुनका कहलखिन जे एकटा गरीब " "मुशहर समुदायक हाथीक थीम आधारित चित्र अति सुन्दर होइत अछि। शशिबाला हुनका ईहो कहलखिन्ह जे जोन बोनिहार महिलाक हाथ कने करगर होइ छै आ जखन ओइमे सँ किछु गोटे कोमलतासँ कुच्ची नै प्रयुक्त कऽ सकली तँ हुनका चित्रसँ अलग दोसर कला जेना टोकड़ी, टेबुलक्लॉथ आदि बनेनाइ मे लगाओल गेल। मुदा बहुत गोटे आस्तेसँ कुच्चीक प्रयोग केनाइ सीखि गेली।

क्षिति जल पावक गगन समीरा आधारित पाँच टा रंगक अतिरिक्त दलित-आदिवासीक कलाक रेखा आ काट संग ओकर थीमक प्रवेश मिथिला चित्रकलामे गोधना शैलीकेँ प्रवेश दियेने अछि।

कृष्ण कुमार कश्यप अपन स्कूलमे एकटा डोम छात्राक प्रवेश देने छलखिन्ह, दोसर छात्रा सभ हुनकर सहयोग केने छलखिन्ह मुदा गौँआ सभ हुनकर विरोध केने छलन्हि। हुनकर स्कूलमे किछु मुस्लिम छात्रा सेहो रहथि आ ओ लोकनि हिन्दू थीमक चित्रांकन करबामे कहियो संकोच नै केलन्हि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

जितेन्द्र झा, जनकपुर

मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

१

अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला

मिथिलाञ्चलक घरक भितमे बनाओल जाएबला मिथिला लोकचित्रकला विश्वभरि ख्याति कमओने अछि । मुदा एखत अपने भूमिमे एकरा पहिचान खोजबाक स्थिति छैक । मिथिला चित्रकलाके सरकार बेवास्ता कएने अछि, तें ई व्यवसायिक रुप नहि लऽ सकल अछि । एकर व्यावसायिक प्रबद्र्धन नहि भऽ सकल अछि । ग्रामीण क्षेत्रक महिलाके जीवनस्तर सुधार करबाक लेल बडका साधन भऽ सकैत अछि ई चित्रकला । कियाक त खासकऽ मैथिल ललनेक हाथमे नुकाएल रहैत अछि ई चित्रकलाक जादुगरी । आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक समृद्धिक अथाह सम्भावना अछि मिथिला चित्रकलामे । लोकचित्रकलाके व्यवसायिक स्वरुप देलासं आर्थिक आ सांस्कृतिक दुनू लाभ उठाओल जा सकैत अछि । परम्परागत मिथिला चित्रकला जीवनक अंग अछि मिथिलामे । लोकचित्रकला संस्कारक द्योतक

सेहो अछि । मुदा बढैत आधुनिकताक कारणे विस्तार प्रभावित भेल छैक । राज्य मिथिला चित्रकलाके एखनधरि चिन्ह नई सकल आरोप चित्रकारसभक छन्हि । नेपाल सरकार कलाके बढावा देबालेल ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठान खोलने अछि । जत्तऽके प्राज्ञ परिषद्मे मिथिला चित्रकलास सम्बद्ध एक्कहु गोटे नहि अछि । ई एकटा प्रमाण मात्र अछि, आन बहुतो ठाम मिथिला चित्रकलासंग सौतिनिञा व्यवहार होइत आएल छैक । एना ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति किरण मानन्धर कहैत छथि जे मिथिला चित्रकलाके विशेष स्थान देने छी । मिथिला चित्रकलामे विशेष दखल भेनिहारि महिलाके स्थान देल जाएत से कुलपतिक कहब छन्हि । हिनक कथनी आ करनीमे कतेक समानता अछि, आबऽ बला दिने बताओत । जत्तऽ समग्र कलाक उन्नतिक बात होइक ओत्तऽ मिथिला पेन्टिङक चित्रकार नईं अछि, एकरा विडम्बने कहबाक चाही । मिथिला चित्रकलासं सम्बद्ध चित्रकारके उचित अवसर भेटबाक चाही । नेपाल पर्यटन वर्ष २०११ मना रहल अछि, एहनमे मिथिला चित्रकलाक मादे सेहो पर्यटकके आकर्षक कएल जा सकैत अछि । एहिबीच काठमाण्डूक बबरमहलस्थित सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे एस. सी. सुमनक मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी मिथिला कसमस हालहि सम्पन्न भेल अछि । एहि प्रदर्शनीमे कलाप्रेमी मिथिला चित्रकलाक आधुनिक आयामसभसं परिचित भेलथि । सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे हुनक ११ म् प्रदर्शनी छल ई । मिथिला क्षेत्रक जीवनशैलीक झल्काबऽ बला चित्रकलासभ देखलासं ग्यालरी मिथिलामय भऽ गेल छल । एस. सी. सुमन मिथिला चित्रकला क्षेत्रमे परिचित नाम छथि । हिनक चित्रकलासभ बेस प्रशंसा पओलक । मिथिला चित्रकला सम्बन्धमे अध्ययन अनुसन्धानक सेहो बहुत खगता छैक । मिथिला लोक चित्रकलाक कुनो खास नियम वा सिद्धान्त नहि होइत अछि । तें ई स्वच्छन्दताक पर्याय सेहो अछि । मिथिलाक समृद्ध संस्कृतिक परिचायक सेहो अछि ।

२

एस.सी सुमन, चित्रकार, मिथिला चित्रकला

सरकार कएलक सौतिनिआ व्यवहार

मिथिला पेन्टिङ परम्परागत कला अछि, ई कला कोनो पाठशालामे नहि

सिखाओल जाइत अछि । पीढीदर पीढी ई अपने आप सिखबाक काज होइत छैक । हमहु अपन दाइसऽ सिखलहु । कतउ सासुसऽ पुतोहु सिखैत अछि त कखनो मायसऽ बेटी । ताहि परिवेशमे हमहुं अपन दाइसऽ मिथिला चित्रकला सिखलहु ।मिथिला पेन्टिङके अन्तर्राष्ट्रिय बजारमे बहुत माग अछि । ई त हट केक अछि । कलाकारके कलाकारितामे निर्भर करैत छैक ओकर मोल । जेना हमर पेन्टिङ १७ हजारसऽ लऽकऽ ८० हजारधरिक अछि । जे सहजे बिका जाइत अछि । मिथिला पेन्टिङ व्यावसायिक रुप लेबा दिस उन्मुख अछि । कमर्सियल मार्केटमे देखी त सेरामिकमे, ब्यागमे कपडा आदिमे एकर प्रयोग भऽ रहल अछि । तें नीक बजार छैक एकर । जऽ अपन बात करी त जहन हम बजारमे अबैत छी त प्रदर्शनी लऽ कऽ हमरा कोनो दिक्कति नई होइत अछि । मिथिला चित्रकलाक विकासके जे आधारसभ अछि से किछु कमजोर भऽ रहल अछि जेना पहिने माटिक घर होइत छलै । भितके घरमे मिथिला चित्रकलाके नीक अभ्यास होइत छलै । माटिक घरक ठाममे आब क्रंक्रिटके जंगल अछि भऽ गेल । सामाजिक संस्कार आदिमे सेहो भितमे लिखबाक चलन छलै । मुदा आब बच्चा जऽ पेन्सिलसऽ देबाल पर किछु लिखि दैत छैक त मायबाप डांटिदैत छैक । तें भितमे लिखबाक चलन प्रभावित भेल अछि । तैइयो तराईक मुसहर वस्ती, थारु आ झांगड जातिक वस्तीमे माटिक घरमे मिथिला चित्रकला देखल जा सकैत छैक । नेपाल सरकार एखनधरि किछु नई कऽ सकल अछि, मिथिला पेन्टिङके लेल । मिथिला पेन्टिङ जत्तऽ अछि अपने बुतापर, अपन स्थान अपने बनौने अछि । मिथिला चित्रकलामे लागल कलाकारसभ अपने मेहनतिसऽ आगु बढल अछि । ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानके गठन करैत काल प्राज्ञ परिषदमे मिथिला चित्रकलासऽ सम्बद्ध एक्कहु गोटेके नहि राखल गेल । नामके लेल सभामे मिथिला पेन्टिङसं जुडल एकगोटेके जगह देल गेलै, बादमे विवाद भेलै आ ओहो पद छोडि देलनि । व्यक्तिगत रुपमे हमरा पुछी त राज्य मिथिला चित्रकलाक लेल ने किछु कएने

अछि आ ने किछु कऽ सकैया । *(सुमनकसंग जितेन्द्र झा द्वारा कएल गेल बातचीतपर आधारित)*

३

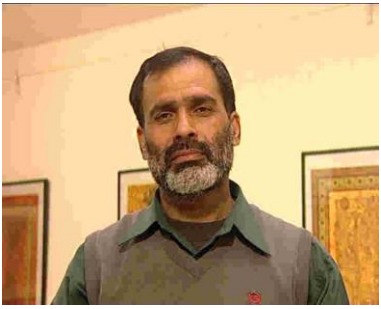

धीरेन्द्र प्रेमर्षि- साहित्यकार

प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला

गुणँत्मक दृष्टिकोणसं सेहो मिथिला पेन्टिङमे बहुत काज भऽ रहल अछि । परम्परा आ आधुनिकता दुनूके जोडिकऽ एच.सी सुमन मिथिला पेन्टिङके आगू बढा रहल छथि । मदनकला देवी कर्ण, श्यामसुन्दर यादवसहितके व्यक्तिसभ परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू तरहें मिथिला पेन्टिंगके आगू बढा रहल छथि । सुमनक पेन्टिङ आधुनिकताक आकाशमे सेहो भरपुर उडान भरने अछि मुदा धर्ती बिन छोडने, जे एकदम महत्वपूर्ण बात अछि । मिथिला पेन्टिंगके साधनाके रुपमे लऽ कऽ आगु बढनिहार सभ अपने आप आगु बढि रहल छथि ।राज्यके दिससऽ मिथिला पेन्टिङके लेल कोनो खास काज नहि भऽ सकल अछि । राष्ट्रिय स्तरमे चित्रकारसभके मूल्यांकन करैत काल मिथिला पेन्टिङसऽ जुडल व्यक्तित्वके जे स्थान आ सम्मान देल जएबाक चाही, से नहि भऽ सकल अछि । जनस्तर आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमे मिथिला

पेन्टिङ नीक सम्मान पओने अछि । देशमे मिथिला पेन्टिङके स्थापित कएल जाए । खास कऽ महिला सभ एकरा जोगाकऽ रखने अछि । मैथिल महिलासभ किशोर अवस्थेसं अरिपन लिखब शुरु करैत अछि । तुसारी पावनि आदि सभ सेहो मिथिला पेन्टिङ सिखएबाक अवसर अछि । विविध पूजाक माध्यमे ओ सभ चित्रकलामे प्रवेश करैत छथि । राज्यके दिससऽ मिथिला पेन्टिङके स्वीकार्यता बढाएब, व्यावसायीक सम्भावनाके खुला करब, एहिमे लगनिहारसभके सम्मानके वातावरण बनएबाक काज करबाक चाही । तहन ई राष्ट्रिय स्तरमे स्थापित भऽ सकत । एहिमे अन्तरनिहीत वैशिष्टय जे अछि ताहिसऽ ई अपने अन्तर्राष्ट्रिय रुपमे स्थापित भ जाएत, व्यापक भऽ जाएत । *(जितेन्द्र झा द्वारा कएल गेल बातचीतपर आधारित)*

(विदेह सदेह ३६)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

गजेन्द्र ठाकुर

श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

श्वेता झा चौधरी, *गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला*

जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।

कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक। हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।

१

ई चित्र धानक कटनी कालक मिथिलाक गामक चित्रण करैत अछि। पुरुख-पात खेतसँ फसिल घर अनैत छथि तँ महिला ओहि फसिलकेँ तैयार कऽ चाउर बनबैत छथि। अपन दैनिक जीवनसँ हटि कऽ एहि अवधिमे महिला एकट्ठा होइ छथि आ गप-सरक्का करै छथि।

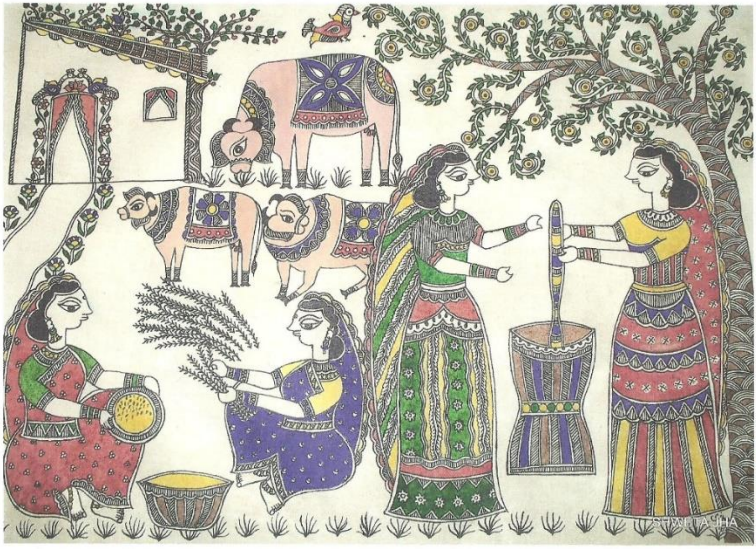

२

जखन कखनो प्रेमक गप अबैत अछि तखन सभसँ पहिने मोनमे राधाकृष्णक ध्यान आबि जाइत अछि। ई चित्र ओहि प्रेमकेँ देखेबाक एकटा प्रयास..।

३

सावन मासमे बरखाक फूहीसँ भीजल माटिक सुगन्ध लैत झूला झुलैक आनन्दक कोनो सीमा नहि ..।

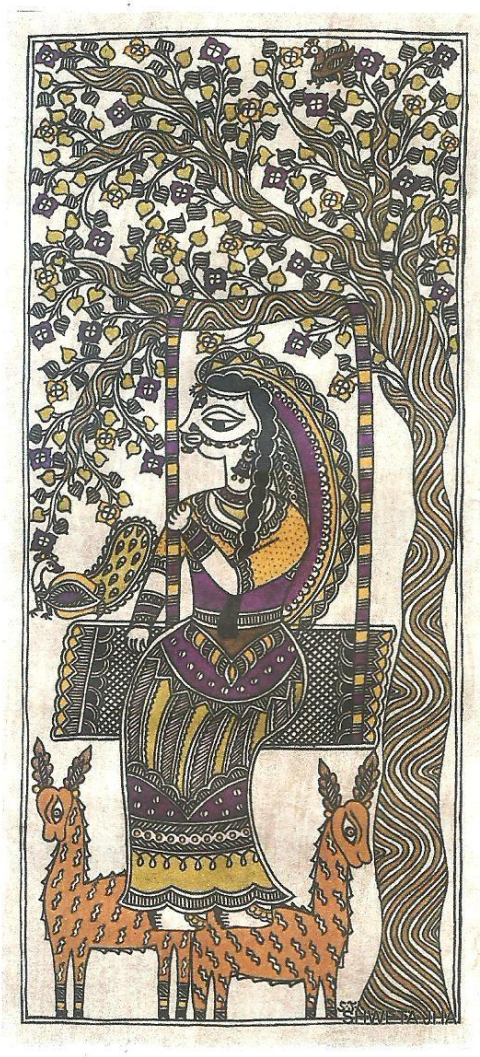

४

डोली कहार

सासुर जाइत काल नव कनियाँक मोनक दुविधा- नैहरक छुटैक दुख आ नव जीवनक उत्साह। ई सभसँ अनजान कहार सभ उमंगपूर्वक कनियाँकेँ सासुर पहुँचाबैत...

५

करिया झुम्मरि

मिथिलाक लड़की सभमे करिया-झुम्मरि खेलक खूब चलनि अछि। छोट आ पैघ सभ एहि खेलक आनन्द लैत छथि...

६

साधुबाबा

साधुबाबाक चित्रण मिथिला चित्रकलामे आधुनिक रूपेँ करबाक प्रयास...

७

दुर्गापूजा

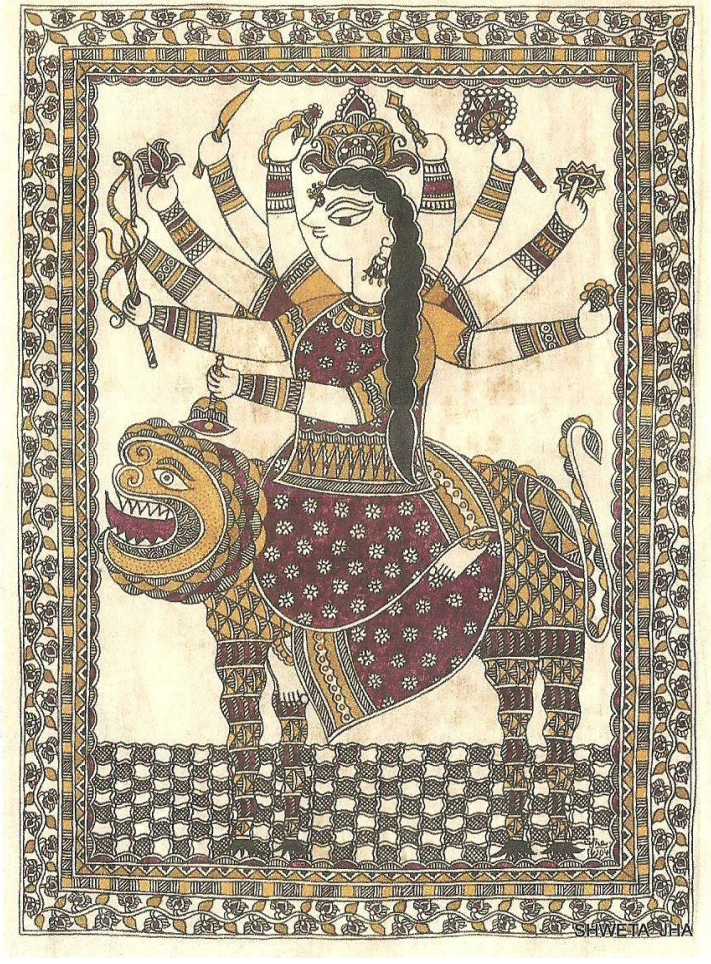

८

काली माँ

९

पनिभरनी

१०

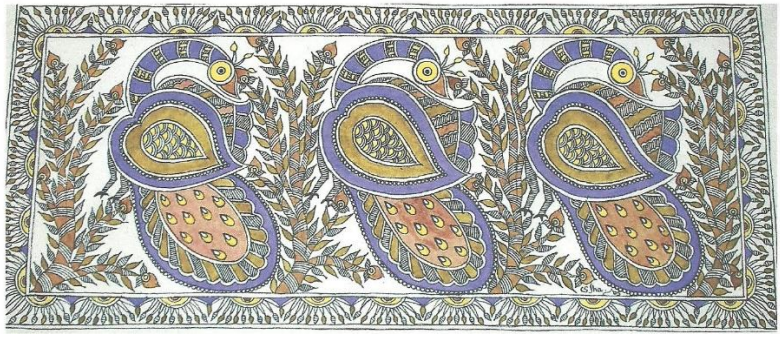

११

१२

चित्रक विषयमे: सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अन्हारक बादक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक जड़ि अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। तेँ विश्वक सभ संस्कृतिमे ई पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। ई चित्र ऐ सभकेँ चित्रित

करबाक प्रयास अछि।

१३

चित्रक विषयमे: सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अन्हारक बादक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक जड़ि अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। तेँ विश्वक सभ संस्कृतिमे ई पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। ई चित्र ऐ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।

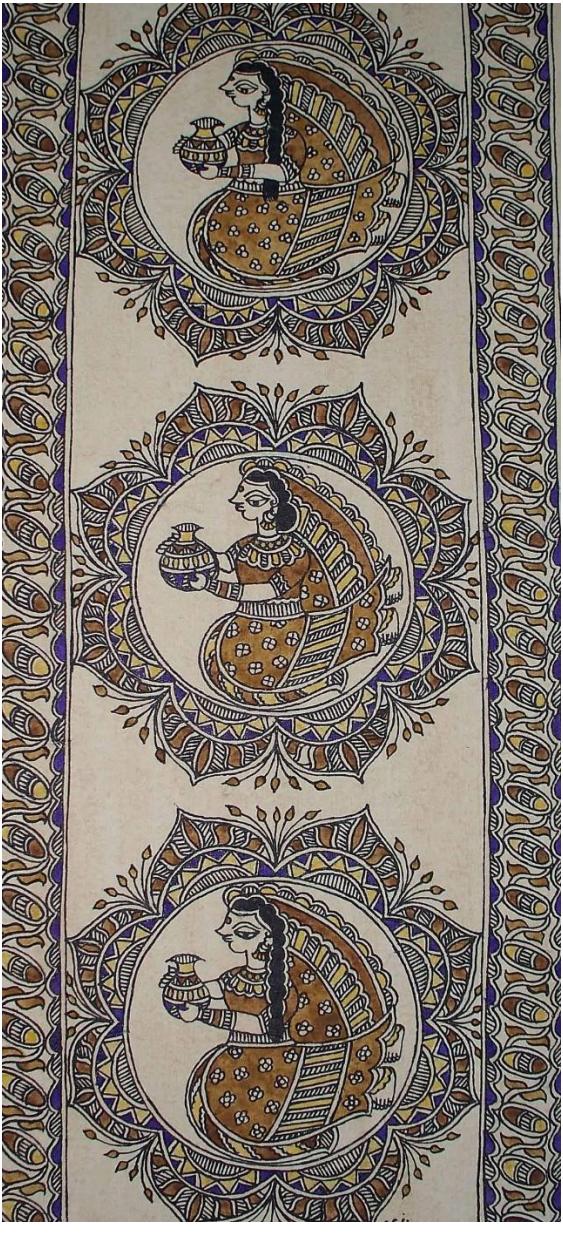

१४

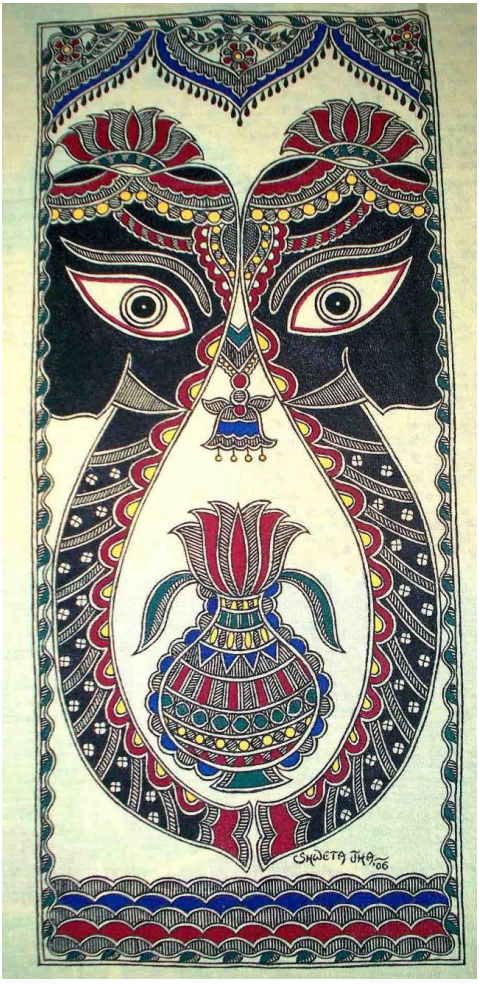

१५

१६

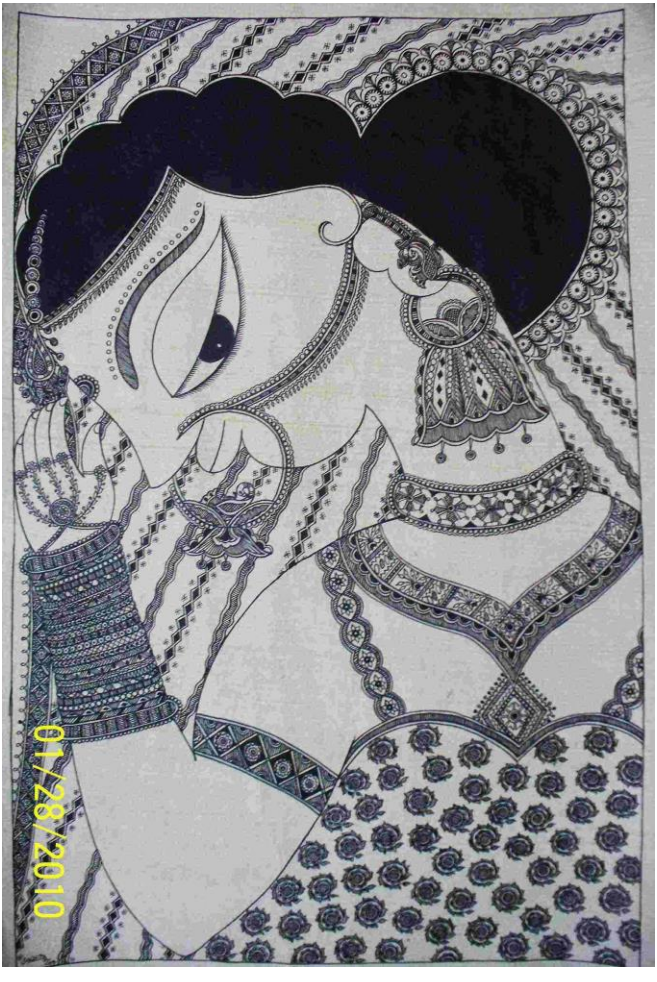

१७

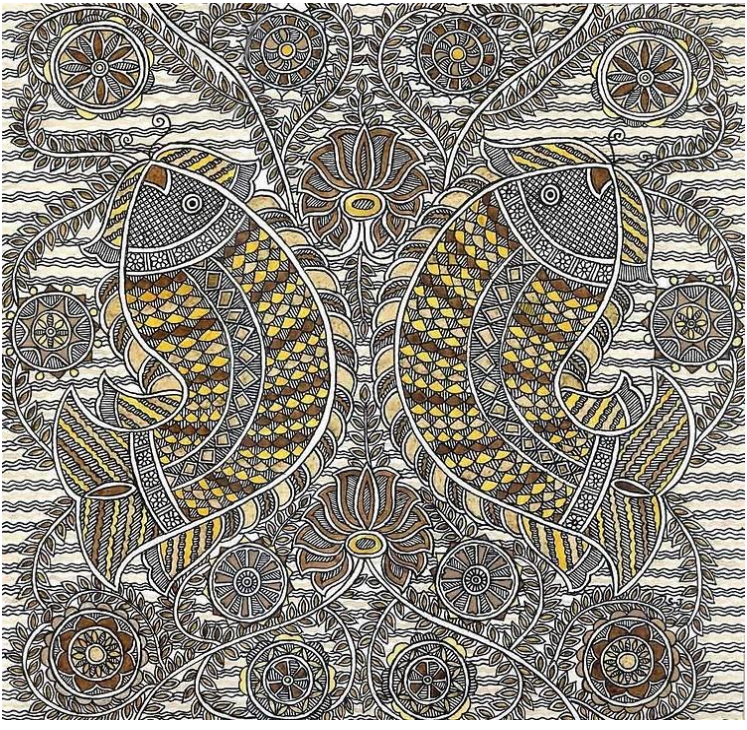

१८

१९

२०

२१

(विदेह सदेह ३५)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.विदेह ३६९ म अंक ०१ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३६९)- अंक ३६८ पर टिप्पणी

निर्मला कर्ण

आदरणीय संजू दास जी के चित्र पर हमर प्रतिक्रिया- आदरणीय संजू दास जी बहुत नीक चित्रकार छथि। हुनक श्रेष्ठ कलाकार होमय में कुनो संदेह नहि। विदेह पत्रिकाक अंक 368 में हुनक लिखल आलेख पढ़ल। ओ कला में नग्नता पर बहुत सारगर्भित आलेख लिखलथि। हुनक आलेख सँऽ अत्यंत प्रभावित भेलहुँ। आदरणीय संजू दास जीक विचारधारा सँऽ हम शत-प्रतिशत सहमत छी। कोनो चित्र में नग्नता देखऽ सऽ पूर्व ओकर भावना देखवाक चाही।मुदा एहि अंक में हुनक किछु बीछल चित्र देखलहुँ। ओहि चित्र में मात्र तीन चित्र पर हमरा किछु आपत्ति अछि। ओहि तीनू चित्र पर हम आदरणीय संजू दास जी सँऽ किछु जानकारी चाहैत छी। एक स्त्री संपूर्ण नग्न ठाढ़ छथि एवं हुनका किछु कामुक पुरुष ललचाएल दृष्टि सँऽ देख रहल छथि। निकट लेटल शेर पर्यंत जे संभवत: हुनक अपन कर्मचारी थिक। वैह स्त्री संपूर्णा नग्न रूप में शेर पर लेटल आराम कऽ रहल छथि। मादा पशु के स्त्री रूप में चित्रण।ओ मादा नग्न रूप में बैसल दर्पण में अपन सौंदर्य देखि रहल छथि एवं एक गोट कामुक पुरुष रूपी हिंश्र जीव जे संभवत वृद्ध अछि ओहि स्त्री के आलिंगन में कएने अछि।

हम कला मर्मज्ञ जानकार चित्रकार नहि छी। हुनक कला के प्रशंसा करैत हम मात्र एक बात आदरणीय संजू दास जी सऽ पूछऽ चाहैत छी। तीनू चित्र में महिला पात्र के संपूर्ण नग्न रूप में चित्रण करवाक औचित्य की थिक? कोन भावना के वशीभूत स्त्री के नग्न देखाओल गेल ?

प्रणव झा

इंटरनेट के जाल पर विचरण करैत जखन कखनो विदेहऽक पेज पर पहुचय छी श्री गजेन्द्र ठाकुर के आलेख वा लिंक से किछ न किछ इन्फोर्मेटिव चीज मैथिली भाषा के माध्यम से भेंट जाय अछि। एहि क्रम मे निती नवल दिनेश कुमार मिश्र आलेख सीरीज के अंतर्गत ऐ अंक मे महानंदा से जुडल दिनेश मिश्र के सूचनात्मक लेख के सार मैथिली मे पढ़ लेल भेंटल जे सुखद अनुभूति।

विदेह ऐ अंक मे संजू दास के कलाकृति के ल क कै टा आलेख छापलक अछि जे हालिया हुनकर कोनो पेंटिंग विवाद के केंद्र मे घुमइत अछि। फेसबुक पर प्रमुख रूप से कुमार पद्मनाभ द्वारा उठाओल ऐ मुद्दा के इर्द गिर्द अनेकों लोक आपन राय आ दृष्टिकोण रखला य। पद्मनाभ जी द्वारा आपन बात बहुत दृढ़ता से आ तर्क के साथ राखल गेल आ ओतबे दृढ़ता आ तर्क से संजू दास अपन आलेख द्वारा ओकर खंडन करैत नजरि आबय छईथ। किएकि हम चित्रकला के पारखी नै छी तै अपन कोनो अंतिम पक्ष नै राखि सकय छी मुदा ऐ तरहक मामिला मे तार्किक रूप से वाद प्रतिवाद के डोक्युमेंटेड केला से ऐ तरहक विषय मे समाज के भविष्य मे अपन विचार बनेबाक लेल तार्किक सामाग्री भेंट सके अछि।

प्रोफेसर उषा चौधरी

कला,कला होइछ। ओ अश्लील नहि भ सकैछ।इ हमरा लोकनिक नजरिया थिक,जे हम ओहिमे की देखि रहल छी।अपन दृष्टिकोण मे परिवर्तन कैने अनेक अर्थ निकलैत अछि।

कल्पना झा, पटना

बहुत नीक विदेहक नबका अंक। पठनीय ओ संग्रहनीय। अत्यधिक व्यस्तता रहैए, तथापि पढ़ब सुरुह केलहुँ, तँ बहुत किछु पढ़ि गेलहुँ, ततेक इंटरेस्टिंग टॉपिक सभ अछि। डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक' जीक आलेख "गामक नामकरण:एक परिशीलन" बहुत नीक लागल।दरभंगा-मधुबनी सँ नेपालक धनुषा,जनकपुर आ समस्तीपुर, सीतामढ़ी धरिक बहुतो गामक नामकरणक चर्चा बहुत रोचक ढंग सँ केलनि अछि।मिथिलाक गामक नामकरणक पाछाँक इतिहास सँ लोककेँ अवगत करओलनि अछि लेखक,चाहे ओ राजनीतिक इतिहास हो वा सांस्कृतिक इतिहास।एतेक नीक आलेखक लेल लेखककेँ साधुवाद !अपनेक लिखल "श्वेता झा चौधरी-एकटा परिचय" पढ़ि आह्लादित भेलहुँ।एहि तरहक लोकक कृत्यकेँ चर्चा हेबाक चाही।कतेक लोक श्वेता झा चौधरीक नाम सँ अनभिज्ञ छल हेताह।अपनेक लिखल "कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला-एकटा परिचय" सेहो पढ़लहुँ। एहेन एहेन व्यक्तिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक चर्चा हेबाक चाही पत्र-पत्रिका सभमे।रवीन्द्र कुमार दास जीक- "परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी" एकटा नीक संदेश दैत अछि।

आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार, सीतामढ़ी

कलाकृति बनाम अश्लीलता/ कला साहित्य मे संजु दास के कलाकृति आ इ काल विवाद मे हय।कुछ लोग के दृस्टि मे कला मे अश्लीलता हय।असल मे अश्लीलता आ श्लीलता दृस्टिये होइ छैय। संत तुलसीदास के अनुसार जाके रहि भावना जैसी हरि मूरत देखि तिन तैसी। पौराणिक साहित्य के दे खियौ त अश्लीलता से भरल हय। परंतु धार्मिक दृस्टि से वो अश्लील दृस्टि गोचर न होई हय। जेना भगवान शंकर के लिंगाकार रुप जेकर पूजा कैल जाइ हय।नागा साधु आ दिगम्बर जैन मुनि जेइ के दर्शन में अश्लीलता दृष्टि गोचर न होइ छैय। मां काली के नग्न मूर्ति में अश्लीलता दृस्टिगोचर न होइ

हय। सति अनुसूया के कथा एगो चर्चित कथा हय। अनुसूया के सतीत्व परीक्षा के लेल ब्रह्मा विष्णु महेश कहलथिन कि अंहा नग्न होके हमरा सभ के भोजन करायब त हम सभ अंहा इंहा भोजन करब।सति अनुसूया हुनका सभ के तप बल के आधार पर बच्चा बना दलथिन आ नग्न होके गोद मे रख के भोजन करैलथिन। कारण कि बच्चा निर्दोस होइ छैय।वो श्लीलता आ अश्लीलता से अंजान होइ हय। बौद्ध कालीन मूर्ति अजंता -
ऐलोरा आ भगवान जगन्नाथ आ दच्छिन भारत के मंदिर पर उत्कीर्ण मैथुन मूर्ति में अश्लीलता नजर न अबऐय हय। भगवान रजनीश संभोग से समाधि में एगो घटना के उल्लेख करैय छथिन।जौ एक युवा प्रेमी -
प्रेमिका के प्रेमिका में माता -
पिता मैथुन मूर्ति के देखैयत खजुराहो में टकरा गेलन। घटना इ बताबैत हय कि सापेक्ष रूप में अश्लील हय परंतु निरपेक्ष रूप में अश्लील न हय। संजु दास के कला सापेक्ष रूप में लोग के अश्लील भले लगैय परंतु निरपेक्ष रूप से अश्लील न हय।कलादृस्टि निरपेक्ष होय के चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**